व्याकरण भारती

भाग 8

भारती भवन
पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

प्रकाशक—
भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)
www.bharatibhawan.in   email: editorial@bbpd.in

नई दिल्ली—4271/3 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002, दूरभाष 23286557
नोएडा—ए-61 बी/2 सेक्टर 63, नोएडा-201 307, दूरभाष 4757400
पटना—ठाकुरबाड़ी रोड, पटना-800 003, दूरभाष 2670325
कोलकाता—10 राजा सुबोध मल्लिक स्क्वेअर, कोलकाता-700 013, दूरभाष 22250651
बेंगलुरु—नं॰ 98 सिरसी सर्किल, मैसूर रोड, बेंगलुरु-560 018, दूरभाष 26740560

© प्रकाशक

प्रथम संस्करण 2021
पुनःमुद्रण 2022

तारा आर्ट प्रिंटर्स प्रा॰ लि॰, नोएडा द्वारा मुद्रित

आमुख

प्रत्येक बच्चे में भाषा सीखने का गुण जन्मजात होता है। वह अपने आसपास के परिवेश की भाषा को सुनता है, समझता है और फिर उसे बोलना सीखता है। इस अनौपचारिक भाषा-शिक्षण में वह तीन-चार वर्षों में अपने परिवार तथा परिवेश से व्यवहार में आनेवाली भाषा सीख लेता है। जब वह विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने जाता है, तब उसे भाषा के चार कौशलों—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना—में से दो कौशलों पढ़ना और लिखना को सीखना होता है।

ऐसा माना जाता है कि व्याकरण एक कठिन विषय है। अतः व्याकरण जैसे कठिन विषय से बच्चों को परिचित कराना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, विशेषकर प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों के लिए। व्याकरण में नियमों पर अधिक बल दिया जाता है, इसलिए बच्चों को इसे आत्मसात करने की बजाय रटना पड़ता है। व्याकरण सीखने का मूल उद्देश्य भाषा के बारे में सीखना न होकर भाषा-व्यवहार सीखना होता है।

व्याकरण भारती 8 में सरलता और सरसता के साथ-साथ स्तर का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। हमारा उद्देश्य बच्चों को गतिविधियों के माध्यम से भाषा-व्यवहार सिखाना रहा है। दूसरे शब्दों में इसे खेल-खेल में भाषा-शिक्षण भी कह सकते हैं।

इस पुस्तक में व्याकरण के व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया गया है। परिभाषाओं को रटाने की जगह सरल तरीके से व्याकरण सिखाने का प्रयास किया गया है। पाठों में पर्याप्त मात्रा में चित्र दिए गए हैं। पाठ के अंत में हमने जाना में पाठ से मिले ज्ञान को दोहराया गया है। बच्चे जो जान चुके हैं, उसे पुष्ट करने के लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास दिए गए हैं। पुस्तक में जगह-जगह पर प्रभावी भाषा-शिक्षण के उद्देश्य से कार्यकलाप दिए गए हैं। जाना-समझा द्वारा पाठ से संबंधित बिंदुओं को अधिक स्पष्ट किया गया है।

व्याकरण की यह पुस्तक अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

प्रकाशक

विषय सूची

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण 5
2. वर्ण-विचार 11
3. संधि 19
4. शब्द-विचार 26
5. पर्यायवाची शब्द 31
6. विलोम शब्द 36
7. अनेकार्थक शब्द 40
8. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 44
9. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 47
10. एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द 51
आओ दोहराएँ 1 55
11. उपसर्ग 56
12. प्रत्यय 60
13. समास 65
14. संज्ञा 70
15. लिंग 75
16. वचन 80
17. कारक 85
18. सर्वनाम 91
19. विशेषण 97
20. क्रिया 104
आओ दोहराएँ 2 111

21. काल 112
22. वाच्य 119
23. अविकारी शब्द—क्रियाविशेषण 124
24. संबंधबोधक 129
25. समुच्चयबोधक 132
26. विस्मयादिबोधक 136
27. पद-परिचय और पदबंध 139
28. वाक्य-विचार 146
29. वाक्य रचना की सामान्य अशुद्धियाँ 153
आओ दोहराएँ 3 157
30. विरामचिह्न 158
31. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ 163
32. अलंकार 171
33. डायरी-लेखन 176
34. अपठित गद्यांश 178
35. अपठित पद्यांश 181
36. अनुच्छेद-लेखन 184
37. पत्र-लेखन 187
38. निबंध-लेखन 194
आओ दोहराएँ 4 200

1 भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» बच्चा सीटी की आवाज़ में क्या कहना चाह रहा है? ____________

» क्या आप पक्षियों द्वारा निकाली गई आवाज़ों का अर्थ समझते हैं? ____________

» क्या आप बच्चे के इशारे को पूरी तरह से समझ पा रहे हैं? ____________

» क्या इन आवाज़ों को भाषा कहा जा सकता है? क्यों? ____________

पक्षियों द्वारा निकाली गई आवाज़ों, सीटी की आवाज़ तथा संकेतों को भाषा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि भाषा ध्वनियों का ऐसा व्यवस्थित समूह होता है, जिनका निश्चित अर्थ होता है। इसके द्वारा मनोभाव स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं।

> भाषा अभिव्यक्ति का ऐसा साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर तथा पढ़कर अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करता है।

इस प्रकार भाषा संप्रेषण का माध्यम है। इसके द्वारा हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, ज्ञान का अर्जन करते हैं, जानकारी प्राप्त करते हैं और अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हैं।

भाषा के रूप

भाषा के दो रूप हैं—

1. मुख से बोली जानेवाली भाषा, अर्थात मौखिक भाषा।
2. लिखकर व्यक्त की जानेवाली भाषा, अर्थात लिखित भाषा।

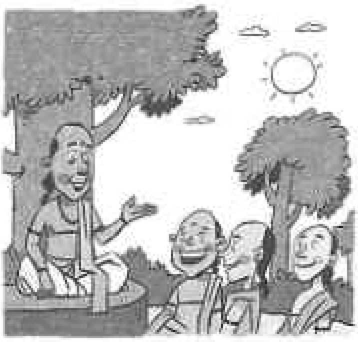

मौखिक भाषा

प्राचीन समय में, गुरुकुलों में शिक्षा-दीक्षा का कार्य मौखिक रूप से ही होता था। यह भाषा का प्राचीनतम रूप है, जिसे हम स्वाभाविक रूप से सीख लेते हैं।

> मौखिक भाषा, भाषा का वह रूप है, जिसमें वक्ता बोलकर अपने विचार व्यक्त करता है तथा श्रोता सुनकर उन्हें समझता है।

मौखिक भाषा से भाषा के 'सुनना' तथा 'बोलना' कौशल का विकास होता है।

लिखित भाषा

दिए गए चित्र में बच्चा ई-मेल द्वारा अपने विचार व्यक्त कर रहा है। प्राप्तकर्ता इसे पढ़कर समझेगा।

> लिखित भाषा, भाषा का वह रूप है, जिसमें लिखनेवाला लिखकर अपने विचार व्यक्त करता है तथा पढ़नेवाला पढ़कर उन्हें समझता है।

लिखित भाषा से भाषा के 'पढ़ना' तथा 'लिखना' कौशल का विकास होता है। इसके द्वारा ज्ञान का संचय करना तथा आनेवाली पीढ़ियों को ज्ञान का हस्तांतरण करना सरल होता है।

सोचो और बताओ

दिए गए उदाहरणों में से कौन-से मौखिक भाषा के हैं और कौन-से लिखित भाषा के? क्यों?

अंत्याक्षरी खेलना, भाषण देना, पत्रिका में छपा लेख, वाद-विवाद करना, श्यामपट पर लिखना, सूचनापट, बातचीत, पुस्तकें

मौखिक भाषा ____________________

लिखित भाषा ____________________

क्यों ____________________

बोली, उपभाषा और मानक भाषा

एक भाषा क्षेत्र अनेक बोलियों का समूह होता है। बोली उपभाषा का तथा उपभाषा भाषा का रूप ले लेती है। भाषा अपने परिमार्जित रूप में मानक भाषा बन जाती है।

बोली

बोली भाषा-विशेष का मौखिक रूप होता है। इसका स्वरूप स्थानीय होता है। यह किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में बोली जाती है। बोली में लोककथाओं और लोकगीतों की रचना होती है। इसका अपना कोई व्याकरण नहीं होता। इसकी अपनी कोई लिपि नहीं होती। इसका शब्द-भंडार सीमित होता है। इसका कोई मानक स्वरूप नहीं होता। बोली जब भाषा बन जाती है, तब इसका स्वरूप विस्तृत हो जाता है; इसकी अपनी लिपि, व्याकरण तथा मानक स्वरूप होता है; इसमें साहित्य की रचना होती है।

उपभाषा

जब बोली का प्रयोग-क्षेत्र बढ़ जाता है तथा बोली अधिक बड़े क्षेत्र में बोली जाती है, तब उसे उपभाषा कहते हैं। उपभाषा में कई बोलियाँ शामिल होती हैं। इसमें साहित्य की रचना की जाने लगती है।

मानक भाषा

किसी भी भाषा पर उसकी उपभाषाओं तथा बोलियों का प्रभाव पड़ता है। भाषा पर स्थानीय प्रभाव भी दिखाई देता है। जब भाषा पर पड़नेवाले उपभाषाओं, बोलियों तथा स्थानीय प्रभावों को समाप्त कर उसे शुद्ध, परिमार्जित तथा सर्वमान्य रूप प्रदान किया जाता है, तब भाषा मानक भाषा बन जाती है। मानक भाषा किसी भाषा का सर्वमान्य, एकीकृत तथा व्याकरणसम्मत रूप होता है।

मातृभाषा

एक बालक जन्म से जिस भाषा को सुनता तथा सीखता है, वह उसकी मातृभाषा होती है। बालक अपनी माँ तथा परिवार के अन्य सदस्यों का अनुकरण करके मातृभाषा को सहजता तथा सरलता से शुद्ध रूप में बोलना सीख लेता है। बालक का व्यवहार तथा संस्कार मातृभाषा द्वारा निर्धारित होते हैं।

हिंदी भाषा का विभिन्न रूपों में प्रचलन

भारत में हिंदी भाषा अनेक रूपों में प्रचलित है। भारत में हिंदी का प्रयोग संपर्क भाषा, राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा के रूप में भी होता है।

संपर्क भाषा

वह भाषा, जो विभिन्न भाषा-भाषी लोगों के मध्य संपर्क स्थापित करने का माध्यम होती है, संपर्क भाषा कहलाती है। संपर्क भाषा बोलचाल की भाषा होती है, जो सरल तथा समृद्ध होती है। हिंदी भारत की संपर्क भाषा है, क्योंकि यह समृद्ध, सशक्त और सरल है तथा जनसंख्या के एक बड़े भाग द्वारा इसका प्रयोग किसी-न-किसी रूप में होता है।

राजभाषा

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में इन 22 भारतीय भाषाओं का समावेश किया गया है—संस्कृत, उर्दू, सिंधी, तमिल, तेलुगू, पंजाबी, बांग्ला, मलयालम, असमिया, कन्नड, उड़िया, गुजराती, मराठी, मणिपुरी, कश्मीरी, नेपाली, कोंकणी, हिंदी, मैथिली, बोड़ो, संथाली और डोगरी।

हिंदी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार 'संघ की राजभाषा' घोषित किया गया है। राजभाषा सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त राजकाज की भाषा होती है। राजभाषा की अपनी विशेष शब्दावली होती है।

राष्ट्रभाषा

ऐसी भाषा, जो राष्ट्र के अधिकतर लोगों द्वारा बोली तथा समझी जाती है, वह उस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा कहलाती है। हमारे देश में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता प्राप्त है। हिंदी भाषा बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़, अंडमान और निकोबार, उत्तरप्रदेश,

मध्यप्रदेश, दिल्ली इत्यादि में बोली जाती है। अहिंदी भाषी क्षेत्रों, जैसे—गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़ की संपर्क भाषा हिंदी है। इस प्रकार हिंदी व्यापक स्तर पर बोली जानेवाली भाषा है।

लिपि

भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी अलग लिपि है। संघ की राजभाषा हिंदी की लिपि देवनागरी है। देवनागरी एक प्राचीन लिपि है। इस लिपि की पहचान इसके वर्णों के ऊपर लगी शिरोरेखा है। यह अत्यंत व्यवस्थित और वैज्ञानिक लिपि है। इसमें उच्चारण तथा लेखन में समानता है। इसमें पृथक वर्ण के लिए पृथक लिपि-चिह्न हैं।

मौखिक ध्वनियों को लिखने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों की व्यवस्था लिपि कहलाती है।

हिंदी के साथ-साथ संस्कृत, मराठी, मैथिली, नेपाली, कश्मीरी, बोड़ो, कोंकणी तथा डोगरी भाषाएँ भी देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं।

साहित्य

लिखित रूप से संचित ज्ञान का भंडार साहित्य कहलाता है। साहित्य दो प्रकार का होता है—
1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य।

1. गद्य साहित्य गद्य साहित्य में निबंध, लेख, कहानी, जीवनी, संस्मरण, पत्र, आत्मकथा, डायरी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, यात्रा-वृतांत आदि आते हैं। गद्य साहित्य में चिंतन-मनन तथा विचार की प्रधानता होती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, अमृतलाल नागर, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद इत्यादि प्रमुख गद्य लेखक हैं।
2. पद्य साहित्य पद्य साहित्य में सवैया, दोहे, चौपाई, छंद, कविता, महाकाव्य आदि आते हैं। पद्य साहित्य में भावों को प्रमुखता दी जाती है। तुलसीदास, सूरदास, बिहारीलाल, रहीम, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर' इत्यादि प्रमुख पद्य लेखक हैं।

व्याकरण

व्याकरण ऐसे दिशा-निर्देशों का शास्त्र है, जिसका अनुकरण करके हम भाषा को शुद्ध रूप से बोल तथा लिख सकते हैं। भाषा के संबंध में व्याकरण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- व्याकरण भाषा के शुद्ध रूप से परिचित करवाता है।
- व्याकरण भाषा को अनुशासित तथा व्यवस्थित बनाता है।
- व्याकरण की सहायता से भाषा को एक मानक रूप प्रदान किया जा सकता है।

व्याकरण वह शास्त्र है, जो किसी भाषा के उच्चारण तथा लेखन के नियमों की व्यवस्थित पद्धति की जानकारी देता है।

भाषा का आधार वर्ण होते हैं। वर्णों को मिलाकर शब्दों का निर्माण किया जाता है। शब्दों से वाक्य बनाए जाते हैं। इस प्रकार भाषा में वर्ण, शब्द तथा वाक्य प्रमुख होते हैं। इन्हीं के आधार पर व्याकरण के तीन विभाग होते हैं—वर्ण-विचार, शब्द-विचार तथा वाक्य-विन्यास।

हमने जाना

- भाषा संप्रेषण का माध्यम है। इसके दो रूप हैं—मौखिक भाषा तथा लिखित भाषा।
- संपर्क भाषा विभिन्न भाषा-भाषी लोगों के मध्य संपर्क स्थापित करने का माध्यम होती है।
- राजभाषा सरकारी कार्यालयों में राजकाज़ की भाषा होती है।
- राष्ट्रभाषा व्यापक स्तर पर बोली जानेवाली भाषा होती है।
- लिपि मौखिक ध्वनियों को लिखने के लिए निर्धारित चिह्नों की व्यवस्था होती है।
- साहित्य के दो रूप हैं—गद्य एवं पद्य। गद्य विचारों को तथा पद्य भावों को प्रमुखता देता है।
- व्याकरण, भाषा सीखने के नियमों की व्यवस्थित पद्धति है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. भाषा का कौन-सा रूप 'पढ़ना' तथा 'लिखना' कौशल का विकास करता है?

   मौखिक रूप   लिखित रूप

   ख. भाषा के किस रूप में वक्ता तथा श्रोता प्रमुख होते हैं?

   मौखिक रूप में   लिखित रूप में

2. कोष्ठक से सही शब्द लेकर रिक्त स्थानों को भरिए।

   क. प्राचीन समय में गुरुकुलों में शिक्षा-दीक्षा का कार्य ____________ रूप से होता था। (मौखिक/लिखित)

   ख. ई-मेल भाषा का ____________ रूप है। (मौखिक/लिखित)

   ग. एक भाषा क्षेत्र अनेक ____________ का समूह होता है। (बोलियों/भाषाओं)

   घ. मानक भाषा किसी भाषा का ____________ रूप होता है। (सर्वमान्य/अपरिमार्जित)

   ङ. बालक का व्यवहार और संस्कार ____________ द्वारा निर्धारित होते हैं। (मातृभाषा/मानक भाषा)

3. मौखिक भाषा—सुनना और बोलना कौशल

   लिखित भाषा—पढ़ना और लिखना कौशल

   इस आधार पर मौखिक तथा लिखित भाषा को परिभाषित कीजिए।

   ____

   ____

4. दिए गए वाक्यांशों के लिए शब्द लिखिए।

क. भाषा का स्थानीय रूप ____________

ख. भाषा का सर्वमान्य, व्याकरणसम्मत रूप ____________

ग. लोगों के मध्य संपर्क स्थापित करने की भाषा ____________

घ. सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त राजकाज की भाषा ____________

ङ. राष्ट्र के अधिकतर लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा ____________

हिंदी भारत में किन विभिन्न रूपों में प्रचलित है?

____

____

____

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. देवनागरी लिपि की किन्हीं चार विशेषताओं को लिखिए।

ख. व्याकरण किसे कहते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताएँ बताते हुए इसके भागों के नाम लिखिए।

ग. बोली तथा भाषा में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

हिंदी की उपभाषाएँ तथा उनकी बोलियाँ इस प्रकार हैं। निम्नलिखित बोलियों में से किसी एक बोली में रचित लोकगीत सुनिए।

भाषा	उपभाषा	बोलियाँ
	1. पश्चिमी हिंदी	ब्रज, कन्नौजी, खड़ी बोली, बांगरू, बुंदेली
	2. पूर्वी हिंदी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
हिंदी	3. पहाड़ी हिंदी	गढ़वाली, कुमाऊँनी
	4. बिहारी हिंदी	भोजपुरी, मैथिली, मगही
	5. राजस्थानी हिंदी	मारवाड़ी, मेवाती, मालवी, जयपुरी

जाना-समझा

देवनागरी लिपि विश्व में सबसे अधिक प्रयोग की जानेवाली लिपियों में से एक है।

2 वर्ण-विचार

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- चित्र में संगीतज्ञ क्या कर रहा है? ____________________
- आलाप लेते समय कैसी ध्वनियाँ निकल रही हैं? ____________________
- इन ध्वनियों के लिखित रूप क्या कहलाते हैं? ____________________
- क्या इन ध्वनियों को तोड़ा जा सकता है? ____________________

मुख से निकलनेवाली ध्वनियों को जब हम लिपिबद्ध करते हैं, तब उन ध्वनियों के स्थान पर जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन्हें वर्ण कहते हैं।

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है। इसके और अधिक खंड नहीं किए जा सकते।

वर्णमाला

वर्णों का क्रमबद्ध सार्थक समूह वर्णमाला कहलाता है।

वर्णमाला में किसी भाषा को सीखने के लिए आवश्यक सभी वर्ण एक निश्चित क्रम में लगे होते हैं, जिन्हें सीखकर एक भाषा को आसानी से सीखा जा सकता है। हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण पाए जाते हैं—स्वर तथा व्यंजन।

स्वर स्वर स्वतंत्र रूप से बोले जानेवाले वर्ण होते हैं। इनके उच्चारण में वायु बिना रुके मुख से बाहर आती है। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ तथा औ स्वर हैं।

व्यंजन व्यंजन स्वरों की सहायता से बोले जानेवाले वर्ण होते हैं। इनका उच्चारण करते समय वायु रुककर मुख से बाहर आती है। क से ह तक के वर्ण व्यंजन कहलाते हैं।

स्वर के भेद

स्वर दो प्रकार के होते हैं—ह्रस्व स्वर तथा दीर्घ स्वर।

ह्रस्व स्वर ह्रस्व स्वर संख्या में चार हैं। इनके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है। अ, इ, उ तथा ऋ ह्रस्व स्वर हैं।

दीर्घ स्वर आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ दीर्घ स्वर हैं। इनके उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है।

> **विशेष** कुछ विद्वान प्लुत स्वरों को भी स्वर का एक भेद मानते हैं। प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से तीन गुना समय लगता है। इन्हें '३' अंक द्वारा दर्शाया जाता है; जैसे—ओ३म, रा३म। इनका प्रयोग अधिकतर संस्कृत शब्दों में होता है।

अयोगवाह

अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (ः) अयोगवाह कहलाते हैं। विसर्ग का प्रयोग अधिकतर तत्सम शब्दों में व्यंजनों के साथ 'ः' रूप में होता है। इसका उच्चारण (ह) की भाँति होता है; जैसे—प्रातः, अतः।

अनुस्वार का चिह्न 'बिंदु' (ं) होता है। इसके उच्चारण में वायु नाक से निकलती है। इसका प्रयोग किसी वर्ग के पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) के स्थान पर किया जाता है; जैसे—

गंगा—गङ्गा, चंचल—चञ्चल, घंटा—घण्टा, अंतर—अन्तर, संभव—सम्भव।

> **विशेष** यदि पंचमाक्षर द्वित्व रूप में हो, तो पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता, बल्कि पंचमाक्षर का ही प्रयोग होता है; जैसे—सम्मेलन, अन्न।

अनुनासिक

अनुनासिक का चिह्न 'चंद्रबिंदु' (ँ) है। इसके उच्चारण में वायु नाक और मुँह दोनों से बाहर निकलती है; जैसे—आँख, साँप, बाँसुरी इत्यादि।

स्वरों की मात्राएँ

व्यंजनों के साथ स्वर मात्रा के रूप में प्रयोग होते हैं।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	—	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
प्रयोग	कम	काम	तिल	तीन	कुल	कूल	वृक्ष	रेत	सैर	मोर	कौआ

> **विशेष**
> - र के साथ उ तथा ऊ की मात्रा 'र' के नीचे न लगाकर साथ लगाई जाती है; जैसे—रुकना, रूमाल।
> - ऋ की मात्रा ' ृ ' व्यंजन के पैर में लगती है; जैसे—वृक्ष, नृत्य।

व्यंजन के भेद

उच्चारण के आधार पर व्यंजन के तीन भेद हैं—स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन।

स्पर्श व्यंजन

स्पर्श व्यंजन कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत अथवा ओष्ठ का स्पर्श करते हुए बोले जाते हैं, इसलिए इन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

वर्ग	व्यंजन				पंचमाक्षर	उच्चारण	प्रकार
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ के स्पर्श से	कंठ्य
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	तालु के स्पर्श से	तालव्य
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा के स्पर्श से	मूर्धन्य
तवर्ग	त	थ	द	ध	न	दाँतों के स्पर्श से	दंत्य
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म	ओंठों के स्पर्श से	ओष्ठ्य

अंतस्थ व्यंजन

इनके उच्चारण में जीभ मुख के किसी भाग का पूर्ण स्पर्श नहीं करती।

ऊष्म व्यंजन

इनका उच्चारण करते समय मुख से निकलनेवाली वायु मुख से रगड़ खाकर ऊष्मा उत्पन्न करती है।

अंतस्थ व्यंजन	उच्चारण	प्रकार	ऊष्म व्यंजन	उच्चारण	प्रकार
य	तालु के अपूर्ण स्पर्श से	तालव्य	श	तालु के घर्षण से	तालव्य
र	मूर्धा के अपूर्ण स्पर्श से	मूर्धन्य	ष	मूर्धा से घर्षण द्वारा	मूर्धन्य
ल	दाँतों के अपूर्ण स्पर्श से	दंत्य	स	दाँतों से घर्षण द्वारा	दंत्य
व	दाँतों और ओंठों के अपूर्ण स्पर्श से	दंतोष्ठ्य	ह	कंठ से घर्षण द्वारा	कंठ्य

र के रूप

'र' को चार प्रकार से लिखा जाता है—

1. मूल रूप में 'र' स्वतंत्र रूप से लिखा जाता है; जैसे—राम, राधिका।
2. स्वररहित 'र' बाद वाले व्यंजन पर रेफ़ के रूप में लगता है; जैसे—ध्+अ+र्+म्+अ = धर्म।
3. किसी स्वररहित व्यंजन के बाद 'र' वर्ण के नीचे लगता है; जैसे—प्+र्+अ+भ्+आ+त्+अ = प्रभात।
4. ट्, ड् के साथ 'र' (्र) रूप में लगता है; जैसे—ट्रक, ड्रम।

संयुक्त व्यंजन

दो व्यंजनों के मेल से बना व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाता है। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं।

क्ष	=	क् + ष	क्षण, भिक्षा	ज्ञ	=	ज् + ञ	प्रतिज्ञा, अज्ञान
त्र	=	त् + र	पवित्र, चरित्र	श्र	=	श् + र	विश्राम, परिश्रम

द्वित्व व्यंजन

जब दो समान व्यंजन (स्वररहित तथा स्वरसहित) परस्पर मिलते हैं, तब उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

क् + क = क्क	भुलक्कड़	ब् + ब = ब्ब	डिब्बा	च् + च = च्च	बच्चा
ल् + ल = ल्ल	उल्लेख	ट् + ट = ट्ट	मिट्टी	त् + त = त्त	भत्ता
म् + म = म्म	सम्मान	प् + प = प्प	चप्पल	न् + न = न्न	प्रसन्न

संयुक्ताक्षर

जब दो विभिन्न व्यंजन (स्वररहित तथा स्वरसहित) परस्पर मिलते हैं, तब उसे संयुक्ताक्षर कहते हैं।

स् + त = स्त	स्तर	द् + य = द्‌य	विद्‌या	स् + क = स्क	पुरस्कार
ध् + य = ध्य	ध्यान	द् + व = द्‌व	द्‌वारा	भ् + य = भ्य	सभ्य
द् + ध = द्‌ध	शुद्‌ध	न् + य = न्य	न्याय	क् + त = क्त	अतिरिक्त

उत्क्षिप्त व्यंजन

ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं। इन्हें ड, ढ के नीचे बिंदु लगाकर बनाया जाता है; जैसे—सड़क, बुढ़िया आदि।

आगत ध्वनियाँ

ऑ, ज़, फ़ आगत ध्वनियाँ हैं। इन्हें आ पर (ॅ) लगाकर तथा ज़ तथा फ़ के नीचे बिंदु (नुक्ता) लगाकर लिखा जाता है। ये ध्वनियाँ अन्य भाषाओं से ली गई हैं; जैसे—कागज़, फ़सल, डॉक्टर।

ध्वनि की मात्रा के आधार पर व्यंजन के भेद

व्यंजनों को बोलते समय स्वर-तंत्र में हुए कंपन अथवा ध्वनि की मात्रा के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के होते हैं—1. घोष व्यंजन 2. अघोष व्यंजन।

1. घोष व्यंजन

जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय स्वर-तंत्र में अधिक कंपन होता है, उन्हें **घोष व्यंजन** कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण तथा य, र, ल, व, ह घोष व्यंजन हैं।

2. अघोष व्यंजन

जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय स्वर-तंत्र में कंपन नहीं होता है, उन्हें अघोष व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा तथा श, ष, स वर्ण अघोष व्यंजन हैं।

सोचो और बताओ

अघोष व्यंजनों पर लाल रंग और घोष व्यंजनों पर नीले रंग से गोला लगाइए।

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

य र ल व

श ष स ह

उच्चारण में लगे प्रयत्न के आधार पर व्यंजन भेद

उच्चारण में लगे प्रयत्न के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के होते हैं—अल्पप्राण व्यंजन तथा महाप्राण व्यंजन।

अल्पप्राण व्यंजन

अल्पप्राण व्यंजन के उच्चारण में कम प्रयत्न लगाना पड़ता है तथा मुख से वायु बहुत कम मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ व्यंजन तथा अंतस्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन होते हैं।

महाप्राण व्यंजन

महाप्राण व्यंजन के उच्चारण में अधिक प्रयत्न लगाना पड़ता है तथा मुख से वायु अधिक मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा तथा ऊष्म व्यंजन महाप्राण व्यंजन होते हैं।

वर्ण-विच्छेद

वर्ण-विच्छेद का अर्थ है, एक शब्द में आए सभी वर्णों को अलग करके लिखना। वर्ण-विच्छेद में स्वरों को व्यंजनों से अलग करके लिखा जाता है, इसलिए व्यंजनों को स्वररहित दिखाने के लिए उनके नीचे छोटी-सी रेखा ' ्' लगाते हैं, जिसे हलंत कहते हैं।

वर्ण-विच्छेद के कुछ उदाहरण

पुरुष	प् + उ + र् + उ + ष् + अ	बंधन	ब् + अ + न् + ध् + अ + न् + अ
लक्ष्मी	ल् + अ + क् + ष् + म् + ई	चाँदनी	च् + आँ + द् + अ + न् + ई
दुर्बल	द् + उ + र् + ब् + अ + ल् + अ	परीक्षा	प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ
मनुष्य	म् + अ + न् + उ + ष् + य् + अ	श्रोता	श् + र् + ओ + त् + आ
स्वच्छ	स् + व् + अ + च् + छ् + अ	मंगल	म् + अ + ङ् + ग् + अ + ल् + अ
प्रकार	प् + र् + अ + क् + आ + र् + अ	शुद्ध	श् + उ + द् + ध् + अ

वर्ण-संयोग

वर्ण-विच्छेद किए हुए शब्दों को पुनः जोड़कर लिखना वर्ण-संयोग कहलाता है; जैसे—

श् + र् + अ + व् + अ + ण् + अ	श्रवण	द् + उ + न् + इ + य् + आ	दुनिया
म् + उ + क् + त् + अ	मुक्त	क् + ऋ + ष् + ण् + अ	कृष्ण
श् + र् + अ + द् + ध् + आ	श्रद्धा	ज् + ञ् + आ + न् + ई	ज्ञानी
प् + र् + अ + स् + अ + न् + न् + अ	प्रसन्न	भ् + इ + क् + ष् + आ	भिक्षा

उच्चारण-संबंधी अशुद्धियाँ

उच्चारण-संबंधी अशुद्धियाँ प्रायः व्याकरणिक नियमों की पर्याप्त जानकारी के अभाव में अथवा उच्चारण दोष के कारण होती हैं। व्याकरण के नियमों की जानकारी तथा सही उच्चारण अभ्यास द्वारा इन दोषों को दूर किया जा सकता है।

अ/आ-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
व्यवहारिक	व्यावहारिक	अवश्यकता	आवश्यकता	संसारिक	सांसारिक
अलोचना	आलोचना	अगामी	आगामी	आनाथालय	अनाथालय
रमायण	रामायण	अधारित	आधारित	सम्राज्य	साम्राज्य

इ/ई-संबंधी अशुद्धियाँ

रचियता	रचयिता	दिपावली	दीपावली	निरिह	निरीह
अद्वितिय	अद्वितीय	व्यक्ती	व्यक्ति	पूर्ती	पूर्ति
इर्ष्या	ईर्ष्या	इमानदारी	ईमानदारी	सृष्टी	सृष्टि

उ/ऊ-संबंधी अशुद्धियाँ

हिंदु	हिंदू	पुरूष	पुरुष	दयालू	दयालु
अनुकुल	अनुकूल	कूआँ	कुआँ	मुल्य	मूल्य
आयू	आयु	गुरू	गुरु	हेतू	हेतु

ऋ-संबंधी अशुद्धियाँ

प्रथक	पृथक	ग्रहकार्य	गृहकार्य	क्रतघ्न	कृतघ्न
प्रकति	प्रकृति	जाग्रत	जागृत	रिषभ	ऋषभ

ए/ऐ-संबंधी अशुद्धियाँ

पेदावार	पैदावार	एच्छिक	ऐच्छिक	ऐकत्रित	एकत्रित
ऐकड़	एकड़	एश्वर्य	ऐश्वर्य	ऐकांकी	एकांकी

ओ/औ-संबंधी अशुद्धियाँ

कसोटी	कसौटी	कोशल्या	कौशल्या	पड़ौस	पड़ोस
औट	ओट	ओलाद	औलाद	ओषधालय	औषधालय

अनुस्वार तथा अनुनासिक-संबंधी अशुद्धियाँ

सांप	साँप	पांचवा	पाँचवाँ	महंगा	महँगा
कांच	काँच	सन्यासी	संन्यासी	मूंगफली	मूँगफली

ड़/ढ़-संबंधी अशुद्धियाँ

बुड़िया	बुढ़िया	लडाई	लड़ाई	अनपढ	अनपढ़
चिड़ाना	चिढ़ाना	करोड	करोड़	झोंपडी	झोंपड़ी

अन्य अशुद्धियाँ

छमा	क्षमा	विसतार	विस्तार	जमुना	यमुना
ज्येष्ट	ज्येष्ठ	करन	कर्ण	कल्यान	कल्याण

कार्यकर्म	कार्यक्रम	लक्ष	लक्ष्य	सन्नमान	सम्मान
गल्त	गलत	कारन	कारण	रनभूमि	रणभूमि
साधारन	साधारण	विस्वास	विश्वास	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी

हमने जाना

- वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होते हैं।
- वर्णों का क्रमबद्ध सार्थक समूह वर्णमाला कहलाता है।
- स्वरों के मुख्य दो भेद हैं—ह्रस्व स्वर तथा दीर्घ स्वर।
- उच्चारण के आधार पर व्यंजन के तीन भेद हैं—स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन।
- ध्वनि की मात्रा के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं—घोष व्यंजन तथा अघोष व्यंजन।
- उच्चारण में लगे प्रयत्न के आधार पर व्यंजन अल्पप्राण तथा महाप्राण होते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. किन स्वरों को बोलने में एक मात्रा का समय लगता है?

प्लुत स्वरों को — ह्रस्व स्वरों को — दीर्घ स्वरों को

ख. किसी वर्ग के पंचमाक्षर के स्थान पर किसका प्रयोग किया जाता है?

अनुस्वार का — अनुनासिक का — विसर्ग का

2. वर्ग से स्पर्श, अंतस्थ तथा ऊष्म व्यंजन छाँटकर सही स्थान पर लिखिए।

क. स्पर्श व्यंजन ______________________

ख. अंतस्थ व्यंजन ______________________

ग. ऊष्म व्यंजन ______________________

श य क च
ष र ट त
स ल प
ह व

3. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए।

क. भिक्षुक — + — + — + — + — + — + —

ख. त्रिभुवन — + — + — + — + — + — + — + — + —

ग. अज्ञानता — + — + — + — + — + — + — + —

घ. श्रवण — + — + — + — + — + — + —

4. अनुस्वार के रूप में प्रयुक्त पंचमाक्षर पहचानकर लिखिए।

क. गंगा ________ ख. पंचम ________ ग. अंक ________

घ. घंटा ________ ङ. संतान ________ च. संचय ________

छ. संभव ________ ज. झंडा ________ झ. संधि ________

5. अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करके वाक्य पुनः लिखिए।

क. रामायन पर अधारित ऐकांकी का चित्रन करें। ________

ख. दुरी के अधार पर सूर्य से पाचवां गृह कौन-सा है? ________

ग. पत्येर्क समस्या को व्यवहरिक कसोटी पर कसो। ________

घ. मूंगफली के षिलके कुड़ेदान में डालो। ________

ङ. एक ऐकड़ ज़मीन का मुल्य कया होगा? ________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. 'वर्णों का क्रमबद्ध सार्थक समूह वर्णमाला कहलाता है।' इस परिभाषा के आधार पर वर्णमाला की विशेषताएँ बताइए।

ख. स्वरों तथा व्यंजनों में क्या अंतर है?

ग. अल्पप्राण व्यंजन महाप्राण व्यंजन से किस प्रकार भिन्न हैं?

कार्यकलाप

हिंदी वर्णमाला को पढ़िए तथा दिए गए रिक्त स्थानों में सही शब्द भरिए।

	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ							
	अयोगवाह अं (अनुस्वार) अः (विसर्ग)					अँ		
	कवर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ् →		
		च्	छ्	ज्	झ्	ञ्		
	टवर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्		
		त्	थ्	द्	ध्	न्		
	पवर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्		ड़् ढ़्
		य्	र्	ल्	व्			श् ष् स् ह्
		क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			ऑ ज़ फ़

जाना-समझा

उत्क्षिप्त व्यंजन ड़ तथा ढ़ कभी भी संयुक्त रूप में नहीं आते और न ही ये किसी शब्द के आरंभ में आते हैं।

3 संधि

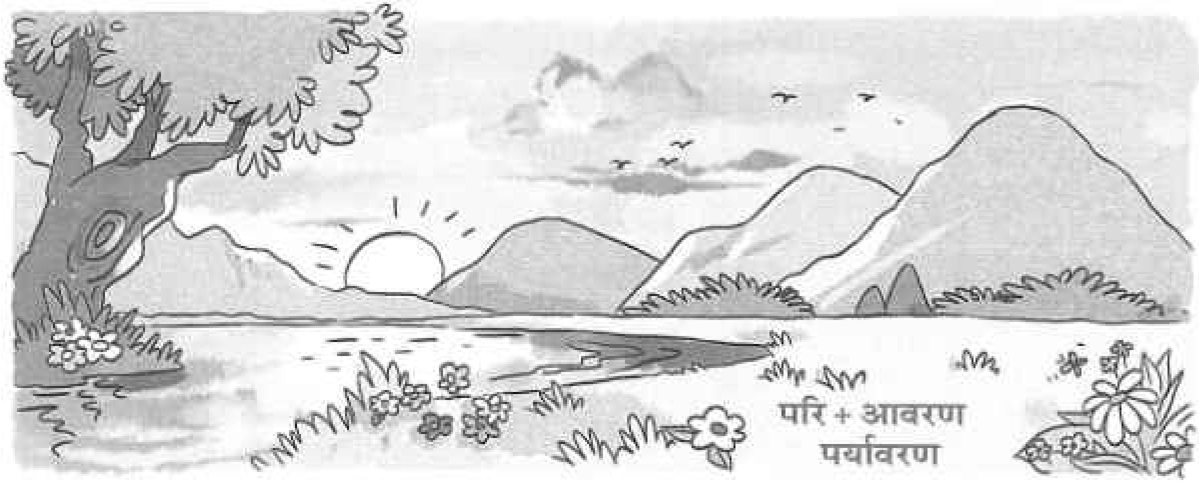

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- पर्यावरण शब्द किन दो शब्दों से मिलकर बना है? ______________________
- पहले शब्द की अंतिम ध्वनि कौन-सी है? ______________________
- दूसरे शब्द की पहली ध्वनि कौन-सी है? ______________________
- दोनों ध्वनियाँ मिलकर कौन-सी नई ध्वनि बना रही हैं? ______________________

दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं। संधि में प्रथम शब्द की अंतिम ध्वनि तथा दूसरे शब्द की पहली ध्वनि से मिलकर नई ध्वनि बनती है।

जैसे—पर्यावरण = परि + आवरण
इ + आ = या

वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार संधि कहलाता है।

संधि के भेद

संधि के प्रयोग से भाषा सुगठित तथा प्रवाहपूर्ण हो जाती है। संधि से स्वर, व्यंजन अथवा विसर्ग में परिवर्तन आता है। इस आधार पर संधि के प्रमुख तीन भेद हैं—स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।

स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि के भेद

स्वर संधि के प्रमुख पाँच भेद हैं—1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि 4. यण संधि 5. अयादि संधि।

1. दीर्घ संधि

दो समान ह्रस्व या दीर्घ स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

अ + अ = आ	न्याय + अधीश	=	न्यायाधीश	
अ + आ = आ	शुभ + आरंभ	=	शुभारंभ	
आ + अ = आ	विद्या + अर्थी	=	विद्यार्थी	
आ + आ = आ	वार्ता + आलाप	=	वार्तालाप	
इ + इ = ई	रवि + इंद्र	=	रवींद्र	
इ + ई = ई	प्रति + ईक्षा	=	प्रतीक्षा	
ई + इ = ई	नारी + इंद्र	=	नारींद्र	
ई + ई = ई	नारी + ईश्वर	=	नारीश्वर	
उ + उ = ऊ	लघु + उत्तर	=	लघूत्तर	
उ + ऊ = ऊ	अंबु + ऊर्मि	=	अंबूर्मि	
ऊ + उ = ऊ	भू + उत्सर्ग	=	भूत्सर्ग	
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू + ऊर्मि	=	सरयूर्मि	
ऋ + ऋ = ऋ	पितृ + ऋण	=	पितृण	

2. गुण संधि

यदि अ/आ के साथ इ अथवा ई, उ अथवा ऊ या ऋ आए, तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ तथा अर् हो जाते हैं।

अ + इ = ए	स्व + इच्छा	=	स्वेच्छा
अ + ई = ए	नर + ईश	=	नरेश
आ + इ = ए	यथा + इष्ट	=	यथेष्ट
आ + ई = ए	उमा + ईश	=	उमेश
अ + उ = ओ	पुरुष + उत्तम	=	पुरुषोत्तम
अ + ऊ = ओ	समुद्र + ऊर्मि	=	समुद्रोर्मि
आ + उ = ओ	महा + उत्सव	=	महोत्सव
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि	=	गंगोर्मि
अ + ऋ = अर्	ब्रह्म + ऋषि	=	ब्रह्मर्षि
आ + ऋ = अर्	वर्षा + ऋतु	=	वर्षार्तु

3. वृद्धि संधि

यदि अ/आ के बाद ए अथवा ऐ, ओ अथवा औ आए, तो दोनों मिलकर क्रमशः ऐ तथा औ हो जाते हैं।

अ + ए = ऐ   एक + एक = एकैक

अ + ऐ	= ऐ	परम + ऐश्वर्य	=	परमैश्वर्य
आ + ए	= ऐ	तथा + एव	=	तथैव
आ + ऐ	= ऐ	महा + ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
अ + ओ	= औ	परम + ओज	=	परमौज
अ + औ	= औ	वन + औषधि	=	वनौषधि
आ + ओ	= औ	महा + ओजस्वी	=	महौजस्वी
आ + औ	= औ	महा + औषधि	=	महौषधि

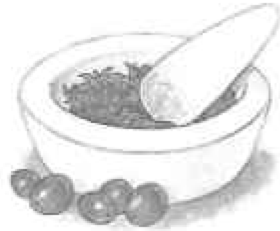

4. यण संधि

यदि इ/ई अथवा उ/ऊ अथवा ऋ के बाद भिन्न स्वर आए, तो ये मिलकर क्रमशः य, व तथा र हो जाते हैं।

इ + अ	= य	यदि + अपि	=	यद्यपि
इ + उ	= यु	प्रति + उपकार	=	प्रत्युपकार
उ + अ	= व	अनु + अय	=	अन्वय
उ + आ	= वा	सु + आगत	=	स्वागत
ऋ + आ	= रा	पितृ + आज्ञा	=	पित्राज्ञा

5. अयादि संधि

यदि ए, ऐ, ओ अथवा औ के बाद कोई भिन्न स्वर आए, तो ए, ऐ, ओ तथा औ क्रमशः अय्, आय्, अव् तथा आव् हो जाते हैं।

ए + अ	= अय्	ने + अन	=	नयन
ऐ + अ	= आय्	नै + अक	=	नायक
ओ + अ	= अव्	पो + अन	=	पवन
औ + इ	= आव्	नौ + इक	=	नाविक

सोचो और बताओ

परम + अणु = ______	गुरु + उपदेश = ______
परम + ईश्वर = ______	मत + एक्य = ______
इति + आदि = ______	गै + अक = ______

व्यंजन संधि

जब किसी व्यंजन में व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर विकार उत्पन्न होता है, तब वहाँ व्यंजन संधि होती है।

व्यंजन संधि के नियम

- यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण के बाद किसी वर्ग का तीसरा अथवा चतुर्थ वर्ण हो, अथवा कोई स्वर हो अथवा य, र, ल, व हो, तो पहला वर्ण अपने वर्ग के तीसरे वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।

क् का ग् में परिवर्तन	दिक् + दर्शन	=	दिग्दर्शन
च् का ज् में परिवर्तन	अच् + अंत	=	अजंत
ट् का ड् में परिवर्तन	षट् + आनन	=	षडानन
त् का द् में परिवर्तन	सत् + गति	=	सद्गति
प् का ब् में परिवर्तन	अप् + ज	=	अब्ज

- यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण के बाद न अथवा म आए, तो पहला वर्ण अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाता है।

क् का ङ् में परिवर्तन	वाक् + मय	=	वाङ्मय
च् का ञ् में परिवर्तन	अच् + नाश	=	अञ्नाश
ट् का ण् में परिवर्तन	षट् + मास	=	षण्मास
त् का न् में परिवर्तन	उत् + नयन	=	उन्नयन
प् का म् में परिवर्तन	अप् + मय	=	अम्मय

- यदि म् के बाद कोई स्पर्श, अंतस्थ, या ऊष्म व्यंजन आए, तो म् अनुस्वार में बदल जाता है।

शम् + कर	=	शंकर		सम् + गम	=	संगम
सम् + तोष	=	संतोष		स्वयम् + भू	=	स्वयंभू
सम् + सार	=	संसार		सम् + योग	=	संयोग

- त् से संबंधित नियम

त् + ई अथवा स्वर = द्	जगत् + ईश	=	जगदीश
त् + च = च्च	उत् + चारण	=	उच्चारण
त् + ज = ज्ज	सत् + जन	=	सज्जन
त् + ल = ल्ल	उत् + लेख	=	उल्लेख
त् + घ = द्घ	उत् + घाटन	=	उद्घाटन
त् + श = च्छ	उत् + शिष्ट	=	उच्छिष्ट
त् + ह = द्ध	उत् + हार	=	उद्धार
त् + ड् = ड्ड	उत् + डयन	=	उड्डयन

- स्वर के बाद छ आने पर छ से पहले च् जुड़ जाता है।

परि + छेद	=	परिच्छेद		आ + छादन	=	आच्छादन
स्व + छंद	=	स्वच्छंद		अनु + छेद	=	अनुच्छेद

- ऋ, र तथा ष के पश्चात यदि न आता है, तो न का ण हो जाता है।

ऋ + न	=	ऋण	परि + नाम	=	परिणाम
तृष् + ना	=	तृष्णा	भूष + न	=	भूषण

सोचो और बताओ

सद्भावना = ________ + ________ जगन्नाथ = ________ + ________

उल्लास = ________ + ________ संकल्प = ________ + ________

विसर्ग संधि

विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।
जैसे—निः + कलंक = निष्कलंक आयुः + मान = आयुष्मान

विसर्ग संधि के नियम

- यदि विसर्ग से पहले अ हो तथा बाद में घोष व्यंजन अथवा ह हो, तो विसर्ग का ओ हो जाता है।

मनः + विज्ञान	=	मनोविज्ञान	पयः + धर	=	पयोधर
सरः + ज	=	सरोज	मनः + भाव	=	मनोभाव
सरः + वर	=	सरोवर	मनः + रथ	=	मनोरथ
मनः + नीत	=	मनोनीत	मनः + ज	=	मनोज
यशः + दा	=	यशोदा	यशः + धन	=	यशोधन
वयः + वृद्ध	=	वयोवृद्ध	अधः + गति	=	अधोगति

विशेष प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण तथा य, र, ल, व, ह घोष व्यंजन होते हैं।

- यदि विसर्ग के बाद त अथवा स होता है, तो विसर्ग स् में परिवर्तित हो जाता है।

निः + संतान	=	निस्संतान	दुः + साहस	=	दुस्साहस
निः + संकोच	=	निस्संकोच	नमः + ते	=	नमस्ते
दुः + तर	=	दुस्तर	मनः + ताप	=	मनस्ताप

- यदि विसर्ग से पहले अ/आ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में कोई घोष व्यंजन अथवा अन्य स्वर हो, तो विसर्ग र् में परिवर्तित हो जाता है।

निः + गुण	=	निर्गुण	निः + झर	=	निर्झर
निः + धन	=	निर्धन	दुः + गंध	=	दुर्गंध
निः + उपाय	=	निरुपाय	निः + मल	=	निर्मल
बहिः + मुख	=	बहिर्मुख	दुः + गुण	=	दुर्गुण
दुः + उपयोग	=	दुरुपयोग	दुः + व्यवहार	=	दुर्व्यवहार

- यदि विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और विसर्ग के बाद च, छ अथवा श हो, तो विसर्ग श् में बदल जाता है।

दुः	+ चक्र	=	दुश्चक्र	निः	+ छल	=	निश्छल
निः	+ चय	=	निश्चय	निः	+ चल	=	निश्चल
हरिः	+ चंद्र	=	हरिश्चंद्र	निः	+ चिंत	=	निश्चिंत

- यदि विसर्ग से पहले इ अथवा उ हो और बाद में क/ख, ट/ठ अथवा प/फ हो, तो विसर्ग ष् में बदल जाता है।

निः	+ कपट	=	निष्कपट	निः	+ फल	=	निष्फल
निः	+ पाप	=	निष्पाप	दुः	+ कर	=	दुष्कर
धनुः	+ टंकार	=	धनुष्टंकार	निः	+ काम	=	निष्काम

- विसर्ग के बाद र होने पर विसर्ग का लोप हो जाता है तथा उससे पहला स्वर दीर्घ हो जाता है।

निः	+ रव	=	नीरव	निः	+ रज	=	नीरज
निः	+ रोग	=	नीरोग	निः	+ रस	=	नीरस

विशेष यदि विसर्ग से पहले अ आता है और विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर आए, तो विसर्ग का लोप हो जाता है तथा पास आए शब्दों की संधि नहीं होती।
जैसे—अतः + एव = अतएव।

हमने जाना

- वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार संधि कहलाता है।
- दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहते हैं।
- व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर उत्पन्न विकार व्यंजन संधि कहलाता है।
- विसर्ग का किसी व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर उत्पन्न विकार विसर्ग संधि कहलाता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'न्यायाधीश' में कौन-सी संधि है?

दीर्घ संधि   गुण संधि   वृद्धि संधि

ख. यण संधि का उदाहरण कौन-सा है?

स्वागत   पवन   तथैव

2. दिए गए शब्दों में संधि करके लिखिए।

क. दिक् + दर्शन ______ ख. सत् + गति ______

ग. वाक् + मय ______ घ. सम् + तोष ______

ङ. सम् + सार ______ च. उत् + चारण ______

छ. सत् + जन ______ ज. स्व + छंद ______

झ. परि + नाम ______ ञ. जगत् + ईश ______

3. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।

क. दुर्गुण ______ + ______ ख. निश्चल ______ + ______

ग. दुष्कर ______ + ______ घ. निष्पाप ______ + ______

ङ. निर्मल ______ + ______ च. निर्झर ______ + ______

छ. मनोनीत ______ + ______ ज. मनोरथ ______ + ______

4. दिए गए नियम के अनुसार संधि करके लिखिए।

नियम यदि विसर्ग से पहले अ/आ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में कोई घोष व्यंजन या अन्य स्वर हो, तो विसर्ग 'र्' में परिवर्तित हो जाता है।

क. निः + आशा ______ ख. दुः + उपयोग ______

ग. दुः + गंध ______ घ. निः + आहार ______

ङ. बहिः + मुख ______ च. दुः + गुण ______

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. दीर्घ संधि तथा वृद्धि संधि के मध्य अंतर को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

ख. व्यंजन संधि के कोई दो नियम लिखिए।

ग. विसर्ग संधि किसे कहते हैं?

कार्यकलाप

विसर्ग संधि के नियमों को लिखकर एक सुंदर चार्ट बनाइए तथा कक्षा-कक्ष में लगाइए।

जाना-समझा

संधि में दो वर्णों को जोड़ा नहीं जाता। इसमें दो वर्णों में परिवर्तन होता है तथा उनका उच्चारण बदल जाता है। जैसे— महा + उत्सव

आ + उ = ओ

4 शब्द-विचार

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- जादूगर क्या दिखा रहा है? ______________
- जादूगर के टोप से क्या निकले? ______________
- वर्णों के मेल से क्या बने? ______________

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है। वर्ण जब परस्पर सार्थक रूप में जुड़ते हैं, तब शब्दों का निर्माण करते हैं। वर्णों का स्वतंत्र तथा सार्थक मेल शब्द कहलाता है।

विशेष शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई होते हैं। वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द पद का रूप ले लेते हैं और उनका स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

शब्दों का वर्गीकरण

शब्दों का वर्गीकरण निम्नांकित आधारों पर किया जाता है—

1. अर्थ के आधार पर 2. उत्पत्ति के आधार पर 3. रचना के आधार पर 4. रूपांतर के आधार पर।

1. अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

शब्द से निकलनेवाले अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—सार्थक शब्द तथा निरर्थक शब्द।

सार्थक शब्द सार्थक, अर्थात स + अर्थक। ऐसे शब्द, जिनका कोई अर्थ निकलता है, सार्थक शब्द कहलाते हैं। पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, एकार्थक शब्द, अनेकार्थक शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द तथा वाक्यांश के लिए एक शब्द इत्यादि सार्थक शब्द हैं।

टिप्पणी सार्थक शब्दों के बारे में हम विस्तार से आगे के अध्यायों में पढ़ेंगे।

निरर्थक शब्द निरर्थक, अर्थात अर्थरहित। ऐसे शब्द, जिनका कोई अर्थ नहीं निकलता, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं; जैसे—कचट, लकम, वाय, शपड़े इत्यादि।

2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

हिंदी भाषा का शब्द-भंडार अत्यंत समृद्ध है। इसमें संस्कृत के, लोक-भाषाओं के तथा विदेशी भाषाओं से लिए गए अनेक शब्द शामिल हैं। शब्दों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई है तथा शब्द कहाँ से लिए गए हैं, इस आधार पर शब्द के प्रमुख चार भेद हैं—तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द तथा विदेशज शब्द।

तत्सम शब्द तत्सम, अर्थात संस्कृत के समान। संस्कृत के ऐसे शब्द, जो अपने मूल रूप में हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तद्भव शब्द तद्भव, अर्थात संस्कृत से उत्पन्न। संस्कृत के ऐसे शब्द, जो अपने मूल रूप में कुछ परिवर्तन के बाद हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

तत्सम तथा तद्भव शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
श्वास	साँस	पृष्ठ	पीठ	निर्झर	झरना
कृषक	किसान	तीक्ष्ण	तीखा	उष्ट्र	ऊँट
प्रस्तर	पत्थर	पक्षी	पंछी	उज्ज्वल	उजला
शुष्क	सूखा	रुदन	रोना	वार्ता	बात
कूप	कुआँ	मस्तक	माथा	कोकिला	कोयल
हास्य	हँसी	छिद्र	छेद	तृण	तिनका
स्वप्न	सपना	स्वर्ण	सोना	सर्प	साँप

देशज शब्द देश में प्रचलित बोलियों अथवा उपभाषाओं से लिए गए शब्द, देशज शब्द कहलाते हैं; जैसे—डोंगी, रोटी, झोला, जूता, खिड़की, फावड़ा, छाती, खटिया, धोती, खोट, लोटा, झाड़ू, थप्पड़, डिब्बा, झुग्गी, टाँग, गाड़ी, पगड़ी इत्यादि।

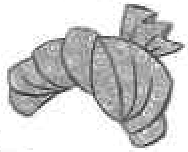

विदेशज शब्द विदेशी भाषाओं से लिए गए शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं; जैसे—

अरबी भाषा के शब्द अक्ल, अमीर, इलाज, इज़्ज़त, इमारत, औरत, किताब, कीमत, खत, खबर, खयाल, तारीख, तकदीर, नतीज़ा, मौसम, हुक्म, हिसाब, हाज़िर इत्यादि।

फ़ारसी भाषा के शब्द आराम, उम्मीद, कबूतर, कुश्ती, किशमिश, खुश, खामोश, गुलाब, गवाह, गरम, चश्मा, जादू, ज़िंदगी, जोश, तमाशा, मरहम, मुफ़्त, सौदागर इत्यादि।

अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ऑफिस, इंच, कैमरा, क्लास, क्रिकेट, कंपनी, जेल, थर्मामीटर, नर्स, नंबर, प्लेट, पेट्रोल, पेंसिल, पार्टी, प्रेस, फोटो, रेडियो, साइकिल, स्कूल इत्यादि।

तुर्की भाषा के शब्द कालीन, कुली, कैंची, चमचा, तलाश, तोप, लाश, सुराग, सौगात इत्यादि।

पुर्तगाली भाषा के शब्द अनन्नास, आलपीन, कमरा, काजू, गोभी, गोदाम, तौलिया, मेज़ इत्यादि।

> **विशेष** दो भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बने शब्द वर्णसंकर शब्द कहलाते हैं; जैसे—
> ऑपरेशन (अंग्रेज़ी) + कक्ष (संस्कृत) = ऑपरेशन कक्ष
> अजायब (अरबी) + घर (हिंदी) = अजायबघर

3. रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

किसी शब्द को निर्मित करने की प्रक्रिया रचना कहलाती है। शब्द किस प्रकार से बने हैं, इस आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं—रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़।

रूढ़ शब्द परंपरा से लोकप्रचलित तथा मान्य शब्द रूढ़ शब्द कहलाते हैं। रूढ़ शब्दों के सार्थक खंड नहीं किए जा सकते; जैसे—घर—यहाँ 'घ' तथा 'र' अलग-अलग अर्थहीन हैं। दोनों को मिलाकर लिखने पर इनका एक लोकप्रचलित अर्थ निकलता है। इसलिए, 'घर' रूढ़ शब्द है।

सोचो और बताओ
किन्हीं तीन रूढ़ शब्दों से वाक्य बनाइए।

दया, झट, घोड़ा, दूध, नथ, रुई, सैर, नदी, पानी

____

____

____

यौगिक शब्द दो शब्दों के मेल से बने ऐसे शब्द, जिनके सार्थक खंड किए जा सकते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं। यौगिक शब्दों की रचना उपसर्ग, प्रत्यय, संधि तथा समास के द्वारा की जाती है; जैसे—अध + पका = अधपका (उपसर्ग द्वारा)   धन + वान = धनवान (प्रत्यय द्वारा)
विद्या + आलय = विद्यालय (संधि द्वारा)   राजा + पुत्र = राजपुत्र (समास द्वारा)

योगरूढ़ शब्द ऐसे शब्द, जो रचना की दृष्टि से यौगिक होते हैं, परंतु अर्थ की दृष्टि से रूढ़ होते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। ऐसे शब्द, दो शब्दों के योग से बनते हैं, परंतु सामान्य अर्थ के स्थान पर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करते हैं। योगरूढ़ शब्दों की रचना अधिकतर बहुव्रीहि समास द्वारा होती है; जैसे—

पीतांबर (पीले वस्त्रवाला) सामान्य अर्थ   (विष्णु) विशेष अर्थ
जलज (जल में उत्पन्न) सामान्य अर्थ   (कमल) विशेष अर्थ

(जल में कछुआ, मछली आदि का भी जन्म होता है। परंतु, जलज कमल के लिए रूढ़ हो गया है।)

सोचो और बताओ
योगरूढ़ शब्दों के विशेष अर्थ पर ✓ लगाइए।

शब्द	सामान्य अर्थ	विशेष अर्थ	
लंबोदर	लंबा उदर	गणेश	राम
नीलकंठ	नीला कंठ	श्रीकृष्ण	शंकर
चतुर्भुज	चार भुजाएँ	शिव	विष्णु
दशानन	दस मुखवाला	कंस	रावण

4. रूपांतर के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

रूपांतर के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—विकारी शब्द तथा अविकारी शब्द।

विकारी शब्द विकार, अर्थात परिवर्तन। वाक्य में प्रयोग करने पर जिन शब्दों में लिंग, वचन, काल, कारक इत्यादि के आधार पर परिवर्तन आ जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया विकारी शब्द हैं।

अविकारी शब्द अविकार, अर्थात परिवर्तन न आना। वाक्य में प्रयोग करने पर जिन शब्दों में लिंग, वचन, काल, कारक इत्यादि के आधार पर परिवर्तन नहीं आता है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी शब्द हैं।

टिप्पणी विकारी तथा अविकारी शब्दों के बारे में आगे के अध्यायों में विस्तार से पढ़ेंगे।

हमने जाना

- वर्णों का सार्थक मेल शब्द कहलाता है।
- अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद हैं—सार्थक तथा निरर्थक।
- उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद हैं—तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज।
- रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं—रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़।
- रूपांतर के आधार पर शब्द के दो भेद हैं—विकारी तथा अविकारी।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. शब्द किसे कहते हैं?

वर्णों का सार्थक मेल   भाषा की सबसे छोटी इकाई   इनमें दोनों

ख. सार्थक शब्द किस प्रकार के शब्द होते हैं?

जिनका अर्थ नहीं होता   जिनका अर्थ होता है   केवल वर्णों का मेल

2. तत्सम → संस्कृत के मूल शब्द → तीक्ष्ण

तद्भव → संस्कृत के शब्दों का परिवर्तित रूप → तीखा

दिए गए तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।

क. कूप ________   ख. स्वप्न ________   ग. श्वास ________

घ. कृषक ________   ङ. स्वर्ण ________   च. सर्प ________

छ. मयूर ________   ज. शुष्क ________   झ. कोकिला ________

3. विदेशज शब्दों को रेखांकित कर उनके स्थान पर तत्सम शब्द लिखकर वाक्य दोबारा लिखिए।

क. मुझे एक <u>किताब</u> खरीदनी है। मुझे एक पुस्तक खरीदनी है।

ख. इस स्थान पर एक फोटो चिपकाएँ। ____________________

ग. आज स्कूल बंद है। ____________________

घ. आज हमारी परीक्षा का नतीज़ा आएगा। ____________________

ङ. आज मैं बहुत खुश हूँ। ____________________

4. सही मिलान कीजिए।

क. रूढ़	दो शब्दों के मेल से बने शब्द
ख. यौगिक	ऐसे यौगिक शब्द, जो विशेष अर्थ व्यक्त करें
ग. योगरूढ़	परंपरा से मान्य शब्द

दिए गए रूढ़ शब्दों से यौगिक शब्द बनाइए; जैसे—घोड़ा—घुड़सवार।

क. दूध ________ ख. दया ________ ग. धन ________

घ. पुस्तक ________ ङ. फूल ________ च. घर ________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. शब्दों के वर्गीकरण के मुख्य आधार कौन-से हैं?

ख. विकारी तथा अविकारी शब्द में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

संकेतों की सहायता से वर्ग-पहेली पूरी कीजिए।

बाएँ से दाएँ
3 एक वाहन (विदेशज)
5 किसी वस्तु का मूल्य (विदेशज)
7 जिससे साँस लेते हैं (तद्भव)
8 जिससे दूर-दराज़ जाते हैं (देशज)

1 3			
	4	7	
2		6	9
8			
	5		

ऊपर से नीचे
1 सप्त का पर्यायवाची (तद्भव)
2 उपहार के लिए शब्द (विदेशज)
4 सिर पर धारण करते हैं (देशज)
6 जहाँ सामान इकट्ठा करके रखते हैं (विदेशज)
9 हाथ का पर्यायवाची (तत्सम)

जाना-समझा

अनुस्वार तथा विसर्ग वाले शब्द तत्सम और अनुनासिक लगे शब्द तद्भव होते हैं।

5 पर्यायवाची शब्द

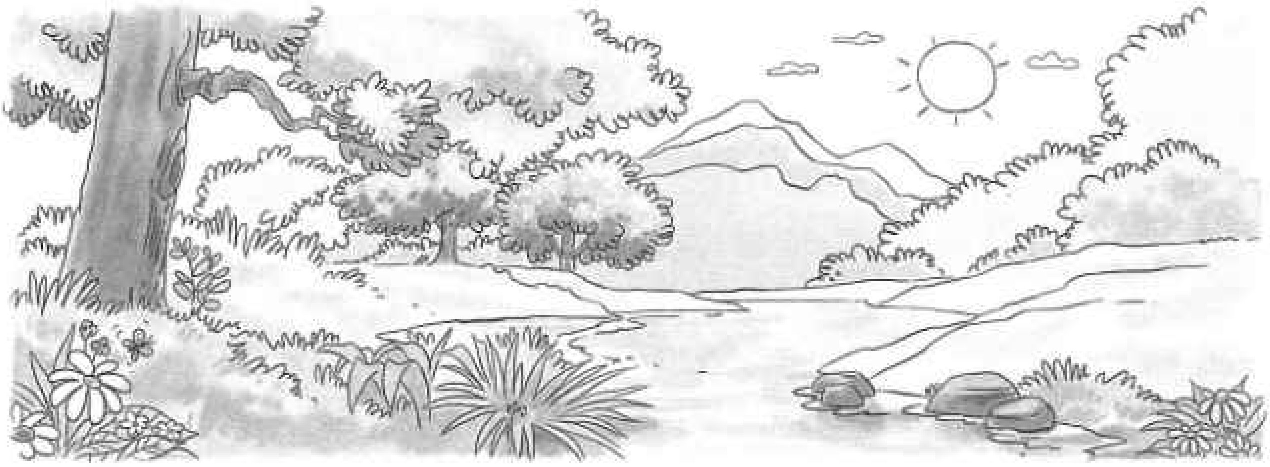

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है? ________________
- सूर्य, नदी, पहाड़, पेड़, फूल को और क्या कहते हैं? ________________
- समान अर्थ बतानेवाले शब्द क्या कहलाते हैं? ________________

चित्र में सूर्य, नदी, पहाड़, पेड़ तथा फूल दिखाई दे रहे हैं। इन्हें निम्नलिखित अन्य नामों से जानते हैं।

सूर्य	नदी	पहाड़	पेड़	फूल
सूरज	सरिता	पर्वत	वृक्ष	पुष्प
दिनकर	तटिनी	शैल	तरु	सुमन
आदित्य	तरंगिणी	गिरि	तरुवर	प्रसून
दिवाकर	निर्झरिणी	अचल	विटप	कुसुम

उपर्युक्त सभी शब्द प्रायः समान अर्थ बता रहे हैं।

समान अर्थ बतानेवाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

पर्यायवाची शब्दों में भी सूक्ष्म अंतर होता है। शब्दों के सूक्ष्म अंतर को समझकर इनका प्रयोग करना चाहिए।

कुछ अन्य पर्यायवाची शब्दों को पढ़िए तथा समझिए।

1. अमृत — अमिय, सोम, सुधा, पीयूष
2. अतिथि — मेहमान, आगंतुक, पाहुना, अभ्यागत

3. अर्थ — धन, वित्त, पैसा, द्रव्य
4. अनुचर — दास, परिचारक, नौकर, सेवक
5. अवगुण — दोष, कमी, बुराई, ऐब
6. असुर — राक्षस, निशाचर, दानव, दनुज
7. अटल — स्थिर, अडिग, अचल, दृढ़
8. अनादर — अवज्ञा, अवमानना, तिरस्कार, अपमान
9. अनमोल — अमूल्य, बहुमूल्य, बेशकीमती
10. अनुरोध — आग्रह, प्रार्थना, विनती, विनय
11. अनूठा — अद्भुत, विलक्षण, अपूर्व, अनोखा
12. आँख — चक्षु, नेत्र, लोचन, दृग
13. आरंभ — श्रीगणेश, प्रारंभ, सूत्रपात, शुरुआत
14. आभूषण — अलंकार, जेवर, गहना, भूषण
15. इंद्र — देवेश, सुरपति, सुरेंद्र, सुरेश
16. ईर्ष्या — जलन, कुढ़न, डाह, विद्वेष
17. उजाला — रोशनी, प्रभा, विभा, आलोक
18. उत्साह — उमंग, जोश, हौसला, उछाह
19. उद्देश्य — प्रयोजन, लक्ष्य, मंशा, तात्पर्य
20. उद्यान — वाटिका, उपवन, फुलवारी, बगिया
21. उन्नति — प्रगति, उत्कर्ष, विकास, तरक्की
22. उपाय — युक्ति, साधन, तरकीब, यत्न
23. कपड़ा — वसन, अंबर, चीर, पट
24. किनारा — तट, तीर, कगार, कूल
25. खुशबू — सुगंध, सुवास, महक, सुरभि
26. घर — आलय, भवन, निकेत, गृह
27. चतुर — निपुण, प्रवीण, कुशल, चालाक
28. चंद्रमा — इंदु, मयंक, सुधाकर, राकेश
29. चमक — विभा, दीप्ति, आभा, ज्योति
30. चरण — पद, पाँव, पैर, पग

सोचो और बताओ
इनके पर्यायवाची रूप क्या हैं?

आकाश	कमल	गंगा
______	______	______
______	______	______

31. डर	आतंक, त्रास, खौफ, भय
32. तलवार	खड्ग, शमशीर, असि, कृपाण
33. दिवस	दिन, वार, वासर, दिवा
34. दुग्ध	दूध, पय, गोरस, क्षीर
35. धनुष	चाप, शरासन, कोदंड, धनु
36. धरती	धरा, वसुधा, धरणी, पृथ्वी
37. ध्वज	केतु, पताका, झंडा, निशान
38. नाग	विषधर, फणधर, सर्प, भुजंग
39. निर्मल	पवित्र, साफ़, स्वच्छ, शुद्ध
40. निडर	निर्भय, साहसी, ढीठ, धृष्ट
41. निशा	रात्रि, रात, यामिनी, रजनी
42. पथिक	राही, राहगीर, यात्री, बटोही
43. प्रभात	प्रातः, सुबह, भोर, सवेरा
44. प्रारंभ	शुरू, शुरुआत, आरंभ, आदि
45. प्रशंसा	स्तुति, तारीफ़, अभिनंदन, बड़ाई
46. पत्ता	पर्ण, पात, दल, किसलय
47. पार्वती	गौरी, दुर्गा, उमा, सती
48. बाण	सर, तीर, इषु, शिलीमुख
49. ब्रह्मा	विधि, अज, चतुरानन, स्वयंभू
50. बिजली	दामिनी, चपला, चंचला, विद्युत
51. मित्र	सखा, सहचर, साथी, हितैषी
52. मेघ	बादल, जलधर, वारिद, जलद

सोचो और बताओ
इनके पर्यायवाची रूप लिखिए।

माँ	पुत्र	पवन
______	______	______
______	______	______

53. युद्ध	समर, संघर्ष, रण, संग्राम
54. लहर	उर्मि, लहरी, तरंग, हिलोर
55. वसंत	ऋतुराज, मधुमास, ऋतुपति, कुसुमाकर
56. विघ्न	बाधा, रुकावट, अड़चन, कठिनाई
57. शरीर	देह, तन, काया, कलेवर
58. शत्रु	अरि, रिपु, वैरी, दुश्मन

59. समूह समुदाय, संघ, दल, झुंड

60. शक्ति पराक्रम, बल, ताकत, सामर्थ्य

61. सिंह मृगराज, केसरी, व्याघ्र, वनराज

62. सुंदर रमणीय, मनोहर, चारू, मनोरम

63. स्वर्ण कनक, हेम, कुंदन, कंचन

64. सरोवर पोखर, जलाशय, तड़ाग, तालाब

65. हाथी हस्ती, कुंजर, मातंग, करि

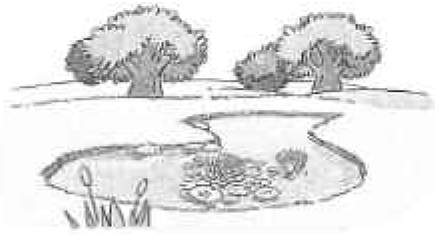

हमने जाना

- पर्यायवाची शब्द समान अर्थ बताते हैं।
- पर्यायवाची शब्दों में सूक्ष्म अंतर होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'सोम' किस शब्द के स्थान पर प्रयोग होता है?

वार अमृत सौम्य

ख. 'चक्षु' किस शब्द का पर्यायवाची रूप है?

वायु आँख शुरू

2. पर्यायवाची शब्दों को मिलाइए।

क. रात	वायु	यामिनी	अनिल
ख. पवन	निशा	समीर	रजनी
ग. अमृत	वाटिका	सोम	बगिया
घ. उद्यान	अमिय	फुलवारी	सुधा
ङ. चंद्रमा	अरि	सुधाकर	वैरी
च. शत्रु	मयंक	रिपु	राकेश

3. रंगीन शब्दों के स्थान पर उचित पर्यायवाची रूप लिखकर वाक्य दोबारा लिखिए।

क. आज हमारे घर मेहमान आनेवाले हैं। ______________________

ख. दूसरों के अवगुण मत देखो। ______________________

ग. कितना विलक्षण दृश्य है! __________

घ. नदी के तीर पर भीड़ लगी थी। __________

ङ. मैंने गुरुजी के पाँव स्पर्श किए। __________

च. सबने मेरी स्तुति में कुछ शब्द कहे। __________

छ. दोनों सेनाओं ने संघर्ष आरंभ कर दिया। __________

ज. डर के मारे मेरा कलेवर काँप रहा था। __________

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के पर्यायवाची रूप से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. राजा ने उसके कार्य से खुश होकर उसे __________ उपहार दिया। (बहुमूल्य)

ख. मैं आप सभी से कुछ देर शांत रहने का __________ करता हूँ। (विनय)

ग. देशभक्ति के गीतों ने सैनिकों में __________ भर दिया। (जोश)

घ. जीवन में मेरा __________ शिक्षक बनने का है। (लक्ष्य)

ङ. वह अपने कार्य में बहुत __________ है। (निपुण)

च. आज मैंने अपने व्यवसाय की __________ की है। (आरंभ)

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. पर्यायवाची शब्दों से क्या अभिप्राय है?

ख. दो उदाहरण देकर समझाएँ कि पर्यायवाची शब्दों में सूक्ष्म अंतर होता है।

कार्यकलाप

चित्र देखकर आपके मस्तिष्क में जो शब्द आएँ, उन्हें लिखिए। सभी शब्दों के पर्यायवाची रूप खोजिए।

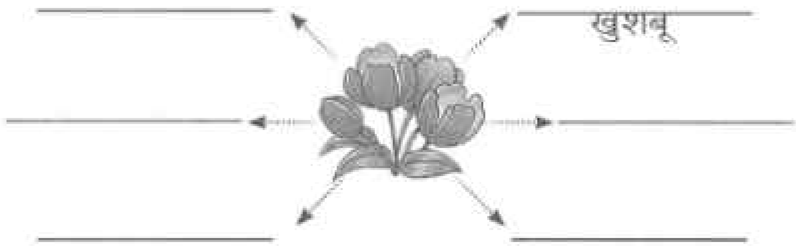

जाना-समझा

पर्यायवाची शब्द, भाषा के शब्द-भंडार में वृद्धि करते हैं।

6 विलोम शब्द

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- चित्र में कौन-कौन दिखाई दे रहे हैं? ______________
- दुकानदार क्या कर रहा है? ______________
- खरीददार क्या कर रहा है? ______________
- किस प्रकार की क्रियाएँ हो रही हैं? ______________

चित्र में दिखाई दे रहे हैं—दुकानदार और खरीददार। दुकानदार सामान बेच रहा है तथा खरीददार उसे खरीद रहा है। खरीदने और बेचने की क्रियाएँ हो रही हैं। एक क्रेता है, तो दूसरा विक्रेता। एक खरीद रहा है और दूसरा बिक्री कर रहा है। एक क्रय कर रहा है और दूसरा विक्रय कर रहा है।

क्रेता विक्रेता | खरीद बिक्री | क्रय विक्रय | खरीदना बेचना

उपर्युक्त सभी शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ दे रहे हैं।

वे शब्द, जो एक-दूसरे का विपरीत अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

विलोम शब्दों का निर्माण निम्नांकित तरीकों से किया जा सकता है—

अ वर्ण जोड़कर

1. कथनीय	अकथनीय	6. नश्वर	अनश्वर	11. शिष्ट	अशिष्ट
2. ज्ञात	अज्ञात	7. नित्य	अनित्य	12. सभ्य	असभ्य
3. चल	अचल	8. पर्याप्त	अपर्याप्त	13. स्वस्थ	अस्वस्थ
4. चर	अचर	9. वैध	अवैध	14. स्वीकृत	अस्वीकृत
5. ज्ञान	अज्ञान	10. शुभ	अशुभ	15. हिंसा	अहिंसा

सोचो और बताओ इनके विलोम रूप लिखिए।	धर्म ________	हित ________	सत्य ________

उपसर्ग जोड़कर

16.	अंत	अनंत	21.	आस्था	अनास्था	26.	उत्साह	निरुत्साह
17.	अंकुश	निरंकुश	22.	आधार	निराधार	27.	क्रिया	प्रतिक्रिया
18.	अपराधी	निरपराधी	23.	आहार	निराहार	28.	जय	पराजय
19.	आचार	अनाचार	24.	उचित	अनुचित	29.	शकुन	अपशकुन
20.	आवरण	अनावरण	25.	उपयुक्त	अनुपयुक्त	30.	होनी	अनहोनी

उपसर्ग में परिवर्तन द्वारा

31.	अंतरंग	बहिरंग	37.	आकर्षण	विकर्षण	43.	संकल्प	विकल्प
32.	अचेत	सचेत	38.	अनुकूल	प्रतिकूल	44.	सबल	दुर्बल
33.	अनुरक्त	विरक्त	39.	इहलोक	परलोक	45.	सक्रिय	निष्क्रिय
34.	अपमान	सम्मान	40.	उत्कृष्ट	निकृष्ट	46.	सगुण	निर्गुण
35.	आदान	प्रदान	41.	निर्जल	सजल	47.	सौभाग्य	दुर्भाग्य
36.	आयात	निर्यात	42.	महात्मा	दुरात्मा	48.	सुमति	कुमति

लिंग-परिवर्तन द्वारा

49.	गाय	बैल	50.	राजा	रानी	51.	वर	वधू

सोचो और बताओ इनके विलोम रूप लिखिए।	पुत्र ________	लड़का ________	भाई ________

भिन्न शब्द द्वारा

52.	अपना	पराया	60.	कृष्ण	शुक्ल	68.	बंधन	मुक्ति
53.	आज्ञा	अवज्ञा	61.	कर्कश	मधुर	69.	बुराई	भलाई
54.	आलस्य	स्फूर्ति	62.	खरा	खोटा	70.	रक्षक	भक्षक
55.	उग्र	शांत	63.	गुरु	लघु	71.	विष	अमृत
56.	उत्तम	अधम	64.	जटिल	सरल	72.	विशेष	सामान्य
57.	उत्थान	पतन	65.	ठोस	तरल	73.	सूक्ष्म	स्थूल
58.	उच्चतम	निम्नतम	66.	तुच्छ	महान	74.	स्वार्थ	परमार्थ
59.	कनिष्ठ	ज्येष्ठ/वरिष्ठ	67.	बंजर	उपजाऊ	75.	ह्रास	वृद्धि

हमने जाना

- विलोम शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ बताते हैं।
- विलोम शब्द समान स्तर के होते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'आहार' शब्द का विलोम रूप क्या होगा?

विहार   मिताहार   निराहार

ख. 'सगुण' शब्द का विलोम रूप क्या होगा?

अवगुण   निर्गुण   दुर्गुण

2. 'अ' उपसर्ग लगाकर विलोम शब्द बनाइए।

क. सभ्य ________	ख. नैतिक ________
ग. सुविधा ________	घ. स्थायी ________
ङ. नश्वर ________	च. शिक्षित ________
छ. स्वीकृत ________	ज. नित्य ________

3. दिए गए शब्दों में उपसर्ग जोड़कर शब्द बनाइए तथा उपसर्ग को परिवर्तित करके उसका विलोम रूप बनाइए।

क. स	जल	सजल	निर्जल
ख. ____	मान	________	________
ग. ____	बल	________	________
घ. ____	रंग	________	________
ङ. ____	भाग्य	________	________

4. रंगीन शब्दों के विलोम रूप लिखकर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. पक्षियों को बंधन में मत रखो, उन्हें ________ करो।

ख. बुराई करके ________ की आस मत रखो।

ग. वह निम्नतर स्तर से उठकर ________ स्तर तक पहुँचा है।

घ. आज के जमाने में तो रक्षक ही ____________ बने हुए हैं।

ङ. तुम्हारा स्वभाव बहुत उग्र है, थोड़ा ____________ रहा करो।

च. मेहनत से बंजर धरती को भी ____________ बनाया जा सकता है।

5. 'अन्' तथा 'निर्' उपसर्ग जोड़कर विलोम रूप बनाइए।

क. उचित ____________ ख. अपराधी ____________

ग. आचार ____________ घ. आस्था ____________

ङ. आधार ____________ च. उत्साह ____________

छ. उपयुक्त ____________ ज. होनी ____________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. एक-दूसरे का विपरीत अर्थ बतानेवाले शब्द क्या कहलाते हैं?

ख. विलोम शब्दों का निर्माण किन-किन तरीकों से किया जा सकता है?

कार्यकलाप

निम्नांकित विलोम शब्दों का निर्माण किस प्रकार से हुआ है, उन्हें समझिए तथा तालिका में सही स्थान पर लिखिए।

स्वस्थ × अस्वस्थ आदान × प्रदान माता × पिता धूप × छाँव ज्ञान × अज्ञान धर्म × अधर्म
भाई × बहन आर्द्र × शुष्क परतंत्र × स्वतंत्र बेटा × बेटी अर्थ × अनर्थ उन्नति × अवनति
अनुकूल × प्रतिकूल हर्ष × विषाद आकाश × पाताल अध्यापक × अध्यापिका

'अ' वर्ण जोड़कर	उपसर्ग में परिवर्तन द्वारा	लिंग में परिवर्तन द्वारा	भिन्न शब्द द्वारा

जाना-समझा

विलोम शब्द समान स्तर के होते हैं। तत्सम शब्दों का विलोम तत्सम, संज्ञा का विलोम संज्ञा तथा विशेषण का विलोम विशेषण होता है।

7 अनेकार्थक शब्द

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- आपको चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है? ____________________
- कुम्हार क्या घुमा रहा है? ____________________
- कुम्हार के चाक, साइकिल के पहिए तथा गोल घेरे को एक शब्द में क्या कहेंगे? ____________________

चित्र में कुम्हार चाक घुमा रहा है। कुम्हार के चाक, साइकिल के पहिए तथा गोल घेरे को एक शब्द में 'चक्र' कह सकते हैं। पहिया, कुम्हार का चाक, गोल घेरा सब चक्र के विभिन्न अर्थ हैं। भाषा में ऐसे अनेक शब्द हैं, जो विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न अर्थ देते हैं।

ऐसे शब्द, जो एक से अधिक अर्थ व्यक्त करते हैं, अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं।

अर्थ को वाक्य-प्रयोग द्वारा भली प्रकार से समझा जा सकता है।

कुछ अनेकार्थक शब्द निम्नांकित हैं–

1. अंकुश — हाथी को हाँकने की छड़ी, रोक, नियंत्रण
2. अंबर — आकाश, शून्य, वस्त्र, कपास
3. अंत — मृत्यु, सबके बाद, सिरा, रहस्य, भेद
4. अग्र — आगे का भाग, उत्तम, प्रधान, प्रथम, शिखर
5. अर्क — रस, आक का पौधा, सूर्य, अग्नि, ज्योति
6. अरुण — सूर्य का सारथि, सिंदूर, लाल रंग, सूर्य
7. उग्र — तीव्र, भयानक, क्रूर, कष्टदायक
8. कला — अंश, गुण, कार्य-कौशल, चंद्रमा की कलाएँ

आक का पौधा

9.	कुंभ	घड़ा, हाथी के मस्तक का मध्य भाग, एक कलश, एक राशि
10.	कुशल	चतुर, निपुण, खैरियत, उचित, प्रसन्न
11.	खंड	टुकड़ा, भाग, प्रदेश, अपूर्ण
12.	खल	दवा कूटने का पात्र, दुष्ट, धतूरे का पौधा
13.	गति	चाल, मोक्ष, हालत, रफ़्तार
14.	गुण	रस्सी, कौशल, स्वभाव, प्रत्यंचा, महत्त्व, हुनर, शील, विशेषता
15.	गुरु	आचार्य, बड़ा, चालाक, वृहस्पति
16.	ग्रहण	सूर्य-चंद्र ग्रहण, स्वीकार करना, धारण करना, लेना, अर्थबोध
17.	घर	ठिकाना, मकान, घराना, गृहस्थी, रहने का स्थान
18.	जड़	मूर्ख, अचेतन, वृक्ष का भाग, स्तब्ध, निर्जीव, मूल कारण
19.	जवान	सैनिक, तरुण, बलवान, युवा व्यक्ति
20.	तनु	अल्प, दुबला-पतला, त्वचा, शरीर, कोमल
21.	तप	तपस्या, कठिन परिश्रम, योगाभ्यास, ताप
22.	ताल	लय, ताड़ का पेड़, तालाब, करतल ध्वनि
23.	तार	धागे की पतली डोरी, सूत्र, टुकड़े-टुकड़े करना, उद्धार करना
24.	तीर	तट, किनारा, समीप, बाण
25.	दंड	ज़ुर्माना, डंडा, हल में लगी लकड़ी, व्यायाम
26.	दक्ष	प्रजापति, निपुण, कुशल, चतुर
27.	दृष्टि	नज़र, अभिप्राय, ज्ञान, प्रकाश, देखने का ढंग, विचार
28.	द्विज	ब्राह्मण, दाँत, चंद्रमा, वैश्य, क्षत्रिय, पक्षी
29.	धारा	संविधान का अंश, पानी का तीव्र बहाव, घोड़े की चाल
30.	नाक	शरीर का अवयव, प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा, स्वर्ग, इज़्ज़त
31.	नाम	पहचान के लिए दिया जानेवाला शब्द, यश, प्रतिष्ठा, संज्ञा
32.	पर	परंतु, पंख, बाद, ऊपर, दूसरा
33.	पुष्कर	एक तीर्थस्थल, तालाब, हाथी की सूँड़ का अगला भाग, कमल

सोचो और बताओ

रंगीन शब्द का क्या अर्थ है?

क. अंबर में काले बादल छाए हैं। ____________

ख. विष्णु ने पीत अंबर धारण किए। ____________

34.	पूर्व	एक दिशा, पहले, पिछला, पुराना, अग्रभाग, पुरखा
35.	बलि	राजा बलि, बलिदान, उपहार, भूमि-कर, न्योछावर, चढ़ावा
36.	बाल	बालक, केश, गेहूँ की बाल, रोम
37.	भाग	हिस्सा, विभाजन, वैभव, बँटवारा, भाग्य

गेहूँ की बाल

38.	भाव	मूल्य, मन में उत्पन्न विचार, मतलब, मुख की आकृति या चेष्टा
39.	मंगल	शुभ, सप्ताह का एक दिन, एक ग्रह, कल्याण
40.	माँग	बालों के बीच की रेखा, माँगने का भाव, आवश्यकता, सिरा
41.	मान	इज़्ज़त, नाप-तौल, अभिमान
42.	युग	इतिहास का काल, जमाना, जोड़ा, समय
43.	योग	जोड़, संयोग, मुहूर्त, उपाय, नियम

सोचो और बताओ

अनेकार्थक शब्द का सही जोड़ा कौन-सा है?

क. तीन किनारा तट

ख. गुण स्वभाव रस्सी

ग. विधि ईश्वर कानून

घ. सुधा अमृत वायु

44.	रंग	सुंदरता, रँगने की वस्तु, नृत्य-संगीत, दशा, शोभा
45.	रस	स्वाद, काव्य रस, अर्क, सार
46.	वार	प्रहार, आक्रमण, दिन, द्वार, रुकावट, समूह
47.	वास	रहना, रहने का स्थान, सुगंध, कपड़ा
48.	शृंखला	जंजीर, क्रम, कमरबंद, मेखला
49.	श्री	लक्ष्मी, शोभा, धन, यश
50.	सरल	सीधा, भोला, ईमानदार, आसान
51.	सारंग	हिरण, चातक, मोर, साँप, बादल
52.	सूत	धागा, लंबाई नापने की माप, निशान लगाने की डोरी, सारथि, बढ़ई
53.	हंस	प्राण, गुरु, अश्व, ब्रह्मा, सूर्य
54.	हरि	चंद्र, यम, वायु, विष्णु, बंदर, सिंह

हमने जाना

- अनेकार्थक शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं।
- वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ को भली प्रकार से समझा जा सकता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'वह अपने कार्य में बहुत कुशल है।' रंगीन शब्द का क्या अर्थ है?

उचित चतुर निपुण

ख. 'मैंने बहुत सोचा, परंतु समझ नहीं आया।' रंगीन शब्द का क्या अर्थ है?

पर पंख बाद

2. अनेकार्थक शब्दों का सही मिलान कीजिए।

क. मान	दिशा	नाप-तौल	पुराना
ख. पूर्व	इज़्ज़त	पिछला	अभिमान
ग. अंबर	ज़ुर्माना	किनारा	व्यायाम
घ. योग	जोड़	शून्य	बाण
ङ. तीर	आकाश	डंडा	वस्त्र
च. दंड	तट	उपाय	संयोग

3. रंगीन शब्दों का सही अर्थ लिखिए।

क. आपकी दृष्टि में इसका क्या अर्थ है? ____________

ख. उसे तुमपर बहुत मान है। ____________

ग. अपने बच्चे की बढ़ती हुई उद्दंडता पर अंकुश लगाओ। ____________

घ. बड़ों की बातों से कुछ सीख ग्रहण करो। ____________

ङ. दो और दो का योग चार होता है। ____________

च. उसने कपड़ा टुकड़े-टुकड़े कर दिया। ____________

4. रंगीन शब्दों के स्थान पर अनेकार्थक शब्द लिखिए।

क. पानी के तीव्र बहाव के साथ सबकुछ बह गया। ____________

ख. तुम लंबाई नापने की माप से मेरी ऊँचाई माप दो। ____________

ग. हम शरीर के अवयव द्वारा साँस लेते हैं। ____________

घ. महावत के हाथ में हाथी को हाँकने की छड़ी थी। ____________

ङ. भिक्षुक ने दान की सामग्री को सहर्ष स्वीकार कर लिया। ____________

कार्यकलाप

शिक्षक कक्षा को दो समूहों में बाँटेंगे। वे एक समूह को कुछ शब्द देंगे। यह समूह इन शब्दों के तीन-तीन अर्थ बताएगा। दूसरा समूह उन्हीं विभिन्न अर्थों को व्यक्त करते वाक्य बनाएगा।

जाना-समझा

अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग प्रसंग के अनुरूप करना चाहिए।

8 श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» नाव के पर्यायवाची शब्दों पर ✓ लगाइए। तरणी तरुणी तरी

» स्त्री के पर्यायवाची शब्दों पर ✓ लगाइए। महिला तरुणी पत्नी

» 'तरणी' तथा 'तरुणी' शब्दों में क्या अंतर है? ______________________

'तरणी' तथा 'तरुणी' शब्द उच्चारित करने पर लगभग समान लगते हैं, परंतु इनका अर्थ भिन्न होता है। ऐसे शब्दों को श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

> श्रुति + सम + भिन्न + अर्थ, अर्थात ऐसे शब्द, जो सुनने में समान प्रतीत हों, परंतु अर्थ में भिन्न हों, उन्हें श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

निम्नांकित श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द पढ़िए तथा इनके मध्य के सूक्ष्म अंतर को जानिए।

1.	अंत	समाप्ति	6.	आकर	खान	11.	कृपण	कंजूस
	अंत्य	अंतिम		आकार	आकृति		कृपाण	तलवार
2.	अंबा	माता	7.	ओर	तरफ़	12.	खोलना	बंधनमुक्त करना
	अंबु	जल		और	तथा		खौलना	उबलना
3.	अपेक्षा	आशा	8.	उधार	ऋण	13.	ग्रंथ	पुस्तक
	उपेक्षा	तिरस्कार		उद्धार	मुक्ति		ग्रंथि	गाँठ
4.	अरि	शत्रु	9.	उपकार	भलाई	14.	गदा	एक हथियार
	आरी	काटने का औज़ार		अपकार	बुराई		गधा	एक जानवर
5.	अध्ययन	पढ़ना	10.	कोष	खज़ाना	15.	चपल	चंचल
	अध्यापन	पढ़ाना		कोश	शब्दकोश		चपला	बिजली

16. चालाक — होशियार
चालक — चलानेवाला

17. जवान — युवक
जबान — जीभ

18. तप — तपस्या
ताप — गरमी

19. देव — देवता
दैव — भाग्य

20. नत — झुका हुआ
नित — प्रतिदिन

21. नादान — नासमझ
निदान — इलाज

22. निधन — मृत्यु
निर्धन — गरीब

23. निश्छल — छलरहित
निश्चल — अटल

24. पथ — रास्ता
पथ्य — रोगी का भोजन

25. प्रकार — तरह
प्राकार — चहारदीवारी

26. प्रण — प्रतिज्ञा
प्राण — जान

27. प्रधान — मुख्य
प्रदान — देना

28. फुट — नापने का पैमाना
फूट — आपसी कलह

29. बदन — शरीर
वदन — मुख

30. बहु — अधिक
बहू — पुत्रवधू

31. बार — पुनः
वार — दिन

32. भजन — गीत
भोजन — खाना

33. भव — संसार
भव्य — सुंदर

34. भवन — घर
भुवन — संसार

35. माता — माँ
माथा — मस्तक

36. रक्त — खून
रिक्त — खाली

37. राज़ — रहस्य
राज — राज्य

38. लक्ष्य — उद्देश्य
लक्ष — लाख

39. वास — निवास
बास — गंध

सोचो और बताओ

सूक्ष्म अंतर लिखिए।

प्रसाद ____________ अनल ____________

प्रासाद ____________ अनिल ____________

40. शाल — गरम चादर
साल — वर्ष

41. शुल्क — फ़ीस
शुक्ल — उज्ज्वल

42. शोक — दुख
शौक — चाव

43. संबंध — रिश्ता
संबद्ध — बँधा हुआ

44. सुखी — आनंदित
सखी — सहेली

45. हिय — हृदय
हय — घोड़ा

हमने जाना

- श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द सुनने में समान लगते हैं।
- अर्थ के आधार पर ये भिन्न होते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'बच्चा पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर रहा है।' इस वाक्य में 'अध्ययन' शब्द का क्या अर्थ है?

पढ़ना पढ़ाना पढ़वाना

ख. 'मुझे जन्मदिन पर कोश उपहार में मिला।' इस वाक्य में 'कोश' शब्द का क्या अर्थ है?

शब्दकोश　　खज़ाना　　मोती

2. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के सही जोड़े पर ✓ तथा गलत जोड़े पर × लगाइए।

क. भव	सुंदर	ख. जवान	युवक	ग. ओर	तथा
भव्य	संसार	जबान	जीभ	और	तरफ़
घ. निधन	मृत्यु	ङ. शुल्क	फ़ीस	च. तप	गरमी
निर्धन	गरीब	शुक्ल	उज्ज्वल	ताप	तपस्या

3. दिए गए शब्दों के सही अर्थ पर ✓ लगाइए।

क. प्रतिज्ञा	प्रण	प्राण	ख. खून	रक्त	रिक्त
ग. उद्देश्य	लक्ष्य	लक्ष	घ. शौक	चाव	दुख
ङ. घर	भवन	भुवन	च. भाग्य	देव	दैव

4. कोष्ठक से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. प्रधानाचार्य ने मेरा ____________ माफ़ कर दिया।　(शुल्क/शुक्ल)

ख. सभी विद्यार्थी ____________ इस पाठ का वाचन करें।　(बार-बार/वार-वार)

ग. आपसी ____________ का नतीज़ा बुरा होता है।　(फूट/फुट)

घ. हिंदी का शब्द ____________ बहुत विस्तृत है।　(कोश/कोष)

ङ. पानी धीरे-धीरे ____________ शुरू हो गया।　(खोलना/खौलना)

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों से क्या अभिप्राय है?

ख. किन्हीं दो श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

कार्यकलाप

दिए गए चित्र की भाँति श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों को स्पष्ट करते अन्य चित्र बनाकर कक्षा में लगाइए।

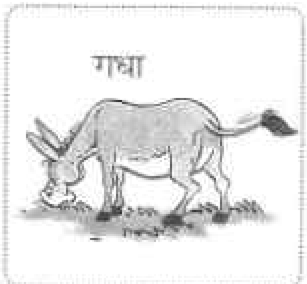

जाना-समझा

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों में स्वर, व्यंजन अथवा मात्रा का सूक्ष्म अंतर होता है। इनका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

9 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

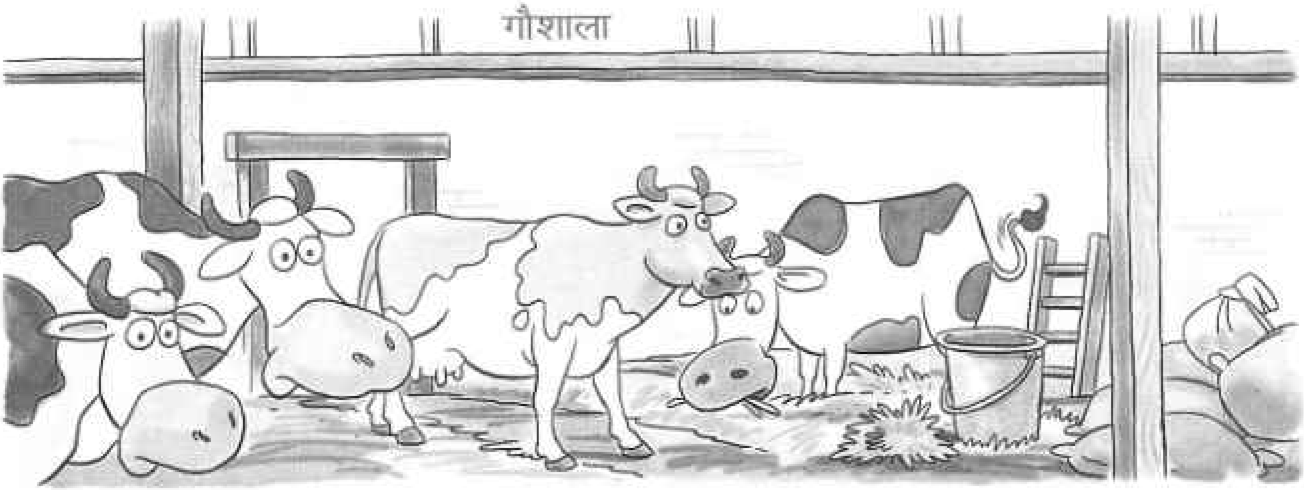

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- चित्र कहाँ का है? ____________________
- गौशाला किसे कहते हैं? ____________________

जिस स्थान पर गायें रखी जाती हैं, उसे गौशाला कहते हैं। 'गौशाला' एक शब्द है जो 'जिस स्थान पर गायें रखी जाती हैं' अनेक शब्दों के स्थान पर आया है। ऐसे शब्दों को 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहते हैं। ऐसे शब्द भाषा को प्रभावशाली बनाते हैं तथा अनावश्यक विस्तार को कम करते हैं।

अनेक शब्दों के स्थान पर आनेवाला एक शब्द अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहलाता है।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं—

1. जिसका वर्णन किया जा सके	वर्णनीय
2. जिसका वर्णन न किया जा सके	अवर्णनीय
3. जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
4. जिसकी तुलना की जा सके	तुलनीय
5. जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
6. जो बिना वेतन के काम करे	अवैतनिक
7. जिसे जीता न जा सके	अजेय
8. गगन को चूमनेवाला	गगनचुंबी
9. कानून के विरुद्ध	अवैध
10. जो इस लोक का हो	लौकिक

गगनचुंबी इमारत

11. जो इस लोक का न हो	अलौकिक
12. जो कहा जा सके	कथनीय
13. जो कहा न जा सके	अकथनीय
14. जो कल्पना से परे हो	कल्पनातीत
15. जिस धरती पर खूब उपज हो	उपजाऊ
16. जिस धरती पर बिलकुल उपज न हो	बंजर
17. जिसका कोई आधार न हो	निराधार
18. अनुकरण करने योग्य	अनुकरणीय
19. गोद लिया हुआ पुत्र	दत्तक
20. जिसमें सहनशक्ति हो	सहिष्णु
21. छूत से फैलनेवाला रोग	संक्रामक
22. पशुओं को चरानेवाला	चरवाहा
23. क्षणभर में नष्ट होनेवाला	क्षणभंगुर
24. दूसरों पर उपकार करनेवाला	परोपकारी

चरवाहा

सोचो और बताओ

सही विकल्प पर ✓ लगाइए।

जिसने अपराध न किया हो	अपराधी	निरपराधी
जिसके पार देखा जा सके	पारदर्शी	अपारदर्शी

25. शिव की भक्ति करनेवाला	शैव
26. विष्णु की भक्ति करनेवाला	वैष्णव
27. जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो	खंडित
28. जो सबको प्रिय हो	सर्वप्रिय
29. जो पहले न पढ़ा हुआ हो	अपठित
30. जो दूसरों के अधीन हो	पराधीन
31. जो स्व के अधीन हो	स्वाधीन
32. जो नष्ट होनेवाला हो	नश्वर
33. युग का निर्माण करनेवाला	युगनिर्माता
34. जो अपनी बात से न टले	अटल
35. जो अपनी बात से न डिगे	अडिग
36. जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम
37. अचानक हो जानेवाला	आकस्मिक

खंडित

38.	जिसकी कोई संतान न हो	निस्संतान
39.	जिसे जाना न जा सके	अज्ञेय
40.	जिसकी कोई सीमा न हो	असीम
41.	जो सब प्रकार की शक्तियों से संपन्न हो	सर्वशक्तिमान
42.	अनुचित बात के लिए आग्रह	दुराग्रह
43.	जो पथ से भ्रष्ट हो गया हो	पथभ्रष्ट
44.	जिसे सहन न किया जा सके	असहनीय
45.	जिसका चित्त एक जगह स्थिर हो	एकाग्रचित्त
46.	किसी विषय को विशेष रूप से जाननेवाला	विशेषज्ञ
47.	जिसका विभाजन न किया जा सके	अविभाजित
48.	जिसपर विश्वास किया जा सके	विश्वस्त
49.	जो तर्क के द्वारा माना गया हो	तर्कसम्मत
50.	तेज़ गति से चलनेवाला	द्रुतगामी
51.	जो प्रकृति से संबंधित हो	प्राकृतिक

हमने जाना

- अनेक शब्दों के स्थान पर आनेवाला शब्द 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहलाता है।
- ऐसे शब्द भाषा को प्रभावशाली बनाते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. 'जो दूसरों के अधीन हो' के लिए एक शब्द क्या होगा?

   स्वाधीन   पराधीन   पराभव

   ख. 'जो पहले न पढ़ा हुआ हो' के लिए एक शब्द क्या होगा?

   पठित   अपठित   अनपढ़

2. अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

   क. वर्णनीय ____________________

   अ + वर्णनीय ____________________

ख. प्रत्यक्ष ____________________

अ + प्रत्यक्ष ____________________

ग. तुलनीय ____________________

अ + तुलनीय ____________________

घ. कथनीय ____________________

अ + कथनीय ____________________

3. अर्थ समझकर शब्द बनाइए तथा उसके लिए अनेक शब्द लिखिए।

क. पर + उपकारी ___परोपकारी___ ___दूसरों पर उपकार करनेवाला___

ख. निर् + आधार __________ __________

ग. सर्व + प्रिय __________ __________

घ. स्व + अधीन __________ __________

ङ. अनु + करणीय __________ __________

च. दुर् + आग्रह __________ __________

4. रंगीन शब्दों के लिए एक शब्द लिखकर वाक्य दोबारा लिखिए।

क. जीवन तो क्षणभर में नष्ट होनेवाला है। ____________________

ख. ईश्वर सब प्रकार की शक्तियों से संपन्न है। ____________________

ग. वह बात करो, जो तर्क द्वारा मानी गई हो। ____________________

घ. सभी प्रकृति से संबंधित पदार्थ अमूल्य हैं। ____________________

ङ. सरदार पटेल युग का निर्माण करनेवाले थे। ____________________

कार्यकलाप

एक सर्वप्रिय तथा सर्वशक्तिमान राजा का एक मंत्री था। वह निस्संतान था। वह एकाग्रचित्त होकर प्रतिदिन ईश्वर की आराधना करता था। उसे अपना जीवन क्षणभंगुर तथा नश्वर लगता था।

उपर्युक्त गद्यांश में कई ऐसे शब्द आए हैं, जिन्हें अनेक शब्दों में लिखा जा सकता है। कुछ गद्यांश लेकर इसी प्रकार के शब्दों को रेखांकित कर उनके लिए अनेक शब्द लिखिए।

जाना-समझा

वाक्यांश को जब संक्षिप्त रूप में लिखते हैं, तब वे सामासिक पद का रूप भी ले लेते हैं।

10 एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द

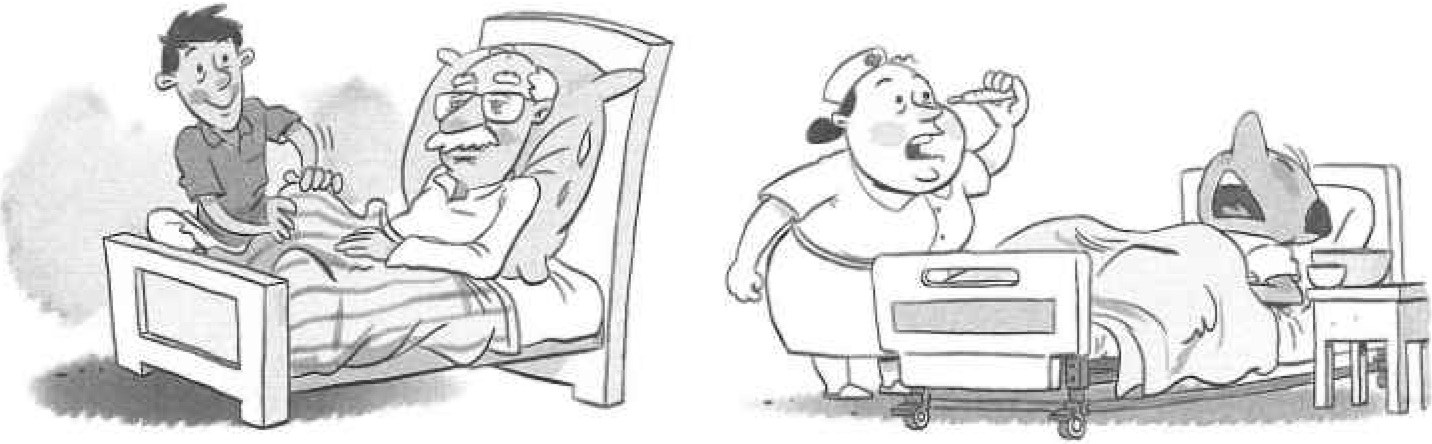

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» बच्चा किसकी सेवा कर रहा है? ______________________

» नर्स किसकी सुश्रूषा कर रही है? ______________________

» 'सेवा' तथा 'सुश्रूषा' में क्या अंतर है? ______________________

'सेवा' तथा 'सुश्रूषा' शब्द एकार्थक प्रतीत हो रहे हैं, परंतु इनमें सूक्ष्म अंतर है। सेवा अपने से बड़ों की होती है। सुश्रूषा रोगी अथवा दुखियों की सेवा को कहते हैं। ऐसे शब्द एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द कहलाते हैं।

> ऐसे शब्द, जो एक जैसे अर्थवाले प्रतीत होते हैं, परंतु उनमें सूक्ष्म अंतर होता है, एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द कहलाते हैं।

कुछ एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द निम्नलिखित हैं—

1. अनुपम	जिसकी उपमा न दी जा सके—इस स्मारक का सौंदर्य अनुपम है।
अद्‌वितीय	जिसके समान कोई दूसरा न हो—भारतीय संस्कृति अद्‌वितीय है।
2. आधि	मानसिक कष्ट—आधि ही मेरे उच्च रक्तचाप का कारण है।
व्याधि	शारीरिक कष्ट—व्याधियों के कारण मैं परेशान हूँ।
3. ईर्ष्या	किसी की उन्नति से जलना—उसकी बढ़ती हुई धन-दौलत से मुझे ईर्ष्या होती है।
स्पर्धा	किसी से होड़ करना—दोनों बहनों में प्रतियोगिता जीतने की स्पर्धा लगी हुई है।
4. उत्साह	जोश—देशभक्ति के गीतों ने सैनिकों में उत्साह भर दिया।
साहस	हिम्मत—विपत्तियों में साहस नहीं खोना चाहिए।

5. **दुख** सामान्य पीड़ा—तुम्हारी दीन-दशा देखकर मुझे बहुत दुख हो रहा है।

कष्ट किसी कार्य से होनेवाली पीड़ा—चोट के कारण चलने में मुझे बहुत कष्ट हो रहा है।

6. भ्रम वास्तविकता को गलत समझना—मुझे रेगिस्तान में पानी का भ्रम हो रहा था।

संदेह वास्तविकता का निश्चय न हो पाना—मुझे संदेह है कि यह चित्र तुम्हारा ही है।

7. अनुकूल पक्ष में/अनुसार—ऋतु के अनुकूल वस्त्र धारण करो।

अनुरूप मिलता-जुलता—वह जैसा करे, तुम भी उसी के अनुरूप व्यवहार करना।

सोचो और बताओ

अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

अमूल्य ______________ ______________________

बहुमूल्य ______________ ______________________

8. शोक किसी की मृत्यु से होनेवाला दुख—कर्मचारी की मृत्यु का समाचार सुन संस्था में शोक छा गया।

खेद पश्चात्ताप से हुआ दुख—मैंने तुम्हें बेवजह डाँट दिया, इसका मुझे खेद है।

9. अभ्यास किसी कार्य को बार-बार करना—लगातार अभ्यास से मैंने नृत्य में निपुणता पाई है।

परिश्रम मेहनत—किसान कठिन परिश्रम कर खेतों में अन्न उपजाता है।

10. उपहास मज़ाक उड़ाना—कभी किसी का उपहास मत करो।

परिहास हँसी-मज़ाक करना—सभी भाई-बहनों के मिलते ही परिहास का दौर शुरू हो जाता है।

11. **वध** अत्याचारी या शत्रु के प्राण लेना—राम ने रावण का वध किया।

हत्या निर्दोष के प्राण लेना—कुछ लोगों ने दिनदहाड़े युवक की हत्या कर दी।

12. पुत्र अपना बेटा—मेरा पुत्र बहुत होनहार है।

बालक कोई भी लड़का—हमारी कॉलोनी के बालक बहुत शरारती हैं।

13. बड़ा आकार का बोधक—मेरा घर बहुत बड़ा है।

बहुत परिमाण का बोधक—मैंने बहुत-से फल खरीदे।

14. **अपराध** सामाजिक कानून का उल्लंघन—हत्या बहुत बड़ा अपराध है।

पाप नैतिक नियमों का उल्लंघन—झूठ बोलना पाप है।

15. निधन महान तथा लोकप्रिय व्यक्ति की मृत्यु—पंडित जवाहरलाल नेहरू के निधन से सारे देश में शोक की लहर दौड़ गई थी।

मृत्यु सामान्य शरीरांत—मेरे एक परिचित की आज कोरोना से मृत्यु हो गई।

16. अनिवार्य जो छोड़ा न जा सके—इस प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है।

आवश्यक ज़रूरी—मुझे एक आवश्यक कार्य है।

17.	व्यय	सामान्य खर्च—मैं राशन पर सबसे अधिक व्यय करती हूँ।
	अपव्यय	फ़िजूल खर्च—तुम कपड़े खरीदने पर बहुत अपव्यय करती हो।
18.	अगम	जहाँ पहुँचा न जा सके—विश्व के कुछ क्षेत्र आज भी अगम हैं।
	दुर्गम	जहाँ कठिनाई से पहुँचा जाए—मैंने उस दुर्गम पर्वत पर चढ़ने का निश्चय किया।
19.	निर्णय	फ़ैसला—मैंने इस नौकरी को छोड़ने का निर्णय लिया है।
	न्याय	इनसाफ़—न्यायपालिका ने न्याय किया और मेरी संपत्ति मुझे दिला दी।
20.	बुद्धि	सोचने-समझने की शक्ति—सभी निर्णय अपनी बुद्धि से लें।
	विवेक	सही-गलत का निर्णय लेने की शक्ति—विवेक का प्रयोग कर उचित निर्णय लें।
21.	परीक्षक	परीक्षा लेनेवाला—परीक्षक ने सभी को उत्तरपुस्तिका बाँट दी।
	निरीक्षक	देखभाल करनेवाला—निरीक्षक ने सारे क्षेत्र का निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट सौंप दी।

हमने जाना

- एकार्थक शब्द एक जैसे अर्थवाले प्रतीत होते हैं।
- एकार्थक शब्दों में बहुत सूक्ष्म अंतर होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'आधि' से क्या अभिप्राय है?

मानसिक कष्ट   शारीरिक कष्ट   इनमें दोनों

ख. 'अभ्यास' से क्या अभिप्राय है?

किसी कार्य को बार-बार करना   मेहनत करना   अथक श्रम करना

2. सही जोड़े पर ✓ लगाइए।

क. अनुकूल	पक्ष में	ख. परिहास	मज़ाक उड़ाना
अनुरूप	मिलता-जुलता	उपहास	हँसी-मज़ाक करना
ग. व्यय	फ़िजूल खर्च	घ. उत्साह	जोश
अपव्यय	सामान्य खर्च	साहस	हिम्मत

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के अर्थ स्पष्ट कर उचित विकल्प से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. मैंने अपने ____पुत्र____ को कुछ पैसे देकर बाज़ार भेजा। (पुत्र/बालक)

पुत्र ____अपना बेटा____   बालक ____कोई भी लड़का____

ख. मैंने इस स्थान को छोड़ने का ____________ लिया। (न्याय/ निर्णय)

न्याय ____________ निर्णय ____________

ग. मैं कल आऊँगा, आज मुझे ____________ कार्य है। (आवश्यक / अनिवार्य)

आवश्यक ____________ अनिवार्य ____________

घ. कल रात एक राजकर्मचारी की ____________ कर दी गई। (वध/ हत्या)

वध ____________ हत्या ____________

ङ. प्रथम आने के लिए दोनों सहेलियों में ____________ है। (स्पर्धा/ ईर्ष्या)

स्पर्धा ____________ ईर्ष्या ____________

4. अर्थ के आधार पर वाक्य बनाइए।

क. अस्त्र फेंककर मारा जानेवाला ____________

शस्त्र हाथ में पकड़कर चलाया जानेवाला ____________

ख. स्वागत अतिथि का आदर-सत्कार ____________

अभिनंदन किसी को सम्मानित करना ____________

ग. सहयोग एक-दूसरे की सहायता ____________

सहायता मदद ____________

कार्यकलाप

विद्यार्थी दिए गए वाक्यांशों को पढ़ें तथा इनके लिए वर्ग-पहेली में से उपयुक्त शब्द ढूँढ़कर गोला लगाएँ।

क. गुण-दोष प्रकट करना

ग. दूसरे की बुराई करना

ङ. काफ़ी समय पहले का

छ. कई शताब्दियों पहले का

आ	वि	ष्क	का	र
लो	ख	पु	रा	ना
च	कं	गा	ल	दी
ना	ग	प्रा	ची	न
झ	खो	ज	निं	दा

ख. पेट पालने के लिए भीख माँगना

घ. निर्धनता के कारण दया का पात्र

च. अज्ञात वस्तु का पता लगाना

ज. किसी नई वस्तु का निर्माण करना

जाना-समझा

पर्यायवाची शब्द समान अर्थ देते हैं, परंतु एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द समान अर्थ नहीं देते, बल्कि एक जैसे प्रतीत होते हैं।

आओ दोहराएँ 1 (पाठ 1 से 10 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. भाषा का कौन-सा रूप 'पढ़ना' और 'लिखना' कौशल का विकास करता है?

मौखिक रूप　　　　लिखित रूप

ख. किन स्वरों को बोलने में एक मात्रा का समय लगता है?

दीर्घ स्वरों को　　　　ह्रस्व स्वरों को

2. रंगीन शब्दों के विलोम रूप से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. पक्षियों को बंधन में मत रखो, उन्हें ______ करो।

ख. बुराई करके ______ की आस मत रखो।

3. रंगीन शब्दों के सही अर्थ पर ✓ लगाइए।

क. हिंदी का शब्द-भंडार बहुत बड़ा है। (कोश/कोष)

ख. आपसी कलह का नतीजा बुरा होता है। (फूट/फुट)

4. अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करके पुनः लिखिए।

क. रामायन पर आधारित ऐकांकी का चित्रन करें। ______

ख. मूंगफली के षिलके कुड़ेदान में डालो। ______

5. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए।

क. भिक्षुक ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

ख. अज्ञानता ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

6. संधि-विच्छेद कीजिए।

क. दुर्गुण ______ + ______　　ख. निष्पाप ______ + ______

ग. निस्संतान ______ + ______　　घ. मनोरथ ______ + ______

7. दिए गए रूढ़ शब्दों से यौगिक शब्द बनाइए।

क. दूध ______　　ख. पुस्तक ______

ग. घोड़ा ______　　घ. घर ______

8. उपसर्ग जोड़कर विलोम रूप लिखिए।

क. उत्साह ______ ______　　ख. उपयुक्त ______ ______

ग. होनी ______ ______　　घ. उचित ______ ______

9. रंगीन शब्दों के सही अर्थ लिखिए।

क. अपने बच्चे की बढ़ती हुई उद्दंडता पर अंकुश लगाओ। ______

ख. उसने कपड़ा टुकड़े-टुकड़े कर दिया। ______

10. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

क. दूसरों पर उपकार करनेवाला ______　　ख. युग का निर्माण करनेवाला ______

ग. सबको प्रिय लगनेवाला ______　　घ. जिसकी कोई उपमा न हो ______

11. वाक्य बनाकर अंतर स्पष्ट कीजिए।

क. उपहास ______

ख. परिहास ______

12. सही विकल्प से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. मैं कल आऊँगा। आज मुझे ______ काम है। (आवश्यक/अनिवार्य)

ख. प्रथम आने के लिए दोनों सहेलियों में ______ है। (स्पर्धा/ईर्ष्या)

11 उपसर्ग

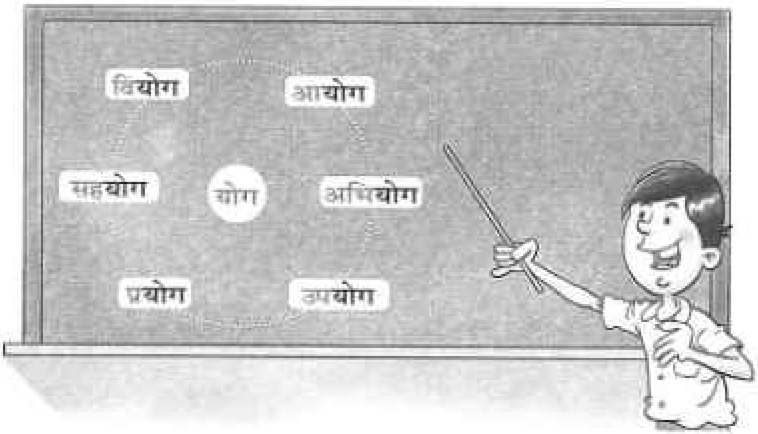

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- ऊपर लिखे शब्दों में मूल शब्द कौन-सा है? ________________
- मूल शब्द 'योग' के पहले कौन-कौन से शब्दांश लगे हैं? ________________
- क्या आ, अभि, उप, प्र, सह, वि शब्दांश के जुड़ने से मूल शब्द का अर्थ परिवर्तित हुआ है? ________________

ऐसे शब्दांश, जो मूल शब्द से पहले लगकर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं तथा नए शब्द का निर्माण करते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

हिंदी में प्रचलित मुख्य उपसर्ग चार हैं—

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. उर्दू के उपसर्ग
4. उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होनेवाले संस्कृत के अव्यय

1. संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अति/अधि	अधिक/श्रेष्ठ, ऊपर	अतिक्रमण, अधिनियम, अधिपति
अनु	पीछे, समान	अनुचर, अनुकंपा, अनुकरणीय, अनुग्रह
अप/अव	बुरा/हीनता, अनादर	अपशब्द, अपवाद, अवमानना, अवशेष
अभि	अधिकता, समीपता	अभिनय, अभियुक्त, अभिजात्य, अभिमान
आ	तक, ओर, समेत	आरोह, आक्रोश, आकृति, आगमन
उत्/उद्	ऊपर, श्रेष्ठ	उज्ज्वल, उल्लेख, उत्कंठा, उच्चारण

उप	सदृश, निकट, हीन	उपलब्ध, उपकृत, उपयोग, उपनिषद
दुर्/दुस्	बुरा, दुष्ट, कठिन	दुरात्मा, दुराचार, दुरुपयोग, दुस्साहस
नि	नीचे, भीतर	निकृष्ट, नियुक्त, निवारण, निकास
निर्/निस्	निषेध, बाहर	निरपराध, निर्जन, निर्गुण, निस्तेज
परा	उलटा, पीछे	पराधीन, पराभव, परामर्श, पराश्रित
परि	चारों ओर, अतिशय	परिचय, परिभ्रमण, परित्राण, परिधान
प्र	अधिक, आगे	प्रकृति, प्रक्रिया, प्रगट, प्रगति
प्रति	विरुद्ध, सामने	प्रतिक्रिया, प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा, प्रतिशोध
वि	भिन्न, अभाव, विशेष	विभाग, विनाश, विपक्ष, विकार
सम्	अच्छा, पूर्णता, साथ	संवेदना, संतोष, सम्मुख, संवेग
सु	अधिक, अच्छा, सहज	सुरक्षित, सुरुचि, सुगम, सुनिश्चित

2. हिंदी के उपसर्ग

अ/अन	निषेध	असत्य, अज्ञान, अनमना, अनजान
अध/उन	आधा/एक कम	अधजला, अधकचरा, उनचास, उनसठ
औ/अव	हीनता/निषेध	अवतार, अवनति, अवधारणा, औचित्य
कु/क	बुरा	कुढंग, कुरूप, कुचक्र, कुपात्र, कपूत
चौ	चार	चौमासा, चौराहा, चौपाया, चौमंज़िला
दु	बुरा, कम	दुस्तर, दुविधा, दुबला, दुकाल
नि/बिन	निषेध, अभाव	निधड़क, निडर, बिनकहा, बिनदेखा
भर	पूरा, ठीक	भरपूर, भरपाई, भरसक, भरपेट
सु/स	श्रेष्ठता, साथ	सुजन, सुरक्षा, सजग, सगुण

सोचो और बताओ
मूल शब्द तथा उपसर्ग लिखिए।

प्रकाश ________ ____ प्रतिक्रिया ________ ____
सुफल ________ ____ निर्धन ________ ____

3. उर्दू के उपसर्ग

कम	थोड़ा, हीन	कमखर्च, कमअक्ल, कमज़ोर, कमतर
खुश	अच्छा	खुशखबरी, खुशकिस्मत, खुशदिल, खुशनुमा
गैर	निषेध	गैरकानूनी, गैरमौजूदगी, गैरजिम्मेदार, गैरहाज़िर
दर/ना	में/अभाव	दरवेश, दरख्वास्त, नापाक, नाइनसाफ़
बद/बे	बुरा/बिना	बदसूरत, बदतमीज़, बेवजह, बेईमान
ला	बिना, अभाव	लावारिस, लापता, लाचारी, लापरवाही
हम	समान, साथ	हमउम्र, हमशक्ल, हमदर्द, हमराही

4. संस्कृत के अव्यय

अधस्/अधः	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोलिखित, अधोमुख
अंतर्	भीतर	अंतर्देशीय, अंतर्सदन, अंतरात्मा, अंतर्यामी
चिर	बहुत	चिरंजीव, चिरानंद, चिरप्रतीक्षित, चिरकालीन
तिरस्	तुच्छ	तिरस्कृत, तिरस्कार, तिरोभाव, तिरोहित
पुरा	पहले	पुरातन, पुरातत्व, पुरावेत्ता, पुरावशेष
सत्	अच्छा	सत्कार्य, सत्कार, सत्संग, सत्यार्थ
स्व	अपना	स्वाधीन, स्वकथन, स्वधर्म, स्वराज्य

विशेष अंग्रेज़ी के कुछ शब्दांश भी उपसर्गों की भाँति प्रयोग किए जाते हैं।

हेड	प्रधान, मुख्य	हेडमास्टर, हेडक्लर्क
चीफ़	प्रधान, मुख्य	चीफ़ मिनिस्टर, चीफ़ सेक्रेटरी
डिप्टी	उप, सहायक	डिप्टी चीफ़ मिनिस्टर, डिप्टी कमिश्नर
वाइस	सहायक	वाइस प्रिंसिपल, वाइस प्रेसिडेंट
असिस्टेंट	सहायक	असिस्टेंट मैनेजर, असिस्टेंट टीचर
सब	नीचे, अधीन	सबरजिस्ट्रार, सबइंस्पेक्टर

हमने जाना

- उपसर्ग मूल शब्द से पहले लगकर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं।
- उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं—संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, उर्दू के उपसर्ग तथा उपसर्ग की तरह प्रयोग किए जानेवाले संस्कृत के अव्यय।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'खुशखबरी' शब्द में लगा उपसर्ग कौन-सा है?

खु   खुश   खबरी

ख. 'अधजला' शब्द में लगे उपसर्ग 'अध' का क्या अर्थ है?

आधा   अधिक   थोड़ा

2. निम्नांकित शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए।

क. अपशब्द ________ ख. संवेदना ________ ग. निरपराध ________

घ. उज्ज्वल ________ ङ. प्रकृति ________ च. चौमासा ________

3. मूल शब्द → गमन, गति, रुचि, चक्र, मंज़िला, शब्द, सूरत, कार, भ्रमण

उपसर्ग → सत्, अप, सु, प्र, आ, कु, चौ, बद, परि

उपसर्गों तथा मूल शब्दों के सहयोग से नए शब्द बनाइए; जैसे–

क. आ + गमन = आगमन   ख. ________   ग. ________

घ. ________   ङ. ________   च. ________

छ. ________   ज. ________   झ. ________

4. दिए गए उपसर्गों के साथ दो भिन्न मूल शब्द लगाकर नए शब्द बनाइए।

क. अप	शब्द	मान	=	अपशब्द	अपमान
ख. अव	________	________	=	________	________
ग. निर्	________	________	=	________	________
घ. दुर्	________	________	=	________	________
ङ. वि	________	________	=	________	________

5. निम्नांकित गद्यांश में आए उपसर्गयुक्त शब्दों से उपसर्ग और मूल शब्द को अलग रंगों से रेखांकित कीजिए।

राजा ने अनुचर को भेजकर अपने सुपुत्र को बुलवाया तथा उसे असत्य अभिभाषण न करने की सलाह दी। उसे समझाया, यह हमें अवनति की ओर ले जाता है। नियमों के अनुरूप कार्य करो। सजग रहो तथा बेवजह किसी को तंग मत करो।

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. उपसर्ग क्या होते हैं?

ख. हिंदी में प्रचलित उपसर्ग कौन-कौन से हैं?

कार्यकलाप

निम्नांकित शब्दों के साथ 'पुनर्' शब्दांश का प्रयोग कर शब्द बनाइए तथा शब्द-सीढ़ी को पूरा कीजिए।

जागरण, विवाह, मिलन, गमन, विचार, निर्माण, जन्म

जाना-समझा

उपसर्ग शब्दांश होते हैं। उपसर्गों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता।

12 प्रत्यय

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» शेर क्या कर रहा है? ____________________

» शेर को देखकर व्यक्ति की क्या स्थिति हुई? ____________________

» 'गुर्राहट' तथा 'घबराहट' शब्दों में क्या समानता है? ____________________

गुर्राहट तथा घबराहट शब्द 'गुर्रा' तथा 'घबरा' शब्दों में 'आहट' शब्दांश लगाकर बने हैं। ऐसे शब्दांश, जो किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय ऐसे शब्दांश होते हैं, जो किसी शब्द के बाद लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

प्रत्यय के भेद

प्रत्यय के दो भेद होते हैं—कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय। 'कृत् प्रत्यय' धातुओं के अंत में जुड़कर संज्ञा अथवा विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं। 'तद्धित प्रत्यय' संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या अव्यय के अंत में लगकर उनके अर्थ को परिवर्तित करते हैं।

कृत् प्रत्यय के भेद

कृत् प्रत्यय के पाँच भेद होते हैं—1. कर्तृवाचक 2. कर्मवाचक 3. करणवाचक 4. भाववाचक 5. क्रियावाचक।

1. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय

कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय कर्ता का ज्ञान करवानेवाले शब्दों (कर्तृवाचक संज्ञाओं) का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	कर्तृवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	कर्तृवाचक संज्ञाएँ
लूट	एरा	लुटेरा	गा	ऐया	गवैया
लड़	आकू	लड़ाकू	रख	वाला	रखवाला
तैर	आक	तैराक	खेल	आड़ी	खिलाड़ी

2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय

कर्मवाचक कृत् प्रत्यय से बननेवाले शब्दों का वाक्यों में कर्म के रूप में प्रयोग किया जाता है।

मूल शब्द	प्रत्यय	कर्मवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	कर्मवाचक संज्ञाएँ
बिछ	औना	बिछौना	ओढ़	नी	ओढ़नी
गा	ना	गाना	झूल	आ	झूला

3. करणवाचक कृत् प्रत्यय

करणवाचक कृत् प्रत्ययों से बने शब्दों से क्रिया के करने के माध्यम (करण) का पता चलता है।

मूल शब्द	प्रत्यय	करणवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	करणवाचक संज्ञाएँ
रेत	ई	रेती	झाड़	ऊ	झाड़ू
मथ	आनी	मथानी	बेल	न	बेलन

सोचो और बताओ

मूल शब्द और प्रत्यय जोड़कर लिखिए।

भूल + अक्कड़ ____________ होना + हार ____________

गा + अक ____________ दया + आलू ____________

4. भाववाचक कृत् प्रत्यय

भाववाचक कृत् प्रत्यय धातुओं के साथ जुड़कर भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञाएँ
लिख	आई	लिखाई	रिस	आव	रिसाव
रट	अंत	रटंत	पहन	आवा	पहनावा
फेर	आ	फेरा	मिल	आवट	मिलावट
मिल	आप	मिलाप	चिल्ल	आहट	चिल्लाहट

5. क्रियावाचक कृत् प्रत्यय

क्रियावाचक कृत् प्रत्यय से बने शब्द क्रिया के होने का भाव बताते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	क्रियावाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	क्रियावाचक संज्ञाएँ
बोल	आ	बोला	हँस	ते	हँसते
धो	आ	धोया	सो	आ	सोया
टिक	आऊ	टिकाऊ	बह	ता	बहता
देख	कर	देखकर	दौड़	ना	दौड़ना

तद्धित प्रत्यय के भेद

तद्धित प्रत्यय के आठ भेद होते हैं—

1. कर्तृवाचक
2. भाववाचक
3. क्रमवाचक
4. संबंधवाचक
5. बहुवचनवाचक
6. स्त्रीलिंगवाचक
7. लघुतावाचक
8. गुणवाचक

1. कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय

कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कर्तावाचक शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	कर्तृवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	कर्तृवाचक संज्ञाएँ
तेल	ई	तेली	साँप	एरा	सँपेरा
सोना	आर	सुनार	लकड़	हारा	लकड़हारा
रसोई	इया	रसोइया	पत्र	कार	पत्रकार
सब्ज़ी	वाला	सब्ज़ीवाला	जादू	गर	जादूगर
दुकान	दार	दुकानदार	धन	वान	धनवान

2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय

भाववाचक तद्धित प्रत्ययों के योग से बने शब्द भाव का बोध कराते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञाएँ
देव	त्व	देवत्व	बुरा	ई	बुराई
बच्चा	पन	बचपन	लाल	इमा	लालिमा
चतुर	आई	चतुराई	मीठा	आस	मिठास
चिकना	आहट	चिकनाहट	सुंदर	ता	सुंदरता

3. क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय

क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय क्रमवाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	क्रमवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	क्रमवाचक संज्ञाएँ
तीन	गुना	तिगुना	चार	राह	चौराहा
पाँच	वाँ	पाँचवाँ	दो	सरा	दूसरा

4. संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय

संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय संबंधों का बोध करवानेवाले शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	संबंधवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	संबंधवाचक संज्ञाएँ
नाना	हाल	ननिहाल	समाज	इक	सामाजिक
ससुर	आल	ससुराल	मामा	एरा	ममेरा

5. बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय

बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय, किसी शब्द के बाद लगकर बहुवचन वाले शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	बहुवचनवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	बहुवचनवाचक संज्ञाएँ
कथा	एँ	कथाएँ	बिल्ली	इयाँ	बिल्लियाँ
घड़ा	ए	घड़े	लड़की	इयाँ	लड़कियाँ

6. स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय

स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय स्त्रीलिंगवाचक शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	स्त्रीलिंगवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	स्त्रीलिंगवाचक संज्ञाएँ
महोदय	आ	महोदया	सिंह	नी	सिंहनी
कुम्हार	इन	कुम्हारिन	हंस	इनी	हंसिनी
जेठ	आनी	जेठानी	चौधरी	आइन	चौधराइन

सोचो और बताओ
मूल शब्द और प्रत्यय जोड़कर लिखिए।

मोटा + आपा ________ मनुष्य + ता ________
चूहा + इया ________ नौकर + आनी ________

7. लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय

लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय लघुता का बोध करवानेवाले संज्ञा शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	लघुतावाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	लघुतावाचक संज्ञाएँ
डिब्बा	इया	डिबिया	साँप	ओला	सँपोला
छाता	री	छतरी	मुख	ड़ा	मुखड़ा

8. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय

गुणवाचक तद्धित प्रत्यय गुणवाचक विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	गुणवाचक संज्ञाएँ	मूल शब्द	प्रत्यय	गुणवाचक संज्ञाएँ
प्यास	आ	प्यासा	विष	ऐला	विषैला
लोभ	ई	लोभी	सोना	हरा	सुनहरा
शरम	ईला	शरमीला	रूपा	हला	रूपहला
भारत	ईय	भारतीय	बल	वान	बलवान
पेट	ऊ	पेटू	करुणा	मय	करुणामय
श्रद्धा	लु	श्रद्धालु	शक्ति	मान	शक्तिमान

हमने जाना

- प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं, जो किसी शब्द के बाद लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।
- प्रत्यय के दो भेद होते हैं—कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. प्रत्यय के संबंध में सही कथन कौन-सा है?

ये शब्दांश होते हैं। ये शब्द होते हैं। ये किसी शब्द से पहले लगते हैं।

ख. 'कृत् प्रत्यय' किसके अंत में लगते हैं?

धातु के　　　　सर्वनाम के　　　　विशेषण के

2. मूल शब्द तथा प्रत्यय को अलग कीजिए।

क. तैराक ____तैर____ ____आक____　　ख. रटंत ________ ________

ग. लुटेरा ________ ________　　घ. बेलन ________ ________

ङ. रखवाला ________ ________　　च. चिल्लाहट ________ ________

3. वाक्य में आए प्रत्यययुक्त शब्द को रेखांकित कर प्रत्यय लिखिए।

क. रसोइया काम के बोझ से थक गया था। ________

ख. सँपेरा बीन बजाकर साँप को काबू में कर रहा था। ________

ग. दुनियाभर की खबरें इस पत्रकार के पास है। ________

घ. जादूगर जादू के करतब दिखा रहा था। ________

ङ. बरतन से चिकनाहट हटाने में बड़ी देर लगी। ________

4. दिए गए शब्दों में अलग-अलग प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइए।

छल　　　　मिल　　　　सज

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय में क्या अंतर है?

ख. तद्धित प्रत्यय कितने प्रकार के होते हैं?

कार्यकलाप

उर्दू के कुछ प्रत्यय भी हिंदी में प्रचलित हैं। इन प्रत्ययों का प्रयोग कर शब्द बनाइए।

नाक	दार	बाज़	इयत	खोर	मंद
खतरनाक	ईमानदार	पतंगबाज़	इनसानियत	सूदखोर	अक्लमंद

जाना-समझा

कृत् प्रत्ययों से बने शब्द कृदंत और तद्धित प्रत्ययों से बने शब्द तद्धितांत कहलाते हैं।

13 समास

चित्र के आधार पर निम्नांकित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए।

- प्रयोग के लिए शाला ____________ लड़का और लड़की ____________
- परख के लिए नली ____________ श्याम है जो पट ____________

प्रयोगशाला, लड़का-लड़की, परखनली तथा श्यामपट आपस में संबंधित दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके बने शब्द हैं।

> दो या दो से अधिक संबंधित शब्दों को संक्षिप्त करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।

समास भाषा को प्रभावशाली तथा सुगठित बनाते हैं। समास से बने शब्द समस्तपद कहलाते हैं। समस्तपद में दो पद होते हैं, पहला पद पूर्वपद तथा दूसरा पद उत्तरपद कहलाता है। समस्तपद को तोड़ना समास-विग्रह कहलाता है; जैसे—

घुड़सवार	घोड़े पर सवार	घुड़	सवार
↓	↓	↓	↓
समस्तपद	समास-विग्रह	पूर्वपद	उत्तरपद

विशेष समस्तपद में विभक्ति तथा संबंध बतानेवाले शब्दों का लोप हो जाता है।

समास के भेद

समास के प्रमुख छह भेद हैं— 1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास 3. कर्मधारय समास 4. द्विगु समास 5. द्वंद्व समास 6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास में अव्यय के साथ मिलकर कोई शब्द क्रियाविशेषण बन जाता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें प्रथम पद प्रधान होता है; जैसे—

समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अकारण	कारण के बिना
प्रतिदिन	दिन-दिन	सहर्ष	हर्ष के साथ
यथाक्रम	क्रम के अनुसार	अनजाने	बिना जाने

संज्ञा शब्द की पुनरुक्ति वाले शब्द भी अव्ययीभाव समास होते हैं; जैसे—

रातोंरात	रात-ही-रात में	घड़ी-घड़ी	हर एक घड़ी
हाथोंहाथ	हाथ-ही-हाथ में	बातोंबात	बात-ही-बात में

विशेष अव्यय वे शब्द होते हैं, जिनमें लिंग, वचन, पुरुष तथा काल के कारण कोई विकार नहीं आता।

2. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है। इसमें कर्ता तथा संबोधन कारकों को छोड़कर सभी कारकों की विभक्तियों का प्रयोग होता है। जिस कारक की विभक्ति लगी हो, उसीके नाम पर समास का नाम होता है। समस्तपद बनाते समय विभक्तियों का लोप हो जाता है; जैसे—

समास का नाम/विभक्ति	समस्तपद	समास-विग्रह
कर्म तत्पुरुष (को)	कठफोड़वा	काठ को फोड़नेवाला
	वनगमन	वन को गमन
करण तत्पुरुष (से)	मनगढ़ंत	मन से गढ़ा हुआ
	पर्णकुटी	पर्ण से बनी कुटी
संप्रदान तत्पुरुष (के लिए)	प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला
	पूजाघर	पूजा के लिए घर
अपादान तत्पुरुष (से)	देशनिकाला	देश से निकाला
	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
संबंध तत्पुरुष (का/की/के)	गृहस्वामी	गृह का स्वामी
	जलधारा	जल की धारा
अधिकरण तत्पुरुष (में/पर)	वनवास	वन में वास
	आपबीती	आप पर बीती

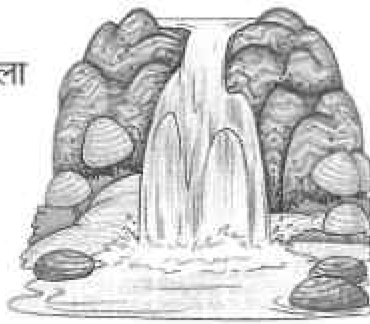

सोचो और बताओ

समास-विग्रह कीजिए तथा सही भेद पर ✓ लगाइए।

धनहीन	____________	अपादान तत्पुरुष	कर्म तत्पुरुष
डाकगाड़ी	____________	अधिकरण तत्पुरुष	संप्रदान तत्पुरुष

3. **कर्मधारय समास**

वह समास, जिसमें उत्तरपद प्रधान होता है तथा पहला पद विशेषण या उपमान होता है एवं दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है, कर्मधारय समास कहलाता है; जैसे—

समस्तपद			समास-विग्रह
कालीमिर्च	काली (विशेषण)	मिर्च (विशेष्य)	काली है जो मिर्च
महाकाव्य	महा (विशेषण)	काव्य (विशेष्य)	महान है जो काव्य
मुख्याध्यापक	मुख्य (विशेषण)	अध्यापक (विशेष्य)	मुख्य है जो अध्यापक
कमलनयन	कमल (उपमान)	नयन (उपमेय)	कमल के समान नयन
चंद्रमुख	चंद्र (उपमान)	मुख (उपमेय)	चंद्र के समान मुख
कनकलता	कनक (उपमान)	लता (उपमेय)	कनक के समान लता

विशेष जिससे किसी की उपमा दी जाए, उसे उपमान कहते हैं और जिसकी उपमा दी जाए, उसे उपमेय कहते हैं।

4. **द्विगु समास**

वह समास, जिसमें पहला पद संख्यावाची हो तथा समस्तपद समूह का ज्ञान करवाए, द्विगु समास कहलाता है; जैसे—

समस्तपद		समास-विग्रह
त्रिफला	त्रि, अर्थात तीन (संख्या)	तीन फलों का समूह
छमाही	छह (संख्या)	छह मासों का समाहार
चौराहा	चौ, अर्थात चार (संख्या)	चार राहों का समाहार
पंचतत्व	पंच, अर्थात पाँच (संख्या)	पाँच तत्वों का समूह
नवग्रह	नव, अर्थात नौ (संख्या)	नौ ग्रहों का समूह

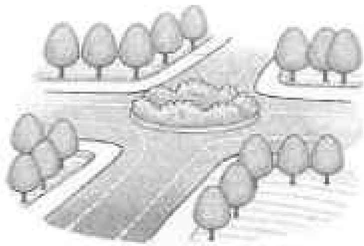

सोचो और बताओ

समास-विग्रह करके समास के नाम पर ✓ लगाइए।

प्रधानमंत्री	________	कर्मधारय	द्विगु
चौमासा	________	कर्मधारय	द्विगु

5. **द्वंद्व समास**

वह समास, जिसके दोनों पद प्रधान होते हैं। समस्तपद में दोनों पदों के बीच योजक चिह्न लगा होता है। विग्रह करने पर योजक चिह्न के स्थान पर या, अथवा, और का प्रयोग होता है, द्वंद्व समास कहलाता है; जैसे—

समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
भला-बुरा	भला और बुरा	छोटा-बड़ा	छोटा अथवा बड़ा
जीवन-मरण	जीवन और मरण	चाय-कॉफ़ी	चाय या कॉफ़ी
रात-दिन	रात और दिन	खट्टा-मीठा	खट्टा और मीठा

6. बहुव्रीहि समास

वह समास, जिसका कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि उसके दोनों पद मिलकर अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी सांकेतिक अर्थ को व्यक्त करते हैं, बहुव्रीहि समास कहलाता है।

समस्तपद	समास-विग्रह (सामान्य अर्थ)	सांकेतिक अर्थ
मुरलीधर	मुरली को धारण करनेवाला, अर्थात	श्रीकृष्ण
श्वेतांबर	श्वेत अंबर हैं जिसके, अर्थात	सरस्वती
एकदंत	एक दाँत है जिसका, अर्थात	गणेश
अंशुमाली	अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी, अर्थात	सूर्य
षडानन	षट् है आनन जिसके, अर्थात	कार्तिकेय
चक्रधर	चक्र को धारण करनेवाला, अर्थात	विष्णु
चतुर्मुख	चार हैं मुख जिसके, अर्थात	ब्रह्मा

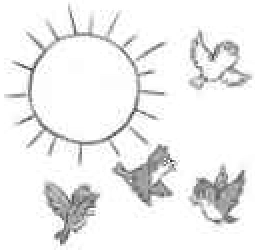

हमने जाना

- दो या दो से अधिक संबंधित शब्दों को संक्षिप्त करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।
- समास के प्रमुख छह भेद हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व तथा बहुव्रीहि।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. अव्ययीभाव समास का उदाहरण कौन-सा है?

आमरण — गगनचुंबी — दाल-भात

ख. 'घर-घर' शब्द किस समास का उदाहरण है?

द्वंद्व समास का — अव्ययीभाव समास का — तत्पुरुष समास का

2. सही मिलान कीजिए।

क. अव्ययीभाव	योजक चिह्न	यथाशीघ्र
ख. तत्पुरुष	संख्या	गगनचुंबी
ग. कर्मधारय	विभक्तियाँ	नीलगाय
घ. द्विगु	सांकेतिक अर्थ	अष्टाध्यायी
ङ. द्वंद्व	क्रियाविशेषण	चक्रपाणि
च. बहुव्रीहि	विशेषण, विशेष्य	भूखा-प्यासा

3. विभक्तियों को ध्यान में रखकर तत्पुरुष समास का नाम लिखिए तथा समस्तपद बनाइए। ध्यान रखें कि समस्तपद बनाते समय विभक्तियों का लोप हो जाता है।

क. वन को गमन ______ वनगमन ______ ______ कर्म तत्पुरुष समास ______

ख. गुण से हीन ______ ______

ग. रोग से ग्रस्त ______ ______

घ. राह के लिए खर्च ______ ______

ङ. जल की धारा ______ ______

च. सिर में दर्द ______ ______

4. प्रथमपद → विशेषण अथवा उपमान → कर्मधारय समास → कालीमिर्च
प्रथमपद → संख्या → द्विगु समास → दोपहर
समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

क. नीलगगन ______ ______

ख. सप्तऋषि ______ ______

ग. तिरंगा ______ ______

घ. नवग्रह ______ ______

ङ. महाराजा ______ ______

च. खड़ीबोली ______ ______

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. बहुव्रीहि समास तथा कर्मधारय समास में क्या अंतर है?

ख. द्विगु समास तथा बहुव्रीहि समास में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

समास का निर्धारण समास के विग्रह के आधार पर करना चाहिए; जैसे—

- कमलनयन कमल के समान नयन कर्मधारय
- दशानन दस है जो आनन कर्मधारय
- घनश्याम घन के समान श्याम कर्मधारय
- कमल जैसे नयन हैं जिसके, अर्थात राम बहुव्रीहि
- दस है आनन जिसके, अर्थात रावण बहुव्रीहि
- घन के समान श्याम हैं जो, अर्थात श्रीकृष्ण बहुव्रीहि

इसी प्रकार कुछ समस्तपद लेकर उनका अलग-अलग तरीके से समास-विग्रह कीजिए।

जाना-समझा

समास में आवश्यकतानुसार संधि भी की जाती है; जैसे—यथार्थ (यथा+अर्थ), क्रोधाग्नि (क्रोध+अग्नि)।

14 संज्ञा

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» रामदीन ने कंधे पर क्या रखा है? ____________

» खेत में लहलहाती फसलें देखकर रामदीन के मन में कौन-सा भाव जागा? ____________

रामदीन—व्यक्ति का नाम, हल—वस्तु का नाम, खेत—स्थान का नाम तथा ख़ुशी—भाव का नाम है।

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के प्रमुख तीन भेद हैं—1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

मान्या ने दिल्ली में टाइटन घड़ी खरीदी।

मान्या विशेष व्यक्ति का, दिल्ली विशेष स्थान का तथा टाइटन घड़ी विशेष वस्तु का नाम है।

किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु के नाम का बोध करवानेवाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों में व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द को रेखांकित कीजिए।

क. कल मेरी मुलाकात विराट कोहली से हुई।

ख. भारत में कई सुंदर स्थान हैं।

ग. मैंने कल टी॰वी॰ पर रामायण धारावाहिक देखा।

2. जातिवाचक संज्ञा

लड़का नदी किनारे साइकिल चला रहा है।

लड़का, नदी तथा साइकिल किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु का बोध न करवाकर उनकी पूरी जाति का बोध करवा रहे हैं, ऐसे शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

सोचो और बताओ	क. शिक्षक हमें कुछ समझा रहे हैं।	______
जातिवाचक संज्ञा शब्द	ख. बाग बहुत बड़ा है।	______
छाँटकर लिखिए।	ग. हंस तैर रहा है।	______

3. भाववाचक संज्ञा

बचपन की मित्रता में अपनापन होता है।

उपर्युक्त वाक्य में बचपन, मित्रता तथा अपनापन शब्द मन के भावों को व्यक्त कर रहे हैं।

किसी गुण, दशा, भाव अथवा विशेषता का बोध करवानेवाले शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे—

- सुख-दुख जीवन में आते-जाते रहते हैं।
- वृद्धावस्था में कमज़ोरी आ ही जाती है।
- सभी से प्रेम करो, घृणा नहीं।
- मुझे सरदी लग रही है।
- दूसरों पर दया करनी चाहिए।
- हमें शीघ्रता से घर पहुँच जाना चाहिए।

संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किए गए हैं—1. समूहवाचक संज्ञा 2. द्रव्यवाचक संज्ञा।

1. समूहवाचक संज्ञा

रुपयों की गड्डी उठाकर वह भीड़ में गुम हो गया।

गड्डी से एक नहीं, बल्कि बहुत-से रुपयों का बोध होता है। इसी प्रकार, भीड़ से एक व्यक्ति का नहीं बल्कि बहुत सारे व्यक्तियों, अर्थात समूह का बोध होता है। टोली, गिरोह, कक्षा, झुंड, मंडली, गट्ठर, परिवार, दल, सेना, सभा आदि शब्द समूह अथवा समुदाय का बोध करवाते हैं।

एक समूह या समुदाय का बोध करवानेवाले शब्द समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

2. द्रव्यवाचक संज्ञा

आजकल दूध, अनाज और सोना सबके भाव बढ़ गए हैं।

उपर्युक्त वाक्य में दूध द्रव्य का, अनाज पदार्थ का तथा सोना धातु का बोध करा रहा है।

किसी द्रव्य, पदार्थ अथवा धातु का बोध करवानेवाले शब्द द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

सोचो और बताओ	क. <u>तेल</u> गरम हो गया।	धातु	द्रव्य
रेखांकित द्रव्यवाचक संज्ञा के	ख. <u>चाँदी</u> का गहना लेकर आना।	धातु	पदार्थ
सही विकल्प पर ✓ लगाइए।	ग. <u>कोयला</u> खदानों से निकलता है।	पदार्थ	द्रव्य

विशेष द्रव्यवाचक तथा समूहवाचक संज्ञा का प्रयोग एकवचन में होता है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

जब व्यक्तिवाचक संज्ञा अपने किसी विशेष गुण-दोष के कारण पूरी जाति का बोध करवाती है, तब वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग होती है; जैसे—श्रवणकुमार हर युग में होते हैं।

यहाँ श्रवणकुमार किसी व्यक्ति का सूचक नहीं, बल्कि सभी माता-पिता की सेवा करनेवालों का बोध करवा रहा है। इसलिए, वह व्यक्ति विशेष का नाम होते हुए भी जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग हुआ है।

अन्य उदाहरण पढ़िए तथा समझिए।

- आज भी सीता-सावित्री की कमी नहीं है।
- एकलव्य ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

जब जातिवाचक संज्ञा किसी जाति का बोध न करवाकर किसी विशेष व्यक्ति का बोध करवाती है, तब वहाँ जातिवाचक संज्ञा व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग होती है।

जैसे—शास्त्रीजी ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया।

शास्त्रीजी जातिवाचक संज्ञा है, परंतु यहाँ लालबहादुर शास्त्री, अर्थात व्यक्ति विशेष के लिए प्रयुक्त हुई है। इसलिए, जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ है।

अन्य उदाहरण पढ़िए तथा समझिए।

- पटेल ने पूरे देश को एकसूत्र में बाँध दिया। (सरदार वल्लभभाई पटेल)
- गांधीजी ने सत्य और अहिंसा को अपनाया। (महात्मा गांधी)
- नेहरूजी स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। (पं० जवाहरलाल नेहरू)

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्दों से होता है।

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना

जातिवाचक	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक	भाववाचक संज्ञा
सदस्य	सदस्यता	मित्र	मित्रता	बूढ़ा	बुढ़ापा
पशु	पशुता/पशुत्व	बच्चा	बचपन	दोस्त	दोस्ती
शिशु	शैशव	दास	दासता	शिक्षक	शिक्षा
कंजूस	कंजूसी	अतिथि	आतिथ्य	भाई	भाईचारा
संस्कृति	संस्कार	इनसान	इनसानियत	पंडित	पंडिताई

सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा बनाना

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
निज	निजत्व	अपना	अपनापन	अहं	अहंकार

विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाना

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
गंभीर	गंभीरता	स्वस्थ	स्वास्थ्य	गंदा	गंदगी
छोटा	छुटपन	लघु	लाघव/लघुता	आलसी	आलस
कृत्रिम	कृत्रिमता	लालची	लालच	लंबा	लंबाई
मीठा	मिठास	मधुर	माधुर्य	दुर्बल	दुर्बलता
उपयोगी	उपयोगिता	अच्छा	अच्छाई	दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाना

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
जीना	जीवन	चुनना	चुनाव	बौखलाना	बौखलाहट
चलना	चाल	पहनना	पहनावा	घबराना	घबराहट
उड़ना	उड़ान	फिसलना	फिसलन	मिलना	मेल
मारना	मार	सजाना	सजावट	मुसकाना	मुसकान
धमकाना	धमकी	छींकना	छींक	दौड़ना	दौड़

अव्यय से भाववाचक संज्ञा बनाना

अव्यय	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	भाववाचक संज्ञा
समीप	समीपता	ऊपर	ऊपरी	बाहर	बाहरी
नीचे	निचाई	मना	मनाही	भीतर	भीतरी

हमने जाना

- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक तथा द्रव्यवाचक संज्ञा, संज्ञा के प्रमुख भेद हैं।
- भाववाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्दों से बनती है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु का नाम कौन-सी संज्ञा होती है?

व्यक्तिवाचक संज्ञा　　जातिवाचक संज्ञा　　भाववाचक संज्ञा

ख. किसी स्थान, प्राणी या वस्तु की संपूर्ण जाति का बोध करवानेवाला शब्द कौन-सी संज्ञा होती है?

भाववाचक संज्ञा　　जातिवाचक संज्ञा　　व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. निम्नांकित तालिका से शब्द लेकर व्यक्तिवाचक संज्ञायुक्त वाक्य बनाइए।

व्यक्ति	प्रेमचंद	मैरी कॉम	अनुष्का शर्मा	सचिन तेंदुलकर
वस्तु	बाटा जूते	अमूल मक्खन	एशियन पेंट्स	टाइटन घड़ी
स्थान	हैदराबाद	राजस्थान	कनाडा	पेरिस

क. ______________________________

ख. ____________________

ग. ____________________

घ. ____________________

ङ. ____________________

3. विशेष नाम देकर जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा बना सकते हैं।
निम्नांकित रंगीन जातिवाचक संज्ञा शब्द के लिए व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द लिखिए।

क. गेट बहुत सुंदर है। ____ इंडिया गेट बहुत सुंदर है।

ख. मुझे कार लेनी है। ____________

ग. माली पौधे लगा रहा है। ____________

घ. अस्पताल के बाहर लाइन लगी है। ____________

ङ. चिड़िया घोंसला बना रही है। ____________

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाकर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. इस विषय पर ________ से विचार करो। (गंभीर)

ख. लगता है यह पक्षी अपनी ________ भूल चुका है। (उड़ना)

ग. मानव जीवन का आधार अच्छी ________ है। (शिक्षक)

घ. बच्चे को देखकर मुझे भी अपना ________ याद आ गया। (बच्चा)

ङ. तुमने घर की बहुत अच्छी ________ की है। (सजाना)

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. संज्ञा की परिभाषा देते हुए उसके भेदों के नाम लिखिए।

ख. द्रव्यवाचक संज्ञा तथा समूहवाचक संज्ञा में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

अपनी पाठ्यपुस्तक के अब तक के पढ़े हुए पाठों में आए व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा शब्दों की एक सूची बनाइए।

जाना-समझा

भाववाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग बहुवचन में करने पर वे जातिवाचक संज्ञा बन जाते हैं; जैसे—

अपनी बुराई को दूर करो। (भाववाचक संज्ञा)

अपनी बुराइयाँ दूर करो। (पूरी जाति का बोध करवाने के कारण जातिवाचक संज्ञा है।)

15 लिंग

चित्र के आधार पर सही विकल्प पर ✓ लगाइए।

- चित्र में स्त्रियों ने क्या पहन रखा है? चुनरी साड़ी
- गुब्बारेवाले ने क्या पहन रखा है? पतलून-कमीज़ धोती-कुरता
- कितने पुरुषों ने गमछा लिया है? दो तीन

धोती, कमीज़, साड़ी, चुनरी जैसे शब्द स्त्री जाति का बोध करवा रहे हैं। कुरता, गमछा, पतलून जैसे शब्द पुरुष जाति का बोध करवा रहे हैं।

स्त्री या पुरुष जाति का बोध करवानेवाले शब्द रूप लिंग कहलाते हैं।

लिंग के भेद

लिंग के प्रमुख दो भेद हैं—1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग। पुरुष जाति का बोध करवानेवाले शब्द पुल्लिंग तथा स्त्री जाति का बोध करवानेवाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

लिंग की पहचान

पुल्लिंग शब्दों की पहचान के कुछ नियम निम्नांकित हैं—

- समुद्र, पर्वत, देश, अनाज, वनस्पतियाँ, रत्न, धातु, समय, दिन, अधिकांशतः पुल्लिंग होते हैं; जैसे—

समुद्रों/पर्वतों/देशों के नाम	हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, हिमालय, भारत, अमेरिका इत्यादि।
अनाजों/वनस्पतियों के नाम	चना, गेहूँ, चावल, जौ, पीपल, बरगद, शीशम, नीम, जामुन इत्यादि।
रत्नों/धातुओं के नाम	मोती, हीरा, मूँगा, पुखराज, पन्ना, नीलम, ताँबा, सोना इत्यादि।
समय/दिन के नाम	घंटा, मिनट, दिन, महीना, वर्ष, मंगलवार, सोमवार, शुक्रवार इत्यादि।

- विशिष्ट स्थानों के नाम पुस्तकालय, मंत्रालय, विद्यालय, रसोईघर, शयनकक्ष, परीक्षा भवन इत्यादि।

- मोटी, भारी, बेडौल वस्तुओं के नाम लोटा, रस्सा, मटका, तंबू, पत्थर इत्यादि।
- द्रव्यवाचक संज्ञा तेल, पानी, पेट्रोल, घी, दूध, शरबत, दही इत्यादि।

स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान

- नदियों, झीलों, बोलियों, भाषाओं, लिपियों, खाने की वस्तुओं, शरीर के कुछ अंगों के नाम अधिकांशतः स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—

नदियों/झीलों के नाम	गंगा, यमुना, कृष्णा, ताप्ती, कावेरी, गोदावरी, सांभर, चिल्का, डल इत्यादि।
बोलियों/भाषाओं के नाम	मैथिली, अवधी, बुंदेली, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, हिंदी, अंग्रेज़ी, पंजाबी इत्यादि।
लिपियों के नाम	देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी, फ़ारसी इत्यादि।
खाने की कुछ वस्तुएँ	पूरी, खीर, सब्ज़ी, इडली, चटनी, खिचड़ी, रोटी, दाल इत्यादि।
आकारांत भाववाचक संज्ञाएँ	कृपा, प्रतिमा, दया, माया, क्षमा, आभा, करुणा इत्यादि।
इकारांत तथा ईकारांत शब्द	संधि, जाति, अग्नि, गति, गरमी, सरदी, चालाकी इत्यादि।

प्रत्ययों के आधार पर लिंग-निर्णय

प्रत्यय	पुल्लिंग	प्रत्यय	स्त्रीलिंग
आ/अक्कड़	घेरा, फेरा, घुमक्कड़	आई	चटाई, पढ़ाई, बड़ाई, मिठाई
आक/आका/आकू	तैराक, लड़ाका, पढ़ाकू	आनी	नौकरानी, देवरानी, मथानी
आव/आवा	लगाव, चुनाव, पहनावा	आवट	बनावट, दिखावट, लिखावट
आर	सुनार, व्यापार, लोहार	आस	प्यास, मिठास, खटास
एरा	सँपेरा, अँधेरा, ममेरा	आहट	मुसकराहट, घबराहट, गुर्राहट
दाता	मतदाता, जन्मदाता, आश्रयदाता	इमा	महिमा, कालिमा, नीलिमा
पा	बुढ़ापा, पुजापा, मोटापा	इया	गुड़िया, लुटिया, चुहिया
पन	अपनापन, बड़प्पन, बचपन	क/ई	बैठक, गरमी, मज़दूरी
वान/वाला	बलवान, धनवान, सब्ज़ीवाला	त/ता/ती	रंगत, प्रसन्नता, गिनती

लिंग परिवर्तन के नियम

अंत में 'आ' लगाकर — **'आ' को 'ई' करके**

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
शिष्य	शिष्या	घोड़ा	घोड़ी
महोदय	महोदया	नाना	नानी
छात्र	छात्रा	बकरा	बकरी
अध्यक्ष	अध्यक्षा	मुरगा	मुरगी
वृद्ध	वृद्धा	बच्चा	बच्ची

अंत में 'इन' लगाकर		अंत में 'आइन' लगाकर	
मालिक	मालकिन	चौधरी	चौधराइन
पापी	पापिन	लाला	ललाइन
धोबी	धोबिन	ठाकुर	ठकुराइन
पुजारी	पुजारिन	पंडित	पंडिताइन
कुम्हार	कुम्हारिन	गुरु	गुरुआइन

अंत में 'नी' लगाकर		अंतिम 'अ' को 'आनी' करके	
भील	भीलनी	सेठ	सेठानी
हंस	हंसिनी	इंद्र	इंद्राणी
जाट	जाटनी	रुद्र	रुद्राणी
रीछ	रीछनी	जेठ	जेठानी
मोर	मोरनी	नौकर	नौकरानी

अंतिम 'आ' को 'इया' करके		अंत में 'अक' को 'इका' करके	
बेटा	बिटिया	नायक	नायिका
गुड्डा	गुड़िया	याचक	याचिका
चिड़ा	चिड़िया	अध्यापक	अध्यापिका
लोटा	लुटिया	संरक्षक	संरक्षिका
चूहा	चुहिया	चालक	चालिका

अंत में 'वान' को 'वती' करके		अंत में 'मान' को 'मती' करके	
रूपवान	रूपवती	श्रीमान	श्रीमती
गुणवान	गुणवती	बुद्धिमान	बुद्धिमती
भाग्यवान	भाग्यवती	आयुष्मान	आयुष्मती
बलवान	बलवती	शक्तिमान	शक्तिमती

'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर		अंत में 'इनी' लगाकर	
नेता	नेत्री	योगी	योगिनी
दाता	दात्री	यशस्वी	यशस्विनी
विधाता	विधात्री	अभिमान	अभिमानिनी
वक्ता	वक्त्री	एकाकी	एकाकिनी

भिन्न रूपवाले शब्द

हिंदी भाषा में बहुत-से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने पर उनका रूप पूर्णतया परिवर्तित हो जाता है; जैसे—

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बादशाह	बेगम	आदमी	औरत
पुरुष	स्त्री	कवि	कवयित्री
साधु	साध्वी	पति	पत्नी

नित्य स्त्रीलिंग शब्द तथा नित्य पुल्लिंग शब्द

कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो सदा स्त्रीलिंग रूप में प्रयोग किए जाते हैं; जैसे—छिपकली, मक्खी, मछली, गिलहरी, चील, कोयल, भेड़, लोमड़ी, बतख, तितली, मैना इत्यादि। इनका पुल्लिंग रूप बनाते समय इनके पहले 'नर' शब्द लगाते हैं; जैसे—नर मक्खी, नर तितली इत्यादि।

कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो सदा पुल्लिंग रूप में प्रयोग किए जाते हैं; जैसे—कौआ, तोता, मगरमच्छ, उल्लू, चीता, खरगोश, भालू, खटमल, भेड़िया इत्यादि। इनका स्त्रीलिंग बनाते समय इनके पहले 'मादा' शब्द का प्रयोग किया जाता है; जैसे—मादा खरगोश, मादा भेड़िया इत्यादि।

उभयलिंगी शब्द

कुछ पदसूचक शब्दों का प्रयोग दोनों लिंगों में समान रूप से होता है; जैसे—राजदूत, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, मैनेजर, सभापति, इंजीनियर, सचिव, पार्षद इत्यादि। ऐसे शब्द उभयलिंगी कहलाते हैं। इनके लिंग का परिचय क्रिया या विशेषण शब्दों से होता है।

जैसे—राज्यपाल आए हैं। (पुल्लिंग) राज्यपाल आई हैं। (स्त्रीलिंग)

हमने जाना

- जो शब्द रूप स्त्री अथवा पुरुष जाति का बोध करवाते हैं, वे लिंग कहलाते हैं।
- पुल्लिंग शब्द पुरुष जाति का तथा स्त्रीलिंग शब्द स्त्री जाति का बोध करवाते हैं।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. किनके नाम अधिकांशतः पुल्लिंग होते हैं?

पर्वतों के नदियों के भाषाओं के

ख. किस प्रत्यय से बने शब्द स्त्रीलिंग होते हैं?

एरा पन आवट

2. रंगीन शब्दों के पुल्लिंग रूप लिखकर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. कुम्हारिन और ________ ने मिलकर घड़े बनाए।

ख. मुरगी ने कुछ दाने ________ के लिए रख दिए।

ग. कवयित्री ने प्रसिद्ध ______ की रचनाएँ पढ़ीं।

घ. भीलनी ने खट्टे-मीठे बेर इकट्ठे कर ______ को दिए।

ङ. श्रीमती को ______ की कोई बात पसंद नहीं आई।

3. रंगीन शब्दों का लिंग परिवर्तित करके वाक्यों को पुन: लिखिए।

क. नौकर सुबह-शाम भोजन पकाने लगा। ______

ख. अध्यापक ने छात्र को पाठ का सार समझाया। ______

ग. गुणवती बहू पाकर माता-पिता धन्य हो गए। ______

घ. पंडित ने पूजा की सामग्री एकत्र की। ______

ङ. गुड्डा रूठकर कमरे में चला गया। ______

4. दिए गए प्रत्ययों से शब्द बनाइए तथा वाक्य-प्रयोग द्वारा उनके लिंग स्पष्ट कीजिए।

क. आवा ______ ______

ख. अक ______ ______

ग. आवट ______ ______

घ. इमा ______ ______

ङ. आनी ______ ______

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग शब्दों में अंतर बताइए।

ख. किन प्रत्ययों के प्रयोग से स्त्रीलिंग शब्द बनाए जा सकते हैं? कुछ उदाहरण लिखिए।

कार्यकलाप

प्रत्ययों का प्रयोग कर पाठ से इतर नए शब्द बनाइए।

एरा: सवेरा, ममेरा, अँधेरा, बसेरा

सभी पुल्लिंग

इया: खटिया, बछिया, लुटिया, बिंदिया

सभी स्त्रीलिंग

जाना-समझा

इ, ई तथा ऋ को छोड़कर वर्णमाला के सभी वर्ण पुल्लिंग होते हैं।

16 वचन

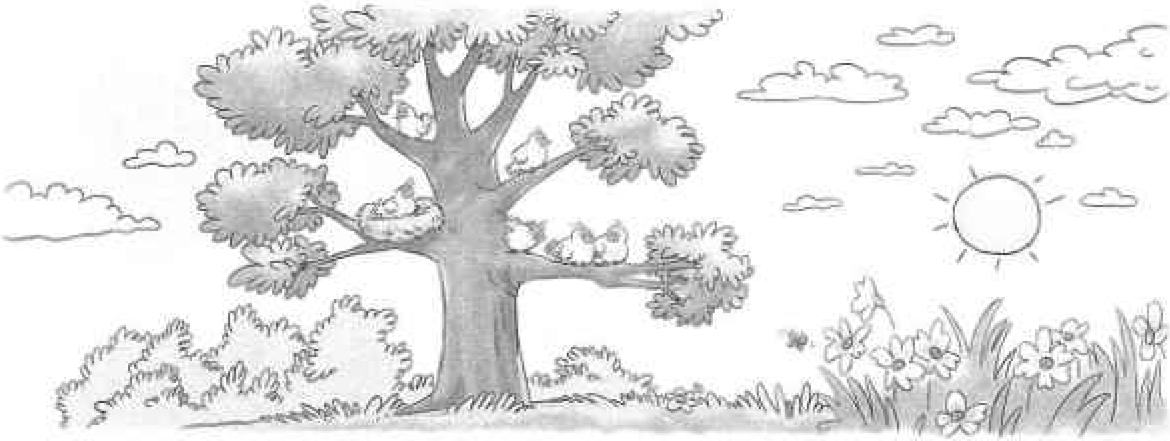

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» चित्र में कितने पेड़ और कितने घोंसले हैं?	एक	अनेक
» पेड़ की शाखाएँ कितनी हैं?	एक	अनेक
» पेड़ पर कितनी चिड़ियाँ हैं?	एक	अनेक

चित्र में 'पेड़' और 'घोंसला' एक है, परंतु 'शाखाएँ' और 'चिड़ियाँ' अनेक हैं। एक तथा अनेक का बोध करवानेवाले शब्द ही वचन कहलाते हैं।

> संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा क्रिया के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं।

वचन के भेद

वचन के प्रमुख दो भेद हैं—1. एकवचन 2. बहुवचन।

1. **एकवचन**
   जिस विकारी शब्द से किसी वस्तु के एक होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—बच्चा बिल्ली को दूध पिला रहा है।

2. **बहुवचन**
   जिस विकारी शब्द से किसी वस्तु के एक से अधिक होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—बच्चे बिल्लियों को दूध पिला रहे हैं।

वचन की पहचान

वचन की पहचान वाक्य में आए संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया शब्दों से होती है।

संज्ञा से	पेड़ की बड़ी शाखा है।	(एकवचन)	क्रिया से	पेड़ से पत्ता टूट गया।	(एकवचन)
	पेड़ की छोटी शाखाएँ हैं।	(बहुवचन)		पेड़ से पत्ते टूट गए।	(बहुवचन)
सर्वनाम	वह इधर देख रहा है।	(एकवचन)			
	वे इधर देख रहे हैं।	(बहुवचन)			

सोचो और बताओ
रंगीन शब्द एकवचन है या बहुवचन?

क. शरीर में कई अंग होते हैं। ____________

ख. उनके घर के पास पेट्रोल पम्प है। ____________

ग. नेतागण जगह-जगह पर भाषण दे रहे हैं। ____________

वचन-परिवर्तन

एकवचन का बहुवचन में परिवर्तन तथा बहुवचन का एकवचन में परिवर्तन वचन-परिवर्तन कहलाता है। एकवचन से बहुवचन में परिवर्तन के कुछ नियम निम्नांकित हैं—

पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'आ' को 'ए' करके

एकवचन	**बहुवचन**
हीरा	हीरे
घंटा	घंटे
किस्सा	किस्से
बकरा	बकरे
गन्ना	गन्ने

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'अ' को 'एँ' करके

एकवचन	**बहुवचन**
मेज़	मेज़ें
बोतल	बोतलें
साँस	साँसें
आँख	आँखें
दीवार	दीवारें

आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में एँ' लगाकर

पाठशाला	पाठशालाएँ
महिला	महिलाएँ
दवा	दवाएँ
कविता	कविताएँ
हवा	हवाएँ
भुजा	भुजाएँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'ई' को 'इयाँ' करके

रानी	रानियाँ
थाली	थालियाँ
दवाई	दवाइयाँ
पत्नी	पत्नियाँ
मक्खी	मक्खियाँ
टोपी	टोपियाँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'या' को 'याँ' करके

डिबिया	डिबियाँ
चुहिया	चुहियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ

इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' जोड़कर

लिपि	लिपियाँ
जाति	जातियाँ
शक्ति	शक्तियाँ
तिथि	तिथियाँ
पंक्ति	पंक्तियाँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'उ', 'ऊ' अथवा 'औ' के साथ 'एँ' लगाकर तथा 'ऊ' को 'उ' करके

वस्तु	वस्तुएँ	बहू	बहुएँ
गौ	गौएँ	धातु	धातुएँ
ऋतु	ऋतुएँ	लू	लुएँ

सोचो और बताओ
बहुवचन रूप लिखिए।

क. झंडा ________ ख. कन्या ________
ग. पूरी ________ घ. दवाई ________
ङ. नीति ________ च. बिटिया ________

वृंद, गण, जन, वर्ग, दल, लोग लगाकर

ऋषि	ऋषिवृंद	छात्र	छात्रगण
प्रिय	प्रियजन	पाठक	पाठकवर्ग
नर्तक	नर्तकदल	हम	हमलोग

सदा एकवचन में प्रयुक्त होनेवाले शब्द

द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द, भाववाचक संज्ञा शब्द तथा समूहवाचक संज्ञा शब्द सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

- दूध उबल रहा है।
- उसके चेहरे से उसकी खुशी छलक रही थी।
- सड़क पर भीड़ जमा है।

सोचो और बताओ
सही मिलान कीजिए।

क. द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द	टोली, कक्षा, मंडली, दल, जनता
ख. भाववाचक संज्ञा शब्द	पानी, तेल, घी, सोना, चाँदी
ग. समूहवाचक संज्ञा शब्द	बुढ़ापा, कंजूसी, मित्रता, ईमानदारी

सदा बहुवचन में प्रयुक्त होनेवाले शब्द

लोग, बाल, हस्ताक्षर, होश, दर्शन, दाम, आँसू, ओठ, प्राण इत्यादि कुछ ऐसे शब्द हैं, जो सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

- लोग अपने-अपने घर चले गए।
- उसके बाल सफ़ेद हो गए थे।
- साँप को देखकर मेरे होश उड़ गए।
- सब्जियों के दाम आसमान छू रहे हैं।

विशेष संबंधवाचक संज्ञा शब्द; जैसे—चाचा, दादा, मामा, काका इत्यादि दोनों वचनों में समान रहते हैं।

एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग

एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग निम्नांकित स्थितियों में किया जाता है।

किसी के प्रति आदर प्रकट करने के लिए

- डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम सर्वप्रिय नेता थे।
- मुझे अपने अध्यापक श्री पी० सी० सिन्हा बहुत अच्छे लगते हैं।

अपना बड़प्पन दिखाने के लिए

- हम किसी से कम नहीं हैं।
- हमसे अच्छा कारीगर आपको कहीं नहीं मिलेगा।

कारक-चिह्नों के साथ एकवचन का बहुवचन रूप

कारक-चिह्नों का प्रयोग करके भी एकवचन का बहुवचन रूप बनाया जा सकता है। कारक-चिह्नों के साथ बहुवचन रूप बनाते समय शब्दों के साथ ओं या यों जुड़ जाता है; जैसे–

- गुब्बारों को हवा में उड़ा दो।
- बच्चों ने फलदार पौधे लगाए।
- किताबों पर कुछ मत लिखा करो।
- उसने दस आदमियों के लिए खाना बनाया।

हमने जाना

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा क्रिया के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं।
- एकवचन से एक होने का तथा बहुवचन से अनेक होने का बोध होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. 'माँ ने बच्चों को आँख दिखाई।' वाक्य में 'आँख' का बहुवचन रूप क्या होगा?

   आँख　　　　आँखें　　　　आँखों

   ख. 'दवाई' का बहुवचन रूप क्या होगा?

   दवाई　　　　दवाइयाँ　　　　दवाईयाँ

2. **रंगीन शब्द एकवचन हैं या बहुवचन?**

   क. शिक्षक को देखते ही सारी कक्षा चुप हो गई। ____________

   ख. सोने का भाव बढ़ गया है। ____________

   ग. मित्रता सबसे बड़ी दौलत है। ____________

   घ. नल से लगातार पानी बह रहा है। ____________

   ङ. मैंने अपने प्रिय खिलाड़ी के हस्ताक्षर लिए हैं। ____________

3. रंगीन शब्दों के वचन परिवर्तित करके वाक्यों को पुनः लिखिए।

क. मिस्त्री ने रातोंरात दीवार खड़ी कर दी। ____________________

ख. कल से पाठशाला बंद रहेगी। ____________________

ग. कूड़े पर मक्खी भिनभिना रही है। ____________________

घ. प्रातः होते ही चिड़िया चहचहाने लगी। ____________________

ङ. छात्र पढ़ने लगे। ____________________

4. कारक-चिह्नों के साथ बहुवचन रूप बनाकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. घर — सभी अपने घरों में छिप गए।

ख. फूल ____________________

ग. गरीब ____________________

घ. लेखक ____________________

ङ. नौकर ____________________

5. सही मिलान कीजिए।

क. दूध उबल रहा है।	सदा एकवचन	ख. पेट्रोल गिर गया।
ग. लोहा मज़बूत धातु है।		घ. आपसे मिलकर खुशी हुई।
ङ. लोग ध्यान से देखने लगे।	सदा बहुवचन	च. इसका क्या दाम है?
छ. उसे आज ही होश आया।		ज. आपके दर्शन करने आया हूँ।

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग कब होता है?

ख. वचन की पहचान किस प्रकार से की जा सकती है?

कार्यकलाप

प्रत्येक विद्यार्थी अपने सहपाठी को दस वाक्य लिखकर देगा तथा वचन की पहचान वाक्य में आए संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया शब्दों से करने के लिए कहेगा।

जाना-समझा

'प्रत्येक', 'हर' तथा 'हर एक' का प्रयोग सदा एकवचन में होता है।

17 कारक

चित्र देखकर चित्र-वर्णन पूरा कीजिए।

एक दिन भालू —— एक पेड़ —— लटका हुआ शहद —— छत्ता देखा। उसने पंजे —— छत्ते —— छेद कर दिया। शहद पीने —— जैसे ही वह छत्ते —— ओर बढ़ा, वैसे ही मधुमक्खियाँ चिल्लाईं। —— ठहर! अभी मज़ा चखाती हैं। वे भालू —— झपट पड़ीं और उसे डंक मारने लगीं।

उपर्युक्त वाक्यों में रिक्त स्थानों में आए चिह्न क्रमशः ने, पर, का, से, में, के लिए, की, अरे, पर हैं। ये चिह्न विभक्तियाँ कहलाते हैं।

संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ विभक्तियाँ लगाकर जो रूप बनता है, उसे कारक कहते हैं; जैसे—

संज्ञा/सर्वनाम	विभक्ति	कारक
भालू/उस	ने	भालू ने/उसने

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य में आए अन्य शब्दों से उसका संबंध स्पष्ट हो, उसे कारक कहते हैं।

कारक के भेद

कारक के प्रमुख आठ भेद हैं—

कारक	विभक्ति चिह्न	कारक	विभक्ति चिह्न
कर्ता	ने	अपादान	से (अलग होने का अर्थ)
कर्म	को	संबंध	का/के/की, रा/रे/री, ना/ने/नी
करण	से	अधिकरण	में, पर
संप्रदान	के लिए, को	संबोधन	हे, अरे

कर्ता कारक (विभक्ति 'ने')

वाक्य में क्रिया को करनेवाला कर्ता कारक होता है। कर्ता कारक के साथ ने विभक्ति लगी होती है।

▪ बच्चे ने मिठाई खाई।	बच्चे ने	कर्ता कारक
▪ कुम्हार ने दीये बनाए।	कुम्हार ने	कर्ता कारक
▪ मानस ने आम खाया।	मानस ने	कर्ता कारक

विभक्ति न लगी होने की स्थिति में किसने या कौन शब्द लगाकर प्रश्न करें।

▪ जादूगर जादू दिखाता है।	कौन जादू दिखाता है?	जादूगर → कर्ता कारक
▪ माँ हलवा बनाती हैं।	कौन हलवा बनाती हैं?	माँ → कर्ता कारक

सोचो और बताओ

पहचान के शब्दों द्वारा कर्ता कारक पहचानकर लिखिए।

क. सुनयना ने पकौड़े तले। ____________

ख. बच्चा जन्मदिन का केक काट रहा है। ____________

ग. मौसी सुंदर फ्रॉक लाई है। ____________

कर्म कारक (विभक्ति 'को')

वाक्य में क्रिया का फल (प्रभाव) जिसपर पड़ता है, वह कर्म कारक होता है।

राम ने रावण को मारा।

राम (कर्ता), मारा (क्रिया)

'मारा' क्रिया का प्रभाव पड़ रहा है 'रावण' पर। 'रावण को' कर्म कारक है।

कर्म कारक में प्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ 'को' विभक्ति लगाते हैं।

- दुकानदार ने बच्चों को सामान दिया।
- साइकिल चलाते समय बच्चे को चोट लग गई।
- फोन करके मिस्त्री को बुला लो।

अप्राणिवाचक संज्ञाओं में कर्म की पहचान क्या या किसे प्रश्न द्वारा होती है। अप्राणिवाचक संज्ञाओं में विभक्ति नहीं लगती।

- कुएँ से पानी निकालो।

  क्या निकालो? पानी → कर्म कारक

  किसे निकालो? पानी को → कर्म कारक

- पूर्णिमा की रात में चाँद देखो।

  क्या देखो? चाँद → कर्म कारक

  किसे देखो? चाँद को → कर्म कारक

सोचो और बताओ

कर्म कारक को रेखांकित कीजिए।

क. शिक्षक ने छात्रों को बुलाया। ख. दूध से मलाई निकालो।

ग. दीवार पर फुटबॉल मारो। घ. सब्जीवाले को पैसे दे दो।

करण कारक (विभक्ति 'से')

करण कारक वह माध्यम अथवा साधन होता है, जिसके द्‌वारा कर्ता कोई काम करता है। करण कारक के साथ से विभक्ति लगी होती है।

किससे या किसके द्‌वारा प्रश्न करके करण कारक की पहचान होती है।

- रमा ने झाड़ू से सफ़ाई की।
  किससे सफ़ाई की? झाड़ू से → करण कारक
- यह रचना तुलसीदास के द्‌वारा लिखी गई है।
  किसके द्‌वारा लिखी गई है? तुलसीदास के द्‌वारा → करण कारक

सोचो और बताओ

प्रश्न के द्‌वारा करण कारक की पहचान करके लिखिए।

क. वह चम्मच से सूप पीने लगा। किससे सूप पीने लगा? ____________

ख. मैंने साबुन से कपड़े धोए। किससे कपड़े धोए? ____________

ग. मैं बस के द्‌वारा आऊँगा। किसके द्‌वारा आऊँगा? ____________

संप्रदान कारक (विभक्ति 'के लिए', 'को')

वाक्य में कर्ता द्‌वारा जिसके लिए कुछ किया जाता है अथवा जिसे कुछ दिया जाता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। के लिए तथा को विभक्ति द्‌वारा अथवा किसके लिए अथवा किसको लगाकर संप्रदान कारक की पहचान की जा सकती है।

- बच्चे बगीचे के लिए पौधे लाए।
  किसके लिए पौधे लाए? बगीचे के लिए → संप्रदान कारक
- स्त्री ने भिखारी को भोजन दिया।
  किसको भोजन दिया? भिखारी को → संप्रदान कारक

सोचो और बताओ

संप्रदान कारक की पहचान करके लिखिए।

क. भूकंप पीड़ितों के लिए राहत सामग्री दो। ____________

ख. मुवक्किल ने वकील को फाइल दी। ____________

ग. सभी पिकनिक के लिए तैयार हो जाओ। ____________

घ. माँ मेरी सहेलियों के लिए उपहार लाईं। ____________

विशेष संप्रदान तथा कर्म कारक दोनों में 'को' विभक्ति लगी होती है। जहाँ कुछ देने का भाव हो, वहाँ संप्रदान कारक होता है। अन्य क्रियाओं में 'को' विभक्ति कर्म कारक की बोधक होती है।

अपादान कारक ('से')

अपादान कारक में संज्ञा या सर्वनाम रूप से अलग होने का भाव प्रकट होता है। तुलना करने, डरने, सीखने, लजाने, दूरी, घृणा इत्यादि के भाव का बोध करवाने के लिए भी अपादान कारक का प्रयोग होता है। से विभक्ति तथा कहाँ से अथवा किससे प्रश्न द्‌वारा इसकी पहचान की जा सकती है।

- वह तुमसे अच्छा चित्रकार है। (तुलना का भाव)
- मुझे अंधकार से डर लगता है। (डर का भाव)

- मैं अपने भाई से ड्राइंग सीख रहा हूँ। (सीखने का भाव)
- मैं अपने व्यवहार से लज्जित हूँ। (लजाने का भाव)
- मेरे घर से तुम्हारा घर चार किलोमीटर होगा। (दूरी का बोध)
- कभी भी निर्धनों से घृणा मत करो। (घृणा का भाव)
- ट्रक से सामान गिर गया। (अलग होने का भाव)

विशेष करण कारक तथा अपादान कारक दोनों में 'से' विभक्ति का प्रयोग होता है। करण में 'से' साधन के रूप में होता है तथा अपादान कारक में 'से' अलग होने का भाव बताता है।

संबंध कारक (विभक्ति 'का/के/की, रा/रे/री, ना/ने/नी')

संबंध कारक, संज्ञा अथवा सर्वनाम का संबंध वाक्य में आए अन्य संज्ञा अथवा सर्वनाम से स्पष्ट करता है। संबंध कारक की पहचान वाक्य में आई विभक्तियों का/के/की, रा/रे/री, ना/ने/नी अथवा किसका, किसके तथा किसकी प्रश्नों द्वारा की जा सकती है।

- भारत की धरती हरी-भरी है। (विभक्ति की) भारत की → संबंध कारक
- अराधना का घर पास है।
  किसका घर पास है? अराधना का → संबंध कारक
- भाई के दोस्त खेल रहे हैं।
  किसके दोस्त खेल रहे हैं? भाई के → संबंध कारक

सोचो और बताओ
संबंध कारक को पहचानकर रेखांकित कीजिए।

क. हमारे शिक्षक नहीं आएँगे। ख. अपनी पुस्तकें सँभालकर रखो।
ग. ईमानदारी की जीत होती है। घ. हमारा कुत्ता खो गया।

अधिकरण कारक (विभक्ति 'में', 'पर')

अधिकरण कारक क्रिया के आधार, समय तथा स्थान का बोध करवाते हैं। में, पर विभक्तियों अथवा कहाँ या किसमें प्रश्न द्वारा अधिकरण कारक की पहचान की जा सकती है।

- विद्यार्थी धूप में बैठे हैं।
  कहाँ बैठे हैं? धूप में → अधिकरण कारक
- सारे फल धोकर मेज़ पर रख दो। (आधार)
  कहाँ रख दो? मेज़ पर → अधिकरण कारक
- जगह-जगह काँटे बिखरे हैं। (स्थान)
  कहाँ बिखरे हैं? जगह-जगह → अधिकरण कारक
- मार्च में परीक्षाएँ होंगी। (समय)
  किसमें परीक्षाएँ होंगी? मार्च में → अधिकरण कारक

कुछ अन्य उदाहरण समझें।

- मेले में साथ चलेंगे।
- छत पर मत कूदो।
- पानी में बर्फ़ डाल दो।

संबोधन कारक (विभक्ति 'हे', 'अरे')

संबोधन कारक किसी को बुलाने तथा पुकारने का बोध करवाता है। 'हे', 'अरे' विभक्तियों अथवा संबोधन के बाद लगे '!' चिह्न द्वारा इसकी पहचान की जा सकती है।

- हे भगवान! तुम कब तक मेरी परीक्षा लोगे।
- अरे भाई! मेरी भी कुछ बात सुनो।

हमने जाना

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य में आए अन्य शब्दों से उसका संबंध स्पष्ट हो, उसे कारक कहते हैं।
- कारक के प्रमुख आठ भेद हैं—कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'पेड़ों से पत्ते झड़ गए।' वाक्य में कौन-सा कारक है?

करण कारक   अपादान कारक   संबंध कारक

ख. 'वह बच्चों के लिए टॉफ़ियाँ लाई।' वाक्य में कौन-सा कारक है?

कर्म कारक   संप्रदान कारक   संबंध कारक

2. दिए गए वाक्यों में आए कारकों को रेखांकित कर उनके भेदों के नाम लिखिए।

क. मानस ने परीक्षा पास कर ली। ______________

ख. गाजर मत काटो। ______________

ग. रंगों से रंगोली बनाकर घर सजाओ। ______________

घ. सभी पक्षी घोंसले से उड़ गए। ______________

ङ. पिताजी के लिए गरमा-गरम पकौड़े बनाओ। ______________

च. खिड़की के परदे बदल दो। ______________

छ. पानी में रंग-बिरंगी मछलियाँ तैर रही हैं। ______________

ज. अरे सुनो! इतनी सुबह कहाँ जा रहे हो? ______________

3. रिक्त स्थानों में कारक-चिह्न लगाइए।

किसान ______ भूमि ______ एक टुकड़ा उपहार ______ मिला था। किसान ______ उस भूमि ______ हल चलाया। हल ______ ज़मीन खोदते समय हल किसी वस्तु ______ टकराया।

ये क्या है? किसान ——— ज़मीन ——— घड़ा उठाते हुए कहा। घड़े ——— स्वर्ण मुद्राएँ भरी थीं। एक बार किसान ——— मन ——— आया कि वह इन मुद्राओं ——— अपनी पत्नी ——— गहने खरीदे। फिर उस ——— सोचा कि जिस ——— वस्तु है, उसे वापस करना ही उचित है।

4. कारक-संबंधी अशुद्धियों को दूर कर वाक्य पुनः लिखिए।

क. आज विद्यालय ने शिक्षक दिवस मनाया। ______________________

ख. आलू के पराँठा स्वादिष्ट बना है। ______________________

ग. पेड़ में डाल में चिड़िया बैठी है। ______________________

घ. सुनहरी मछली पानी पर गोता लगा रही थी। ______________________

ङ. बच्चों को आकाश पर उड़ता हवाईजहाज़ देखा। ______________________

च. पेन से पुस्तक में मत लिखो। ______________________

छ. बिस्तर पर चादर बदल दो। ______________________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. कर्म कारक तथा संप्रदान कारक में क्या अंतर है?

ख. करण कारक तथा अपादान कारक में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

तालिका पूरी कीजिए।

कारक	विभक्ति चिह्न	कारकों के पहचान के शब्द/चिह्न
कर्ता	ने	किसने, कौन
		क्या, किसे
करण	से	
	के लिए, को	किसके लिए,
अपादान		कहाँ से, किससे
	का/के/की, रा/रे/री, ना/ने/नी	
अधिकरण		कहाँ, किसमें
	हे, अरे	!

जाना-समझा

कारकों के प्रयोग के बिना वाक्य अधूरा लगता है।

18 सर्वनाम

उपर्युक्त चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» चित्र में 'मैंने' शब्द किसके लिए आया है? ________________

» चित्र में 'तुम्हें' शब्द किसके लिए आया है? ________________

» चित्र में 'उनके' शब्द किसके लिए आया है? ________________

चित्र में कोच, सुमित तथा अन्य बच्चों के नाम के स्थान पर क्रमशः 'मैंने', 'तुम्हें' तथा 'उनके' शब्द आए हैं। नाम (संज्ञा) के स्थान पर आनेवाले ये शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

वे विकारी शब्द, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम शब्द संज्ञा की आवृत्ति को दूर कर भाषा के सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के मुख्य छह भेद हैं—1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. प्रश्नवाचक सर्वनाम 5. निजवाचक सर्वनाम 6. संबंधवाचक सर्वनाम।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलनेवाला अपने लिए, सुननेवाले के लिए तथा जिनके बारे में बात की जा रही है, उनके लिए करता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

मैंने तुम्हें बताया था कि वह पढ़ रहा है।

- मैंने बोलनेवाले के लिए
- तुम्हें सुननेवाले के लिए
- वह जिसके विषय में बात की जा रही है, उसके लिए

मैंने, तुम्हें तथा वह तीनों पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद

पुरुषवाचक सर्वनाम

- उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम → वक्ता—बोलनेवाला — मैं, हम
- मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम → श्रोता—सुननेवाला — तुम, आप
- अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम → अन्य व्यक्ति — वह, वे

- मैंने घर बदल लिया है। (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम)
- तुमपर मुझे ज़रा भी संदेह नहीं है। (मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम)
- वे भी आज खेलेंगे। (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम)

विशेष कारक-चिह्न सर्वनामों के साथ मिलाकर लिखे जाते हैं।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जो किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इनसे निकटता या दूरी का बोध होता है; जैसे—

- यह तुम्हें कब से याद कर रहा है।
- वह अपनी कक्षा में प्रथम आया है।
- ये सब आसपास ही रहते हैं।
- वे ही बार-बार घंटी बजा रहे हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जिनसे किसी व्यक्ति या वस्तु का निश्चयपूर्वक ज्ञान नहीं होता, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

- पेड़ के पीछे कोई खड़ा है।
- मेरे हाथ से कुछ गिरा है।
- मुझे लगा किसीने मुझे पुकारा है।
- किसीकी बात पर भरोसा न करो।

विशेष 'कुछ' का प्रयोग जड़ पदार्थ या छोटे कीड़ों-मकोड़ों के लिए होता है।
'कोई' का प्रयोग व्यक्तियों के साथ होता है।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जो प्रश्न का बोध करवाते हैं, प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

- सुबह-सुबह बाज़ार कौन जाएगा?
- किनपर आपको पूरा भरोसा है?
- किसने रास्ते में पत्थर रखा है?
- खाने में आज क्या बनाया है?

5. निजवाचक सर्वनाम

निज, अर्थात अपना। वे सर्वनाम शब्द, जो वाक्य में कर्ता के साथ अपनेपन का बोध करवाते हैं, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

- मैं स्वयं इस बात की जाँच-पड़ताल करूँगा।
- मैं सारे काम अपने-आप करता हूँ।
- सभी प्रश्नों के खुद ही उत्तर ढूँढ़ो।
- मैं आप इस विषय पर लेख लिख रहा हूँ।

6. संबंधवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जो वाक्य में आए दूसरे सर्वनाम शब्द से संबंध स्थापित करते हैं, संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

- जो करेगा, सो भरेगा।
- जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।
- बिना विचारे जो करेगा, सो पीछे पछताएगा।
- जिसकी लाठी उसकी भैंस।

सोचो और बताओ

सर्वनाम को रेखांकित कर उसके भेद का नाम लिखिए।

क. मैं, तुम्हारे साथ उसके घर जाऊँगा। ____________

ख. कमीज़ को सिल लो, वह फटी हुई है। ____________

ग. कोई, कुछ बोल नहीं रहा है। ____________

सर्वनाम की रूप-रचना

सर्वनामों के साथ जब कारकों की विभक्तियाँ लगती हैं, तब उनका रूप बदल जाता है। विभक्तियों के साथ सर्वनामों की रूप-रचना निम्नांकित हैं—

मैं (उत्तमपुरुष)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	मुझसे	हमसे
संप्रदान	मुझे, मेरे लिए	हमें, हमारे लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
संबंध	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
अधिकरण	मुझमें, मुझपर	हममें, हमपर

तू (मध्यमपुरुष)

कर्ता	तू, तूने	तुम, तुमने, तुमलोगों ने
कर्म	तुझको, तुझे	तुम्हें, तुमलोगों को
करण	तुझसे, तेरे द्वारा	तुमसे, तुम्हारे से, तुमलोगों से
संप्रदान	तुझको, तुझे, तेरे लिए	तुम्हें, तुम्हारे लिए, तुमलोगों के लिए
अपादान	तुझसे	तुमसे, तुमलोगों से
संबंध	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुमलोगों का-की
अधिकरण	तुझमें, तुझपर	तुममें, तुमलोगों में-पर

वह (अन्यपुरुष)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको
करण	उससे, उसके द्वारा	उनसे, उनके द्वारा
संप्रदान	उसको, उसे, उसके लिए	उनको, उन्हें, उनके लिए
अपादान	उससे	उनसे
संबंध	उसका, उसकी, उसके	उनका, उनकी, उनके
अधिकरण	उसमें, उसपर	उनमें, उनपर

आप (आदरसूचक)

कर्ता	आपने	आपलोगों ने
कर्म	आपको	आपलोगों को
करण	आपसे	आपलोगों से
संप्रदान	आपको, के लिए	आपलोगों को, के लिए
अपादान	आपसे	आपलोगों से
संबंध	आपका, आपकी, आपके	आपलोगों का-की-के
अधिकरण	आपमें, पर	आपलोगों में, पर

यह (निकटवर्ती)

कर्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म	इसको, इसे	ये, इनको, इन्हें
करण	इससे	इनसे
संप्रदान	इसे, इसको	इन्हें, इनको
अपादान	इससे	इनसे
संबंध	इसका, इसकी, इसके	इनका, इनकी, इनके
अधिकरण	इसमें, इसपर	इनमें, इनपर

कोई (अनिश्चयवाचक)

कर्ता	कोई, किसने	किन्हीं ने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से	किन्हीं से
संप्रदान	किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं से

संबंध	किसी का, किसी की, किसी के	किन्हीं का, किन्हीं की, किन्हीं के
अधिकरण	किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

हमने जाना

- संज्ञा के स्थान पर आनेवाले विकारी शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रमुख छह भेद हैं— पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम तथा संबंधवाचक सर्वनाम।
- कारकों की विभक्तियाँ लगने से सर्वनामों का रूप बदल जाता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. वह सर्वनाम कौन-सा है, जो कर्ता के साथ अपनेपन का बोध करवाता है?

   पुरुषवाचक सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम

   ख. वक्ता अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें क्या कहते हैं?

   उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

2. सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए।

   क. तुम्हारे लिए एक उपहार लाया हूँ। ख. आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।

   ग. आज कुछ खास व्यंजन बनाओ। घ. क्या इस प्रश्न का उत्तर जानते हो?

   ङ. जैसी करनी वैसी भरनी। च. आज अपने-आप खाना बनाऊँगा।

3. रंगीन शब्द सर्वनाम का कौन-सा भेद है? लिखिए।

   क. आज की दौड़ तो यह ही जीतेगा। ____________

   ख. कोई तो है, जिसे यह बात पता है। ____________

   ग. आपलोग कहाँ से आए हैं? ____________

   घ. जो प्रश्नों के सही उत्तर देगा, वो इनाम पाएगा। ____________

   ङ. मुझे अपने पर पूरा भरोसा है। ____________

4. सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियाँ दूर करके लिखिए।

क. गिलास के पानी में कोई तैर रहा है। __________________

ख. मुझको इससे बात करनी चाहिए। __________________

ग. यह मेरी पुस्तक है। उसे तुमने छिपाया था। __________________

घ. कुछ आपसे मिलने आया है। __________________

ङ. कौन का घर पास में है? __________________

5. **कोष्ठक के उचित सर्वनाम शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।**

क. उसके घर के बाहर ________ दीये जल रहे थे। (कुछ/कोई)

ख. जिसके ये रुपये हैं ________ ही मिलेंगे। (उसे/उनको)

ग. झूला झूलते हुए ________ बच्चे चिल्ला रहे थे। (वे/वह)

घ. माँ ने ________ बुलाया है? (किन्हें/कौन)

ङ. यह घर मैंने ________ सजाया है। (उससे/आप)

6. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. निजवाचक सर्वनाम तथा उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम में क्या अंतर है?

ख. निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम से किस प्रकार भिन्न है?

कार्यकलाप

शिक्षक कोई कहानी लेंगे। पाठ्यपुस्तक की कोई भी कहानी ले सकते हैं। उसका एक वाक्य बोलेंगे। विद्यार्थियों को बारी-बारी से सर्वनामयुक्त एक-एक वाक्य बोलते हुए कहानी पूरी करने के लिए कहेंगे; जैसे—प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह'।

प्रथम वाक्य
- हामिद अपनी दादी के साथ रहता था।
- उसकी दादी उससे बहुत प्यार करती थी।
- वह भी अपनी दादी का बहुत ख्याल रखता था।

जाना-समझा

सम्मानवाचक संज्ञा शब्दों के स्थान पर आए सर्वनाम शब्द बहुवचन में प्रयोग किए जाते हैं; जैसे—
- पं॰ जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।
- वे अत्यंत लोकप्रिय थे।

19 विशेषण

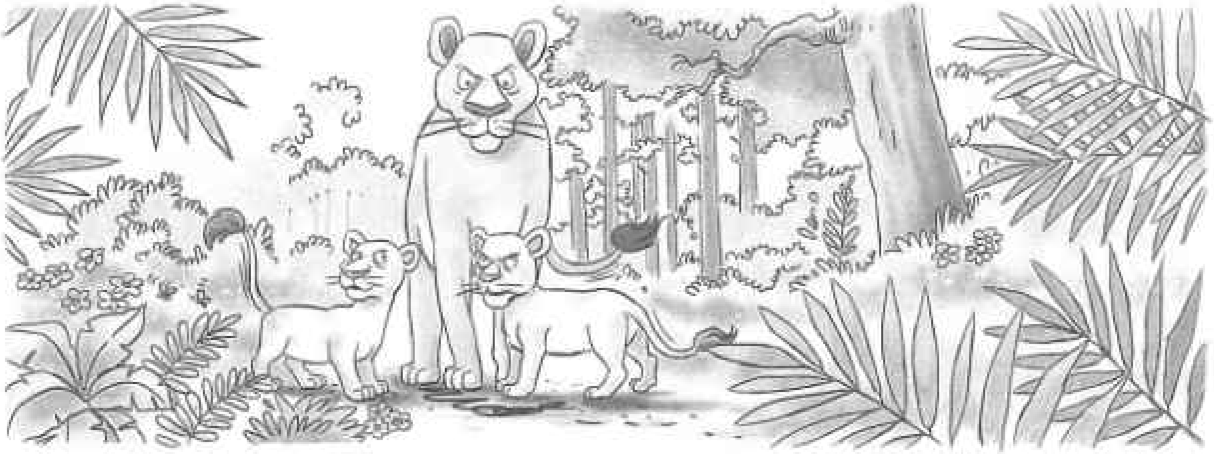

उपर्युक्त चित्र के आधार पर निम्नांकित शब्दों की विशेषता बताते हुए शब्द लिखिए।

_______________ शेरनी _______________ बच्चे _______________ जंगल

_______________ पेड़ _______________ तितलियाँ _______________ फूल

संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण शब्द जिन संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

विशेषण के भेद

विशेषण के प्रमुख चार भेद हैं—1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण 3. परिमाणवाचक विशेषण 4. सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

वे विशेषण, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-दोष, रंग-रूप, आकार-प्रकार, अवस्था, स्थिति-दिशा, देश-काल इत्यादि का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

गुण	परिश्रमी, सच्चा, चतुर, बुद्धिमान, अच्छा, उदार, योग्य इत्यादि।
दोष	आलसी, क्रोधी, अहंकारी, दुष्ट, कठोर, अयोग्य इत्यादि।
रंग-रूप	गोरा, गुलाबी, चमकीला, सुंदर, आकर्षक इत्यादि।
आकार-प्रकार	लंबा, मोटा, बड़ा, चौकोर, तिकोना, गोल इत्यादि।
अवस्था	बच्चा, अमीर, प्रौढ़, रोगी, ग्रामीण, बलवान इत्यादि।
स्थिति-दिशा	अगली, पिछली, अंतिम, पूर्वी, पश्चिमी इत्यादि।
देश-काल	प्राचीन, आधुनिक, भारतीय, स्वदेशी इत्यादि।

सोचो और बताओ

गुणवाचक विशेषण को छाँटकर लिखिए।

क. दानी मनुष्य की सब प्रशंसा करते हैं। ______

ख. वह खुरदरे फ़र्श को रगड़ने लगा। ______

ग. भयानक दृश्य देख मेरे रोंगटे खड़े हो गए। ______

घ. कड़वे करेले के बाद मीठा गुड़ खा लेना। ______

ङ. उसने लाल रूमाल ज़ोर-से हिलाया। ______

2. संख्यावाचक विशेषण

वे विशेषण शब्द, जो संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- मेले में दस झूले लगे हैं।
- प्लेट में कुछ मिठाइयाँ रखी हैं।

संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—1. निश्चित संख्यावाचक 2. अनिश्चित संख्यावाचक। उपर्युक्त वाक्यों में 'दस' झूले निश्चित संख्या का बोध करवा रहे हैं तथा 'कुछ' मिठाइयों से मिठाई की निश्चित संख्या का बोध नहीं हो रहा है।

वे संख्यावाचक विशेषण, जो संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध करवाते हैं, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं तथा जो संख्यावाचक विशेषण निश्चित संख्या का बोध नहीं करवाते, अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण	अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
मुझे दो पुस्तकें चाहिए।	मुझे कुछ पुस्तकें चाहिए।
गेट के पास दस लोग खड़े हैं।	गेट के पास बहुत सारे लोग खड़े हैं।
यह चार मंज़िला इमारत है।	यह कई मंज़िला इमारत है।
कमरे के चारों कोनों में फूल सजा दो।	कमरे के सभी कोनों में फूल सजा दो।

3. परिमाणवाचक विशेषण

वे विशेषण शब्द, जो संज्ञा या सर्वनाम के नापतौल अथवा परिमाण को बताते हैं, परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- उसने चार किलोग्राम आम खरीदे। (निश्चित परिमाण)
- उसने थोड़ा दूध चाय में डाला। (अनिश्चित परिमाण)

परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—1. निश्चित परिमाणवाचक 2. अनिश्चित परिमाणवाचक।

जो परिमाणवाचक विशेषण निश्चित परिमाण को बताते हैं, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं तथा जो परिमाणवाचक विशेषण निश्चित परिमाण को नहीं बताते हैं, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

निश्चित परिमाण → निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

अनिश्चित परिमाण → अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

सोचो और बताओ
परिमाणवाचक विशेषण निश्चित है या अनिश्चित?

क. दो लीटर पेट्रोल भरवा लेना। ______ परिमाणवाचक

ख. थोड़ा पानी पौधों पर छिड़क दो। ______ परिमाणवाचक

ग. ज़रा-सा जूस इसे भी दे दो। ______ परिमाणवाचक

घ. चार मीटर कपड़ा खरीदकर लाना। ______ परिमाणवाचक

4. **सार्वनामिक विशेषण**

वे सर्वनाम शब्द, जो संज्ञा शब्दों से पहले लगकर उनकी विशेषता बताते हैं, सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- इस फ्रॉक को मैंने जयपुर से खरीदा था।
- कोई व्यक्ति तुम्हारे बारे में पूछ रहा था।
- यह दुकान पहले बंद थी।
- वह घर मेरे चाचाजी ने बनवाया था।

विशेष सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर आते हैं तथा सार्वनामिक विशेषण संज्ञा से पहले लगते हैं।

सोचो और बताओ
रंगीन शब्द सर्वनाम है या सार्वनामिक विशेषण?

क. वह बहुत चालाक है। ______

ख. वह लड़का बहुत चालाक है। ______

ग. हम खेल रहे हैं। ______

घ. हम भाई-बहन खेल रहे हैं। ______

प्रविशेषण

संज्ञा की विशेषता बताए—विशेषण

विशेषण की विशेषता बताए—प्रविशेषण

विशेषण से पहले लगकर विशेषण की विशेषता बतानेवाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे—

मुझे हलका गुलाबी रंग पसंद है।
(हलका ↓ प्रविशेषण, गुलाबी ↓ विशेषण, रंग ↓ संज्ञा)

मैंने बहुत सुंदर स्वेटर खरीदा है।

व्यक्ति अत्यंत घने जंगल में छिप गया।

विशेषण की तुलनात्मक अवस्थाएँ

विशेषण की निम्नांकित तीन अवस्थाएँ हैं—

मूलावस्था — इसमें किसी वस्तु या प्राणी की विशेषता प्रकट की जाती है।

उत्तरावस्था — इसमें दो प्राणियों अथवा वस्तुओं की तुलना की जाती है।

उत्तमावस्था इसमें दो से अधिक प्राणियों अथवा वस्तुओं की तुलना करके किसी एक को सबसे अच्छा या सबसे बुरा बताया जाता है।

जैसे—
- मान्या अच्छा खाना बनाती है। (मूलावस्था)
- मान्या संजना से अच्छा खाना बनाती है। (उत्तरावस्था)
- मान्या संजना, प्रिया तथा आयुषी सबसे अच्छा खाना बनाती है। (उत्तमावस्था)

सोचो और बताओ

मूलावस्था, उत्तरावस्था अथवा उत्तमावस्था लिखिए।

क. वह मेरा परम मित्र है। ____________

ख. वह मुझसे अच्छा खेलता है। ____________

ग. वह सबसे अच्छा तैराक है। ____________

उत्तरावस्था दिखाने के लिए 'तर' प्रत्यय तथा उत्तमावस्था दिखाने के लिए 'तम' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**	**मूलावस्था**	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
अधिक	अधिकतर	अधिकतम	उच्च	उच्चतर	उच्चतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम	न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
निकट	निकटतर	निकटतम	प्राचीन	प्राचीनतर	प्राचीनतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम	योग्य	योग्यतर	योग्यतम
लघु	लघुतर	लघुतम	विशाल	विशालतर	विशालतम

विशेष तुलना के लिए 'से', 'से अधिक', 'से कम' तथा 'सर्वश्रेष्ठ', 'सबसे अधिक', 'सबसे कम' इत्यादि शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है।

विशेषण शब्दों का निर्माण

हिंदी में कुछ शब्द मूल रूप से विशेषण हैं; जैसे—सुंदर, मधुर, महान, बुरा, अच्छा, भोला, ऊँचा, चतुर, चंचल इत्यादि। परंतु, अधिकांश विशेषण शब्दों का निर्माण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़कर किया जाता है।

संज्ञा शब्दों से विशेषणों का निर्माण

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
रोग	रोगी	ज्ञान	ज्ञानी	धन	धनी
जापान	जापानी	क्रोध	क्रोधी	किताब	किताबी
जंगल	जंगली	अभिमान	अभिमानी	खून	खूनी

बौद्ध	बौद्धिक	संसार	सांसारिक	नगर	नागरिक
लेख	लिखित	स्मरण	स्मरणीय	पर्वत	पर्वतीय
धर्म	धार्मिक	इतिहास	ऐतिहासिक	ज़हर	ज़हरीला
दया	दयालु	लालच	लालची	भूख	भूखा
रंग	रंगीन	हठ	हठीला	बुद्धि	बुद्धिमान
श्रद्धा	श्रद्धालु	मानव	मानवीय	तर्क	तार्किक

सर्वनाम शब्दों से विशेषणों का निर्माण

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
तुम	तुम्हारा	यह	ऐसा	मैं	मेरा
कुछ	कितना	वह	वैसा	कौन	कैसा

क्रिया शब्दों से विशेषणों का निर्माण

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
कमाना	कमाऊ	खाना	खाऊ	घूमना	घुमक्कड़
पढ़ना	पढ़ाकू	लड़ना	लड़ाकू	बनाना	बनावटी
भूलना	भुलक्कड़	पालना	पालतू	मरना	मरियल

अव्यय शब्दों से विशेषणों का निर्माण

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
आगे	अगला	ऊपर	ऊपरी	नीचे	निचला
भीतर	भीतरी	बाहर	बाहरी	पीछे	पिछला

हमने जाना

- संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
- विशेषण शब्द जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।
- विशेषण के प्रमुख चार भेद हैं—1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण 3. परिमाणवाचक विशेषण 4. सार्वनामिक विशेषण।
- विशेषणों की विशेषता बतानेवाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।
- विशेषण की तीन मुख्य अवस्थाएँ हैं—मूलावस्था, उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था।
- विशेषण का निर्माण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों से होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द क्या कहलाते हैं?

   विशेष्य　　　विशेषण　　　प्रविशेषण

   ख. 'आपका आकर्षक व्यक्तित्व सभी को प्रभावित करता है।' वाक्य में आया विशेषण कौन-सा है?

   गुणवाचक　　　सार्वनामिक　　　परिमाणवाचक

2. वाक्य में आए विशेषणों को रेखांकित कर लिखिए।

   क. कपटी मित्र से दूर रहा करो। ____________

   ख. गिलहरी नरम दूब पर उछल-कूद कर रही थी। ____________

   ग. एक किलोग्राम रसगुल्ले का क्या भाव है? ____________

   घ. मैंने परीक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। ____________

   ङ. उसकी दुकान कहीं आसपास ही है। ____________

   च. चिकने घड़े पर पानी का कोई असर नहीं होता। ____________

3. रंगीन शब्द पहचानकर विशेषण के सही भेद पर ✓ लगाएँ।

क. सच्चा व्यक्ति किसी से नहीं डरता।	गुणवाचक	परिमाणवाचक
ख. एक किलोग्राम सेब टोकरी में डाल दो।	संख्यावाचक	परिमाणवाचक
ग. मुझे बासमती चावल बहुत पसंद है।	संख्यावाचक	गुणवाचक
घ. प्रौढ़ व्यक्ति सड़क पर गिर गया।	गुणवाचक	सार्वनामिक
ङ. हमारी ज़मीन पर खेती हो रही है।	परिमाणवाचक	सार्वनामिक

4. निश्चित संख्या → निश्चित संख्यावाचक

   अनिश्चित संख्या → अनिश्चित संख्यावाचक

   निश्चित नापतौल → निश्चित परिमाणवाचक

   अनिश्चित नापतौल → अनिश्चित परिमाणवाचक

   निर्देशानुसार विशेषण शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

   क. इसमें नींबू का ____________ रस मिला देना।　　(अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण)

ख. इस काम में तुम्हें ________ लाभ मिलेगा। (निश्चित संख्यावाचक विशेषण)

ग. ________ दूध खरीदकर लाओ। (निश्चित परिमाणवाचक विशेषण)

घ. नहाने के लिए ________ पानी गरम कर दो। (अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण)

ङ. ________ भाई खा-पीकर स्कूल चले जाना। (निश्चित संख्यावाचक विशेषण)

च. ________ आम पेड़ से नीचे गिरे हुए थे। (अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण)

छ. ________ लड़का तुम्हें पुकार रहा है। (निश्चित संख्यावाचक विशेषण)

5. **दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए।**

क. रोग ________ ख. संसार ________

ग. पर्वत ________ घ. कुछ ________

ङ. पढ़ना ________ च. भीतर ________

छ. नीचे ________ ज. बनाना ________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. निश्चित संख्यावाचक तथा अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण में क्या अंतर है?

ख. निश्चित परिमाणवाचक तथा अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

कुछ गुणवाचक विशेषण निम्नांकित हैं। इन विशेषणों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

दयालु	ईमानदार	कृपालु	मोहक	पवित्र
भयानक	बुरा	चालाक	मधुर	कोमल
सुनहरा	छोटा	स्थूल	ऊँचा	स्वस्थ
कमज़ोर	गरीब	बाहरी	ताजी	बासी
नमकीन	कसैला	सुगंधित	दक्षिणी	नरम

जाना-समझा

विशेषण के लिंग और वचन विशेष्य के लिंग और वचन के अनुरूप परिवर्तित होते हैं।

20 क्रिया

उपर्युक्त चित्र के आधार पर रिक्त स्थानों को भरिए।

- हवा ________________।
- सब्जीवाला सब्जी ________________।
- कपड़े ________________।
- औरतें सब्जी ________________।

उपर्युक्त चित्र में हवा के बहने तथा कपड़ों के हिलने का काम अपने-आप हो रहा है। सब्ज़ी बेचने और खरीदने का कार्य किया जा रहा है।

जिन शब्दों से काम का अपने-आप होने या कार्य के किए जाने का पता चले, उन्हें क्रिया कहते हैं।

क्रिया का मूलरूप धातु कहलाता है। धातु में प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अनेक रूप बनते हैं।

लिख धातु	लिखना	लिखा	लिखता	लिखती	लिखी	लिखूँगा
	लिखेगी	लिखेंगे	लिखो	लिखिए	लिखेगा	लिखूँगी

क्रिया के संबंध में ध्यान देने योग्य बातें

1. क्रिया के बिना वाक्य अपूर्ण माना जाता है; जैसे—मैं और वह साथ-साथ...
2. क्रिया विकारी शब्द है। लिंग, वचन तथा काल के अनुसार इसका स्वरूप परिवर्तित हो जाता है।
   - भाई पुस्तक पढ़ रहा है। (पुल्लिंग)
   - बहन पुस्तक पढ़ रही है। (स्त्रीलिंग)
   - तोता उड़ रहा है। (एकवचन)
   - तोते उड़ रहे हैं। (बहुवचन)
   - मैं कल घर गया था। (भूतकाल)
   - मैं आज घर जा रहा हूँ। (वर्तमानकाल)
   - मैं कल घर जाऊँगा। (भविष्यतकाल)

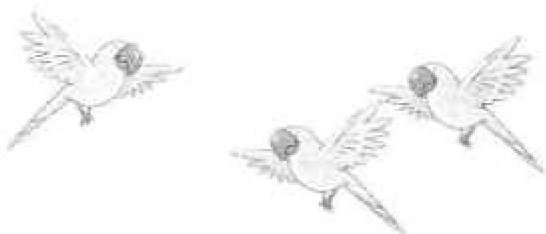

3. वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति का प्रयोग नहीं होने पर क्रिया कर्ता के लिंग तथा वचन के अनुरूप प्रयोग की जाती है।

- नर्स रोगी की देखभाल करती है।
- अनन्या गरीबों में खाना बाँटती है।

4. वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति का प्रयोग होने पर क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

- माँ ने खाना बनाया।
- शेर ने दहाड़ लगाई।

क्रिया के भेद

क्रिया के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं—1. कर्म के आधार पर 2. संरचना के आधार पर।

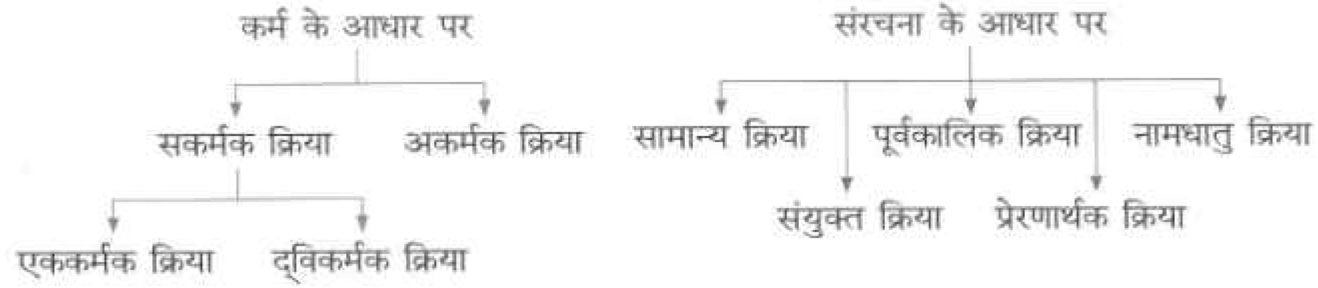

1. कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

सकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं में कर्म होता है अथवा जो क्रियाएँ कर्म की अपेक्षा रखती हैं, उन्हें सकर्मक क्रिया कहा जाता है।

सकर्मक क्रिया में कर्म कारक की विभक्ति 'को' का प्रयोग होता है।

- बच्चे पिताजी को बुला लाए।
- माँ ने नौकरानी को सामान दिया।
- बच्चों ने शिक्षकों को फूल दिए।
- नर्स ने रोगी को इंजेक्शन लगाया।

वाक्य में 'को' विभक्ति का प्रयोग नहीं होने पर यदि क्रिया के साथ 'क्या', 'किसे' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर कोई उत्तर प्राप्त हो, तो क्रिया सकर्मक होती है।

- बच्चा लड्डू खा रहा है।
  प्रश्न—क्या खा रहा है? उत्तर—लड्डू क्रिया—सकर्मक
- बच्चे पाठ पढ़ रहे हैं।
  प्रश्न—क्या पढ़ रहे हैं? उत्तर—पाठ क्रिया—सकर्मक

अकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं का कोई कर्म नहीं होता, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। ऐसी क्रियाएँ किसी कर्म की अपेक्षा नहीं रखतीं। यदि क्रिया के साथ 'क्या', 'किसे' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर कोई उत्तर न प्राप्त हो, तो क्रिया अकर्मक होती है।

- चिड़िया उड़ती है।
  प्रश्न—क्या उड़ती है? उत्तर—? क्रिया—अकर्मक

- दादी माँ हँस रही हैं।
  प्रश्न—क्या हँस रही हैं? उत्तर— ? क्रिया—अकर्मक

हँसना, रोना, उठना, बैठना, आना, जाना, सोना, जागना, चलना, ठहरना, भागना, दौड़ना, तैरना, लेटना, लजाना, मरना इत्यादि अकर्मक क्रियाएँ हैं।

सोचो और बताओ
क्रिया अकर्मक है या सकर्मक?

क. बच्चा जागता है।	सकर्मक	अकर्मक
ख. बच्चे पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ते हैं।	सकर्मक	अकर्मक
ग. पक्षी उड़ रहे हैं।	सकर्मक	अकर्मक
घ. दादाजी कहानी सुना रहे हैं।	सकर्मक	अकर्मक

एककर्मक क्रिया तथा द्विकर्मक क्रिया

एककर्मक क्रिया	द्विकर्मक क्रिया
↓	↓
एक कर्म	दो कर्म
बच्चा पाठ सुनाता है।	बच्चा माँ को पाठ सुनाता है।
ग्वाला दूध बाँटता है।	ग्वाला लोगों को दूध बाँटता है।
मनीषा रोटी खिलाती है।	मनीषा भाई को रोटी खिलाती है।

विशेष द्विकर्मक क्रिया में 'क्या' और 'किसे' दोनों प्रश्नों का उत्तर मिलता है। इसमें एक कर्म निर्जीव तथा एक कर्म सजीव होता है। सजीव कर्म के साथ विभक्ति लगती है, परंतु निर्जीव कर्म के साथ विभक्ति नहीं लगती।

2. संरचना के आधार पर क्रिया के भेद

सामान्य क्रिया

यदि वाक्य में एक ही क्रियापद का प्रयोग हो, तो क्रिया सामान्य क्रिया होती है।

- मैंने पंखा चलाया।
- धोबी ने कपड़े धोए।
- किसान ने हल चलाया।
- माँ ने खाना बनाया।

संयुक्त क्रिया

जब वाक्य में प्रयुक्त दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर एक क्रिया बनती है, तब उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

- बच्चा साइकिल चला (↓ मुख्य क्रिया) रहा है। (↓ सहायक क्रिया)
- हलवाई मिठाई बनाता (↓ मुख्य क्रिया) है। (↓ सहायक क्रिया)

- मैं उसे पत्र लिख चुका हूँ।
  (लिख ↓ मुख्य क्रिया, चुका हूँ ↓ सहायक क्रिया)
- बाहर वर्षा होने लगी है।
  (होने ↓ मुख्य क्रिया, लगी है ↓ सहायक क्रिया)

संयुक्त क्रिया में पहली क्रिया मुख्य होती है। उपर्युक्त वाक्यों में चला, बनाता, लिख तथा होने मुख्य क्रिया हैं। मुख्य क्रिया के साथ आई अन्य क्रियाएँ मुख्य क्रिया के कार्य को स्पष्ट करती हैं। इन्हें सहायक क्रिया अथवा रंजक क्रिया कहते हैं।

पूर्वकालिक क्रिया

जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी समय दूसरी क्रिया शुरू करता है, तब मुख्य क्रिया से पहले आई क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले समाप्त होती है। पूर्वकालिक क्रिया धातु के साथ 'कर' लगाकर बनाई जाती है।

उसने सोचकर उत्तर दिया।
(सोचकर ↓ पूर्वकालिक क्रिया, उत्तर दिया ↓ मुख्य क्रिया)

उत्तर देने की क्रिया से पहले सोचने की क्रिया हुई है। इसलिए, 'सोचकर' पूर्वकालिक क्रिया है। इसमें 'कर' लगा है।

सोचो और बताओ

पूर्वकालिक क्रिया छाँटकर लिखिए।

क. बच्चे खेलकर खुश हो गए। ____________

ख. लड़का छत पर चढ़कर नीचे झाँकने लगा। ____________

ग. सिपाही गाड़ी को रोककर पूछताछ करने लगा। ____________

घ. माधवी खाना खाकर टहलने लगी। ____________

प्रेरणार्थक क्रिया

जब कर्ता स्वयं कार्य न करके, दूसरों को कार्य करने की प्रेरणा देता है, तब उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे—अध्यापक बच्चों से पाठ पढ़वाते हैं।

इसमें अध्यापक स्वयं पाठ नहीं पढ़ रहे, बल्कि बच्चों को पाठ पढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं।

प्रेरणार्थक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं—प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया तथा द्विवतीय प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता स्वयं को कार्य करने की प्रेरणा देता है। द्विवतीय प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देता है।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्विवतीय प्रेरणार्थक क्रिया
▪ माँ बच्चों को सुलाती है। (स्वयं को प्रेरित कर रही है।)	▪ माँ नौकरानी से बच्चे को सुलवाती है। (दूसरे को प्रेरित कर रही है।)
▪ चित्रकार चित्र बनाता है।	▪ चित्रकार बच्चों से चित्र बनवाता है।
▪ पिताजी सामान छत पर रखते हैं।	▪ पिताजी मजदूर से सामान छत पर रखवाते हैं।
▪ आलिया पूजा करती है।	▪ आलिया पंडितजी से पूजा करवाती है।

प्रेरणार्थक क्रियाओं का निर्माण

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया 'ना' लगाकर तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया 'वाना' लगाकर बनाई जाती है।

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
उठना	उठाना	उठवाना	उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
करना	कराना	करवाना	खेलना	खेलाना	खेलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना	चलना	चलाना	चलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना	देना	दिलाना	दिलवाना
पकड़ना	पकड़ाना	पकड़वाना	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना

सोचो और बताओ

प्रथम प्रेरणार्थक तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया लिखिए।

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
हँसना	____________	____________
सुनना	____________	____________
सीखना	____________	____________
बोलना	____________	____________
दौड़ना	____________	____________
पीना	____________	____________

नामधातु क्रिया

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अनुकरणवाची शब्दों में प्रत्यय लगाकर बनाई गई क्रिया नामधातु क्रियाएँ कहलाती हैं।

संज्ञा शब्दों से	बात—बतियाना, हाथ—हथियाना, झूठ—झुठलाना, शर्म—शर्माना, रंग—रँगना, चक्कर—चकराना
सर्वनाम शब्दों से	मैं—मिमियाना, अपना—अपनाना
विशेषण शब्दों से	दोहरा—दुहराना, गरम—गरमाना, तोतला—तुतलाना, साठ—सठियाना, लँगड़ा—लँगड़ाना, नरम—नरमाना
अनुकरणवाची शब्दों से	खट-खट—खटखटाना, टिम-टिम—टिमटिमाना, खिल-खिल—खिलखिलाना, थप-थप—थपथपाना

हमने जाना

- क्रिया शब्दों से काम के होने या किए जाने का पता चलता है।
- क्रिया एक विकारी शब्द है। लिंग, वचन तथा काल के अनुसार इसका रूप परिवर्तित हो जाता है।
- कर्म के आधार पर क्रिया सकर्मक तथा अकर्मक होती है।
- संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं—सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया तथा नामधातु क्रिया।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. कर्म के आधार पर क्रिया का भेद कौन-सा है?

   पूर्वकालिक क्रिया   सकर्मक क्रिया   सामान्य क्रिया

   ख. संरचना के आधार पर क्रिया का भेद कौन-सा है?

   एककर्मक क्रिया   द्विकर्मक क्रिया   नामधातु क्रिया

2. **क्या तथा किसे प्रश्न की सहायता से पहचानकर बताएँ कि क्रिया अकर्मक है या सकर्मक।**

   क. बच्चे ने बगीचे से फूल तोड़ा।

   ख. राहगीर ने दादाजी से रास्ता पूछा।

   ग. पड़ोसन बाहर बैठी हैं।

   घ. तैराक तैरता है।

   ङ. चिड़ियों ने पंख फैलाए।

   च. माँ ने रोटी पिताजी को दी।

क्रम-संख्या	प्रश्न	उत्तर	क्रिया
क.			
ख.			
ग.			
घ.			
ङ.			
च.			

3. संरचना के आधार पर क्रिया के भेदों के नाम लिखिए।

   क. बच्चे झूला झूलेंगे। ______________

   ख. कर्मचारी काम कर रहा है। ______________

   ग. हम खेलकर थक गए। ______________

   घ. किसान ने मज़दूरों से धान कटवाया। ______________

   ङ. घोड़ा मालिक को देख हिनहिनाने लगा। ______________

4. **अकर्मक क्रिया के साथ कर्म को जोड़कर सकर्मक क्रियाएँ बनाइए।**

   क. बच्चा खाता है। बच्चा आइसक्रीम खाता है।

   ख. लड़का बजाता है। ______________

ग. कुम्हार बनाता है। ______

घ. टोकरी में रख दो। ______

ङ. गुलदस्ते में सजे हैं। ______

5. पूर्वकालिक क्रियायुक्त वाक्य बनाइए।

क. बच्चा दौड़ा। उसने गेंद उठाई। ~~बच्चे ने दौड़कर गेंद उठाई।~~

ख. बंदर कूदा। वह पेड़ पर चढ़ गया। ______

ग. आशिमा उठी। उसने पानी पिया। ______

घ. अभिनव झुका। दादाजी के पैर छूए। ______

ङ. उसने रोटी उठाई। पिताजी को दी। ______

6. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से नामधातु क्रियाएँ बनाकर वाक्य पूरे कीजिए।

क. कभी किसी का सामान नहीं ______। (हाथ)

ख. मिठाई को देखकर जी ______ लगा। (लालच)

ग. मेरी बात को ध्यान से सुनना, फिर ______। (अपना)

घ. वृद्ध व्यक्ति गुस्से में ______ लगा। (बड़बड़ा)

ङ. मक्खियाँ कूड़े के ढेर पर ______ लगीं। (भिन-भिन)

7. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. अकर्मक क्रिया सकर्मक क्रिया से किस प्रकार भिन्न है?

ख. आप कैसे कह सकते हैं कि क्रिया एक विकारी शब्द है?

कार्यकलाप

किसी पत्र-पत्रिका अथवा अपनी पाठ्यपुस्तक का एक गद्यांश लिखिए। उसमें आए सभी क्रिया शब्दों को रेखांकित कीजिए। संरचना के आधार पर उन्हें विभिन्न भेदों में बाँटिए।

जाना-समझा

अकर्मक क्रिया प्रेरणार्थक होने पर सकर्मक बन जाती हैं।

- वह चलता है। (अकर्मक क्रिया)
- वह बच्चे को चलवाता है। (प्रेरणार्थक तथा सकर्मक क्रिया)

आओ दोहराएँ 2 (पाठ 11 से 20 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. कृत् प्रत्यय किनके अंत में लगते हैं?

धातुओं के संज्ञा के सर्वनाम के

ख. अव्ययीभाव समास का उदाहरण कौन-सा है?

आमरण गगनचुंबी दाल-भात

2. निम्नांकित उपसर्गों के साथ दो भिन्न मूल शब्द लगाकर शब्द बनाइए।

क. अप ______ ______ ______ ______

ख. निर् ______ ______ ______ ______

3. समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

क. वनगमन ______ ______

ख. नीलगगन ______ ______

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाकर लिखिए।

क. बच्चे को देखकर मुझे भी अपना ______ याद आता है। (बच्चा)

ख. तुमने घर की बहुत अच्छी ______ की है। (सजाना)

5. रंगीन शब्दों का लिंग परिवर्तित करके वाक्य पुनः लिखिए।

क. नौकर खाना पका रहा है। ______

ख. पंडित ने पूजा की सामग्री एकत्र की। ______

6. रंगीन शब्दों का वचन परिवर्तित करके वाक्य पुनः लिखिए।

क. मिस्त्री ने रातोंरात दीवार खड़ी कर दी। ______

ख. कूड़े पर मक्खी भिनभिना रही है। ______

7. कारकों को रेखांकितकर उनके भेदों के नाम लिखिए।

क. रंगों से रंगोली बनाकर घर सजाओ। ______

ख. पिताजी के लिए गरमा-गरम पकौड़े बनाओ। ______

8. कोष्ठक में दिए गए उचित सर्वनाम शब्द से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. उसके घर के बाहर ______ दीये जल रहे हैं। (कुछ/कोई)

ख. झूला झूलते हुए ______ चिल्ला रहे थे। (वह/वे)

9. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए।

क. रोग ______ **ख.** संसार ______

ग. पर्वत ______ घ. भीतर ______

10. सकर्मक क्रियाएँ बनाइए।

क. बच्चा जाता है। ______

ख. वह कूदती है। ______

11. मूल शब्द तथा प्रत्यय को अलग कीजिए।

क. लुटेरा ______ ______ **ख.** ओढ़नी ______ ______

ग. रखवाला ______ ______ **घ.** रटंत ______ ______

12. नामधातु क्रियाएँ बनाइए।

क. लालच ______ **ख.** बात ______

ग. टिम-टिम ______ घ. शर्म ______

21 काल

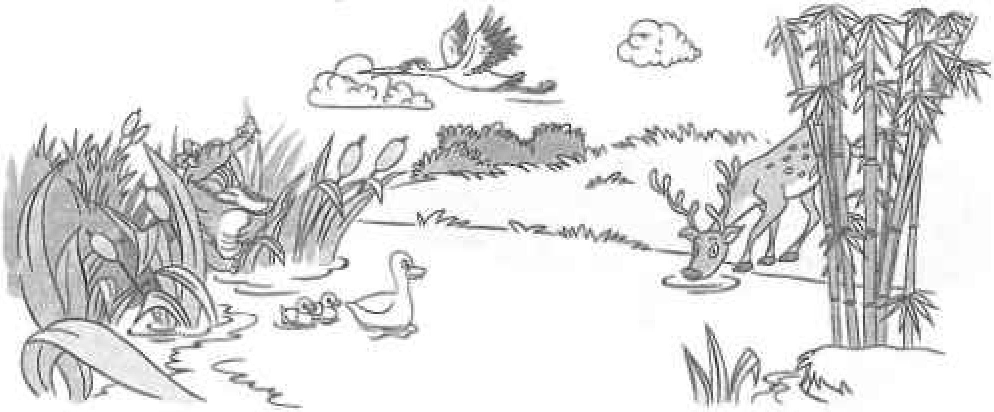

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- आसमान में कौन उड़ रहा था? ____________________
- हिरण क्या कर रहा है? ____________________
- मगरमच्छ क्या करेगा? ____________________

उपर्युक्त तीनों कार्य अलग-अलग समय में होने को दर्शा रहे हैं।

> क्रिया का वह रूप, जिससे उसके होने या करने के समय की जानकारी तथा उसकी पूर्णता-अपूर्णता का बोध हो, **काल** कहलाता है।

काल के भेद

- **भूतकाल** — क्रिया हो चुकी है।
- **वर्तमानकाल** — क्रिया हो रही है।
- **भविष्यतकाल** — क्रिया आनेवाले समय में होगी।

भूतकाल

क्रिया का वह रूप, जो उसके बीते हुए समय में समाप्ति का बोध करवाए, भूतकाल कहलाता है; जैसे—

- बच्चों ने क्रिकेट खेला।
- बच्चे अभी-अभी क्रिकेट खेल करके आए हैं।
- बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे।
- बच्चों ने क्रिकेट खेला होगा।
- यदि बच्चे क्रिकेट खेलते, तो मज़ा आता।

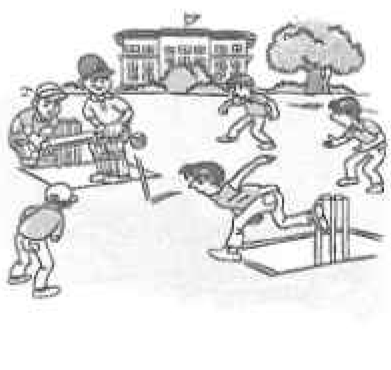

उपर्युक्त वाक्यों से पता चलता है कि कार्य समाप्त हो चुका है। सभी क्रियाएँ भूतकाल में हुई हैं, परंतु उनके रूप अलग हैं।

उपर्युक्त छह वाक्य भूतकाल की क्रिया के निम्न छह रूपों को दिखाते हैं—

1. सामान्य भूतकाल	2. आसन्न भूतकाल	3. पूर्ण भूतकाल
4. अपूर्ण भूतकाल	5. संदिग्ध भूतकाल	6. हेतुहेतुमद् भूतकाल।

1. सामान्य भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में समाप्त होने का तो पता चले, परंतु उसके विशेष समय का ज्ञान न हो, सामान्य भूतकाल कहलाता है।

पहचानें वाक्य के अंत में आ, ई, ए, या।

- बादल देख मोर खुशी से नाचा।
- किसान ने धान की पौध लगाई।
- हमने गरमा-गरम पकौड़े खाए।
- बच्चे ने अपना कार्य स्वयं किया।

2. आसन्न भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में आरंभ होकर अभी-अभी समाप्त होने का पता चले, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

पहचानें वाक्य के अंत में आ, ई, ए, या के साथ 'है' अथवा 'हैं'।

- पुलिस ने चोर को पकड़ा है।
- दादीजी ने मुझे नई कहानी सुनाई है।
- आकाश में काले-काले बादल छाए हैं।
- शिक्षक ने पाठ पढ़वाया है।

3. पूर्ण भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से पता चले कि कार्य पूर्ण हुए काफ़ी समय हो चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

पहचानें वाक्य के अंत में था, थे, थी।

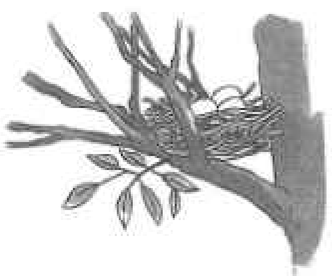

- मार्च में हमारी परीक्षाएँ हुई थीं।
- चिड़िया ने घोंसले में अंडे दिए थे।
- सबने मिलकर एक गीत सुनाया था।
- उसने चित्रकला प्रतियोगिता जीती थी।

4. अपूर्ण भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह तो पता चले कि कार्य भूतकाल में आरंभ हुआ था, परंतु वह पूरा हुआ है अथवा नहीं, इसका पता न चले, वहाँ अपूर्ण भूतकाल होता है।

पहचानें वाक्य के अंत में रहा था, रहे थे, रही थी।

- कृष्ण जन्माष्टमी पर बच्चे मटकी फोड़ रहे थे।
- ख्याति नृत्य कर रही थी।
- अमित फल तोड़ रहा था।
- जादूगर जादू का खेल दिखा रहा था।

5. संदिग्ध भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के बीते हुए समय में होने का संदेह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं।

पहचानें वाक्य के अंत में चुका होगा, चुके होंगे अथवा चुकी होगी।

- सब छिप चुके होंगे।
- परीक्षा की घंटी बज चुकी होगी।
- अँधेरा घिर चुका होगा।
- वह कार में पेट्रोल डलवा चुका होगा।

6. हेतुहेतुमद् भूतकाल

क्रिया का वह रूप, जिसमें एक क्रिया का होना, दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है, हेतुहेतुमद् भूतकाल कहलाता है।

पहचानें यदि, तो तथा अंत में ता, ती, ते।

- यदि जल्दी जाते, तो गाड़ी न छूटती।
- यदि वर्षा आती, तो मेढक टर्राते।
- यदि हमारे पास बल्ला होता, तो हम क्रिकेट खेलते।
- यदि धूप निकलती, तो कपड़े सूख जाते।

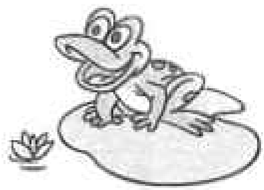

सोचो और बताओ

भूतकाल का भेद पहचानकर नाम लिखिए।

क. उसने समोसा खाया। ____________

ख. उसने समोसा खाया है। ____________

ग. उसने समोसा खाया था। ____________

घ. वे समोसा खा रहे थे। ____________

ङ. वे समोसा खा चुके होंगे। ____________

च. यदि उसने समोसा खाया होता, तो वह बता देता। ____________

वर्तमानकाल

क्रिया का वह रूप, जिससे पता चले कि कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है, चल रहा है, उसे वर्तमानकाल कहते हैं।

- मज़दूर काम करते हैं।

- ड्राइवर गाड़ी चला रहा है।
- पॉपकॉर्न बन रहे होंगे।

उपर्युक्त वाक्य वर्तमान काल की क्रियाओं के विभिन्न रूप दिखा रहे हैं। इस आधार पर वर्तमानकाल के तीन प्रमुख भेद हैं—1. सामान्य वर्तमानकाल 2. अपूर्ण वर्तमानकाल 3. संदिग्ध वर्तमानकाल।

1. सामान्य वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान में पूरे होने का पता चले, सामान्य वर्तमानकाल कहलाता है।

पहचानें वाक्य के अंत में ता, ते, ती तथा है/हैं।

- माँ खाना बनाती है।
- राघव पौधों को पानी देता है।
- मकरसंक्राति पर पतंगें उड़ाई जाती हैं।
- मान्या दीयों को रंगों से सजाती है।
- बच्चे मैदान में खेलते हैं।

2. **अपूर्ण वर्तमानकाल**

क्रिया का वह रूप, जिससे पता चले कि क्रिया आरंभ होकर अभी समाप्त नहीं हुई है, अपूर्ण वर्तमानकाल कहलाता है।

पहचानें वाक्य के अंत में रहा, रही, रहे तथा है, हैं, हूँ।

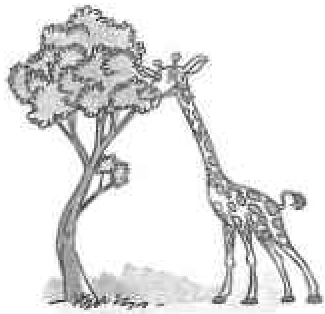

- आम की डाली पर कोयल कूक रही है।
- सीमाओं पर फ़ौजी पहरा दे रहे हैं।
- ज़िराफ पत्तियाँ खा रहा है।
- बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं।

3. **संदिग्ध वर्तमानकाल**

क्रिया का वह रूप, जिससे उसके वर्तमान में पूरा होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं।

पहचानें वाक्य के अंत में रहा, रहे, रही तथा होगा, होगी।

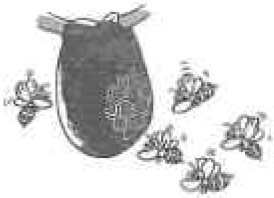

- माँ आम का अचार बना रही होगी।
- छत्ते पर मधुमक्खियाँ भिनभिना रही होंगी।
- सब रंगों से होली मना रहे होंगे।
- अनुज मेरा पत्र पढ़ रहा होगा।

सोचो और बताओ

वर्तमानकाल के भेदों के नाम लिखिए।

क. पिताजी कार चलाते हैं। ____________

ख. बच्चे सुबह से शोर मचा रहे हैं। ____________

ग. वे छत पर पतंग उड़ा रहे होंगे। ____________

भविष्यतकाल

क्रिया का वह रूप, जिससे पता चले कि क्रिया आनेवाले समय में होगी, उसे भविष्यतकाल कहते हैं।

- आज मैं तुम्हारे साथ ही घर जाऊँगा।
- आज मैं मैकेनिक से कार ठीक करवाऊँगा।
- यह पुस्तक बाज़ार में मिल जाएगी।
- शायद आज धूप निकल आए।
- कल से साक्षात्कार शुरू हो जाएँगे।

भविष्यतकाल के भेद

भविष्यतकाल के प्रमुख दो भेद हैं—1. सामान्य भविष्यतकाल 2. संभाव्य भविष्यतकाल।

1. सामान्य भविष्यतकाल

क्रिया के जिस रूप से उसका आनेवाले समय में सामान्य रूप से होने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यतकाल कहते हैं।

पहचानें वाक्य के अंत में ए, एँ, ऊँ तथा गा, गे, गी।

- हम पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँगे।
- प्रिया दीपावली पर नए कपड़े सिलवाएगी।
- मैं जूडो सीखने जाऊँगी।
- शिक्षक आज नई गतिविधि करवाएँगे।

2. संभाव्य भविष्यतकाल

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के आनेवाले समय में होने की संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यतकाल कहते हैं।

पहचानें वाक्य के अंत में ए अथवा एँ।

- शायद छुट्टियों में हम मसूरी जाएँ।
- शायद आज दादी माँ आ जाएँ।
- शायद कल से सिनेमा हॉल खुल जाए।
- संभव है हम आज का मैच जीत जाएँ।

हमने जाना

- काल हमें कार्य के होने के समय की जानकारी देता है।
- काल के तीन भेद हैं—भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यतकाल।
- भूतकाल के प्रमुख छह भेद हैं—सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, संदिग्ध तथा हेतुहेतुमद् भूतकाल।
- वर्तमानकाल के प्रमुख तीन भेद हैं—सामान्य, अपूर्ण तथा संदिग्ध वर्तमानकाल।
- भविष्यतकाल के प्रमुख दो भेद हैं—सामान्य तथा संभाव्य भविष्यतकाल।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. क्रिया के बीते हुए समय में होने की जानकारी किस काल से मिलती है?

भूतकाल से   वर्तमानकाल से   भविष्यतकाल से

ख. 'सुप्रिया दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम आई।' यह किस काल का उदाहरण है?

सामान्य वर्तमानकाल का   सामान्य भूतकाल का   सामान्य भविष्यतकाल का

2. निम्नांकित वाक्यों को वर्तमानकाल में बदलिए।

क. व्यापारी ने बहुत सारा सामान खरीदा। व्यापारी बहुत सारा सामान खरीद रहा है।

ख. गरमी में मुझे नीबू-पानी पीना पसंद था। ________

ग. मज़दूर ईंटें उठा रहा था। ________

घ. रेगिस्तान में बड़े-बड़े रेत के टीले बन गए। ________

ङ. मेले के लिए ऊँटों को सजाया गया। ________

3. अपूर्ण भूत → रहा था, रहे थे, रही थी

पूर्ण भूत → था, थे, थी

निम्नांकित वाक्यों को अपूर्णभूतकाल में बदलिए।

क. दादाजी ने निर्धनों को खाना खिलाया था। दादाजी निर्धनों को खाना खिला रहे थे।

ख. ग्वाले ने गाय को चारा डाला था। ________

ग. बाँसुरीवादक ने बाँसुरी बजाने का अभ्यास किया था। ________

घ. सभी ने मिलकर आलमारी हटाई थी। ________

ङ. घोड़ा रातभर हिनहिनाया था। ________

4. संदिग्ध भूतकाल को संदिग्ध वर्तमानकाल में बदलिए।

संदिग्ध भूतकाल (चुका, चुके, चुकी)   संदिग्ध वर्तमानकाल (रहा, रहे, रही)

क. हमारा घर बन चुका होगा। हमारा घर बन रहा होगा।

ख. वह माँ से मिलने जा चुका होगा। ________

ग. वह कार चलाना सीख चुका होगा। ________

घ. समारोह आरंभ हो चुका होगा। ____________________

ङ. किसान फ़सल काट चुके होंगे। ____________________

5. **सामान्य वर्तमानकाल को सामान्य भविष्यतकाल में बदलिए।**

सामान्य वर्तमानकाल (ता, ते, ती/ है, हैं) सामान्य भविष्यतकाल (गा, गे, गी)

क. फूल बाग को महकाता है। फूल बाग को महकाएगा।

ख. माँ अगरबत्तियाँ जलाती हैं। ____________________

ग. माली पौधों को पानी देता है। ____________________

घ. नंदिता पक्षियों को दाना खिलाती है। ____________________

ङ. आसमान में तारे टिमटिमाते हैं। ____________________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. सामान्य भूतकाल तथा आसन्न भूतकाल में क्या अंतर है?

ख. हेतुहेतुमद् भूतकाल किसे कहते हैं? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

काल के सभी रूपों की पहचान के लिए दिए गए तरीके से एक चार्ट बनाकर कक्षा में लगाइए।

भूतकाल	सामान्य भूतकाल	आ, ई, ए, या
	आसन्न भूतकाल	आ, ई, ए, या + है, हैं
	पूर्ण भूतकाल	था, थे, थी
	अपूर्ण भूतकाल	रहा, रहे, रही + था, थे, थी
	संदिग्ध भूतकाल	चुका होगा, चुके होंगे, चुकी होगी
	हेतुहेतुमद् भूतकाल	यदि, तो + ता, ते, ती
वर्तमानकाल	सामान्य वर्तमानकाल	ता, ते, ती + है, हैं
	अपूर्ण वर्तमानकाल	रहा, रहे, रही + है, हैं, हूँ
	संदिग्ध वर्तमानकाल	रहा, रहे, रही + होगा, होगी
भविष्यतकाल	सामान्य भविष्यतकाल	ए, एँ, ऊँ + गा, गे, गी
	संभाव्य भविष्यतकाल	ए, एँ

जाना-समझा

काल का ज्ञान क्रिया द्वारा ही होता है।

22 वाच्य

खरगोश तेज़ दौड़ता है। खरगोश के द्वारा छतरी चुराई गई। लड़की से दौड़ा नहीं जाता।

उपर्युक्त वाक्यों के आधार पर सही कथन पर ✓ लगाइए।

- पहले वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार हुआ है।
- दूसरे वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार हुआ है।
- तीसरे वाक्य में क्रिया का प्रयोग भाव के अनुसार हुआ है।

उपर्युक्त सभी कथन सही हैं, क्योंकि क्रिया का लिंग, वचन तथा पुरुष क्रिया के मुख्य विषय के अनुसार होता है।

> क्रिया का वह रूप, जिससे पता चले कि वाक्य में क्रिया कर्ता, कर्म अथवा भाव में से किसके अनुरूप प्रयोग हुई है, वाच्य कहलाता है।

वाच्य के भेद

वाच्य के प्रमुख तीन भेद हैं—1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य

माँ	रसगुल्ले	बनाती है।
↓	↓	↓
कर्ता	कर्म	क्रिया
↓	↓	↓
स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
↓	↓	↓
एकवचन	बहुवचन	एकवचन

उपर्युक्त वाक्य में क्रिया का लिंग तथा वचन, कर्ता के लिंग तथा वचन के अनुकूल है। दोनों स्त्रीलिंग तथा एकवचन हैं।

जहाँ क्रिया कर्ता से संबंधित होती है तथा उसका लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होता है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है।

सोचो और बताओ उदाहरण की भाँति कर्तृवाच्य की पहचान कीजिए।

	कर्ता		क्रिया	
क. गाय चारा खाती है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______
ख. धोबिन कपड़े धोती है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______
ग. रुचिरा लेख लिखती है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______
घ. लड़की स्कूटर चलाती है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______
ङ. सोनिया शंख बजाती है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______

2. **कर्मवाच्य**

बच्चों द्वारा	फुटबॉल	उछाली गई।
↓	↓	↓
कर्ता	कर्म	क्रिया
↓	↓	↓
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
↓	↓	↓
बहुवचन	एकवचन	एकवचन

उपर्युक्त वाक्य में क्रिया का लिंग तथा वचन, कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार है। दोनों स्त्रीलिंग तथा एकवचन हैं। जहाँ क्रिया का संबंध कर्म से होता है तथा क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार होता है, वहाँ कर्मवाच्य होता है।

सोचो और बताओ उदाहरण की भाँति कर्मवाच्य की पहचान कीजिए।

	कर्म		क्रिया	
क. छात्रों द्वारा परीक्षा दी जाती है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______
ख. दादाजी द्वारा पुस्तकें पढ़ी जाती हैं।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______
ग. पुजारी द्वारा पूजा की जाती है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______
घ. नर्तकी द्वारा नृत्य दिखाया जाता है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______
ङ. मालिन द्वारा हार बनाया जाता है।	लिंग ______	वचन ______	लिंग ______	वचन ______

3. **भाववाच्य**

उससे चला नहीं जाता।
↓
क्रिया → अकर्मक क्रिया → पुल्लिंग → एकवचन
↓
इसमें कर्ता तथा कर्म के स्थान पर भाव की प्रधानता है।

जहाँ वाक्य में क्रिया का भाव प्रधान हो, अर्थात क्रिया मुख्य हो तथा क्रिया अकर्मक, पुल्लिंग और एकवचन में हो, वहाँ भाववाच्य होता है।

सोचो और बताओ उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार भाववाच्य की पहचान कीजिए।

	क्रिया	**लिंग**	**वचन**
क. बच्चे से पढ़ा नहीं जाता।	________	________	________
ख. दादी से बाँटा नहीं जाता।	________	________	________
ग. बीमार से खाया नहीं जाता।	________	________	________
घ. उससे कहा नहीं जाता।	________	________	________
ङ. माँ से सिला नहीं जाता।	________	________	________

वाच्य-परिवर्तन

एक वाच्य से दूसरे वाच्य में परिवर्तन करना वाच्य-परिवर्तन कहलाता है।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तित करते समय निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- क्रिया सकर्मक होनी चाहिए, क्योंकि कर्मवाच्य में कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार ही क्रिया का लिंग तथा वचन होता है।
- कर्म के साथ लगे कारक-चिह्न को हटा देना चाहिए।
- कर्ता के साथ से द्वारा अथवा के द्वारा जोड़ देते हैं।
- क्रिया तथा कर्म का लिंग तथा वचन समान कर दिया जाता है।
- क्रिया के साथ जाना क्रिया का रूप भी जोड़ दिया जाता है।

कर्तृवाच्य	दरज़ी	–	कमीज़	को	सिलता है।
	↓	↓	↓	↓	↓
कर्मवाच्य	दरज़ी	के द्वारा	कमीज़	×	सिली जाती है।

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
बच्चे लीची को खाते हैं।	बच्चों के द्वारा लीची खाई जाती है।
आशिमा गीत गाती है।	आशिमा के द्वारा गीत गाया जाता है।
हम क्रिकेट खेलते हैं।	हमारे द्वारा क्रिकेट खेला जाता है।
लड़के पेड़ लगाते हैं।	लड़कों के द्वारा पेड़ लगाया जाता है।
नर्स दवाई देती है।	नर्स के द्वारा दवाई दी जाती है।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तित करते समय निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- भाववाच्य में क्रिया अकर्मक होती है।

- कर्ता के साथ 'से' विभक्ति चिह्न जोड़ा जाता है।
- क्रिया पुल्लिंग तथा एकवचन में होती है।
- क्रिया को भूतकाल की क्रिया में बदलकर जाना क्रिया का रूप जोड़ दिया जाता है।

कर्तृवाच्य	बच्चा	—	हॉकी	नहीं खेलता।
भाववाच्य	बच्चे	से	×	खेला नहीं जाता।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
बच्चा दौड़ता नहीं है।	बच्चे से दौड़ा नहीं जाता।
वह खाता नहीं है।	उससे खाया नहीं जाता।
वह पुस्तक नहीं पढ़ता है।	उससे पढ़ा नहीं जाता।
वे उठ नहीं पाते।	उनसे उठा नहीं जाता।
मानवी मेरे घर नहीं आती।	मानवी से आया नहीं जाता।

हमने जाना

- जिस क्रिया रूप से पता चले कि वाक्य में क्रिया कर्ता, कर्म अथवा भाव में से किसके अनुरूप प्रयोग हुई है, उसे वाच्य कहते हैं।
- वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. जहाँ क्रिया का संबंध कर्ता से हो, वहाँ कौन-सा वाच्य होता है?

कर्तृवाच्य कर्मवाच्य भाववाच्य

ख. जहाँ क्रिया का संबंध कर्म से हो, वहाँ कौन-सा वाच्य होता है?

कर्मवाच्य भाववाच्य कर्तृवाच्य

2. वाच्य को पहचानकर नाम लिखिए।

क. घोड़ा हिनहिनाता है। ____कर्तृवाच्य____

ख. अक्षय के द्वारा समोसे खाए जाते हैं। ________

ग. माँ चाकू से फल काटती है। ________

घ. कवि के द्वारा कविताएँ सुनाई गईं। ________

ङ. दर्द के कारण उससे चला नहीं जाता। ________

3. कर्मवाच्य में बदलिए।

क. दादाजी पुस्तक पढ़ते हैं। दादाजी के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

ख. मोहन हॉकी खेलता है। ____________

ग. मैकेनिक पाइप ठीक करता है। ____________

घ. सब दीपावली पर फुलझड़ियाँ चलाते हैं। ____________

ङ. माँ चावल बीन रही हैं। ____________

च. आदित्य कंप्यूटर पर गेम खेलता है। ____________

4. कर्तृवाच्य में बदलिए।

क. मेरे द्वारा डोसा खाया जाता है। मैं डोसा खाता हूँ।

ख. पुजारी के द्वारा मंदिर में पूजा की जाती है। ____________

ग. रवीश के द्वारा छुट्टी की घंटी बजाई जाती है। ____________

घ. माँ के द्वारा मेरे कपड़े प्रेस किए जाते हैं। ____________

ङ. बंदर के द्वारा केला छीला जाता है। ____________

5. भाववाच्य में बदलिए।

क. पक्षी आसमान में नहीं उड़ते। पक्षी से उड़ा नहीं जाता।

ख. सत्या आइसक्रीम नहीं खाती। ____________

ग. सभी ने फ़िल्म नहीं देखी। ____________

घ. दादाजी से कुरसी पर बैठा नहीं जाता। ____________

ङ. भाई पत्र नहीं लिखता। ____________

कार्यकलाप

विद्यार्थी कुछ वाक्यों का चयन कर उन्हें तीनों वाच्यों में बदलें; जैसे—

मानवी पत्र लिखती है।	मानवी द्वारा पत्र लिखा जाता है।	मानवी से लिखा नहीं जाता।
कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**	**भाववाच्य**

जाना-समझा

कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक अथवा सकर्मक, कर्मवाच्य में क्रिया सकर्मक तथा भाववाच्य में क्रिया अकर्मक होती है।

23 अविकारी शब्द–क्रियाविशेषण

कोष्ठक में दिए गए संकेत के आधार पर वाक्य परिवर्तित कीजिए।

- वह धीरे-धीरे झूला झूल रही है। (लिंग) वह धीरे-धीरे झूला झूल रहा है।
- वह धीरे-धीरे झूला झूल रहा है। (वचन) ____________________
- उसने धीरे-धीरे झूला झुलाया। (कारक) ____________________
- मैं धीरे-धीरे झूला झूलता था। (काल) ____________________
- मानवी धीरे-धीरे झूला झूलती है। (वाच्य) ____________________
- तुम धीरे-धीरे झूला झूलते हो। (पुरुष) ____________________

उपर्युक्त वाक्यों में आए 'धीरे-धीरे' शब्द में लिंग, वचन, कारक, काल, वाच्य तथा पुरुष के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं आया।

> ऐसे शब्द, जिनमें लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल तथा वाच्य के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं आता, अविकारी शब्द कहलाते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण → विकारी शब्द

क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक → अविकारी शब्द

क्रियाविशेषण

जिस प्रकार संज्ञा की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, उसी प्रकार क्रिया की विशेषता बतानेवाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

मेरे सामने एक लाल गुलाब अचानक आ गिरा।

लाल ↓ विशेषण, गुलाब ↓ संज्ञा, अचानक ↓ क्रियाविशेषण, आ गिरा ↓ क्रिया

गुलाब कैसा → लाल गिरा कैसे → अचानक

क्रियाविशेषण के भेद

क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं—1. स्थानवाचक 2. कालवाचक 3. रीतिवाचक 4. परिमाणवाचक।

1. स्थानवाचक क्रियाविशेषण

जिन शब्दों से यह पता चले कि क्रिया किस स्थान पर हो रही है, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

पहचानें क्रिया के साथ 'कहाँ' लगाकर।

- मैं बाहर बैठा हूँ।

  कहाँ बैठा हूँ → बाहर → स्थान → स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

स्थानवाचक क्रियाविशेषण स्थिति तथा दिशा के सूचक होते हैं।

स्थितिवाचक यहाँ, वहाँ, अंदर, साथ, नीचे, ऊपर, बाहर, निकट, भीतर इत्यादि।

दिशासूचक दाएँ, बाएँ, इधर, उधर, इस ओर, चारों ओर इत्यादि।

- यह गमला उठाकर यहाँ रख दो।
- तुम्हारे कपड़े अंदर रखे हैं।
- सड़क पार करते समय दाएँ देखना।
- मैंने तुम्हारा बस्ता इधर रखा था।

2. कालवाचक क्रियाविशेषण

जिन शब्दों से क्रिया के होने के समय का ज्ञान हो, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

पहचानें क्रिया के साथ 'कब' लगाकर।

- तुम्हें अपने घर तुरंत जाना है।

  कब जाना है? → तुरंत   तुरंत → समय → कालवाचक क्रियाविशेषण

कालवाचक क्रियाविशेषण समय, अवधि तथा बारंबारता के सूचक होते हैं।

समयवाचक अभी, आज, कल, पहले, तुरंत, अकसर, परसों इत्यादि।

अवधिसूचक आजकल, दिनभर, सदा, नित्य, लगातार, दिन-रात इत्यादि।

बारंबारता प्रतिदिन, कई बार, हर बार, बहुधा, बार-बार इत्यादि।

- मुझे यह पुस्तक अभी चाहिए।
- यह लड़का दिनभर सोता रहता है।
- मैंने तुम्हें वहाँ आते-जाते कई बार देखा है।
- दो दिन से बारिश दिन-रात हो रही है।

3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

जिन शब्दों से पता चले कि क्रिया किस ढंग, रीति या तरीके से हुई है, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

पहचानें क्रिया के साथ 'कैसे' लगाकर।

- उसने सभी प्रश्नों के उत्तर फटाफट लिख दिए।

  कैसे लिख दिए? → फटाफट रीति → रीतिवाचक क्रियाविशेषण

रीतिवाचक क्रियाविशेषण से प्रकार, निश्चय, अनिश्चय, स्वीकार, कारण, निषेध इत्यादि का बोध होता है।

प्रकार अचानक, ऐसे, वैसे, धीरे, स्वतः, यथाशक्ति, तेज़ी से, एकदम, ध्यानपूर्वक इत्यादि।

निश्चय निस्संदेह, अवश्य, बेशक, ज़रूर, अलबत्ता, सचमुच इत्यादि।

अनिश्चय शायद, कदाचित इत्यादि।

स्वीकार सच, ठीक, हाँ, जी इत्यादि।

कारण इसलिए, क्यों इत्यादि।

निषेध न, नहीं, मत इत्यादि।

- सड़क पर स्कूटर धीरे चलाना।
- वह चलते-चलते अचानक गिर पड़ा।
- यह बात तुम उसे ज़रूर बता देना।
- उसने कहा अवश्य था, परंतु कदाचित ही आए।
- दीवार पर मत लिखो।

सोचो और बताओ

क्रियाविशेषण रेखांकित कर भेद का नाम लिखिए।

क. वह तुम्हारे साथ बैठी थी। ______

ख. तुम अपना सामान तुरंत हटाओ। ______

ग. वह चोर भागकर इस ओर गया है। ______

घ. मैं अपने मित्रों के बारे में सदैव सोचता रहा हूँ। ______

ङ. तुम कुछ देर ऐसे ही बैठना। ______

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

जिन शब्दों से क्रिया के नाप-तौल अथवा परिमाण संबंधी विशेषता का पता चले, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

पहचानें क्रिया के साथ 'कितना' लगाकर।

- उनके घर का आँगन अत्यंत खुला है।

  कितना खुला है? → अत्यंत परिमाण → परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अधिकता, न्यूनता, पर्याप्त, तुलना तथा श्रेणी का बोध करवाते हैं।

अधिकता बड़ा, खूब, अति, बहुत, सर्वथा, अत्यंत, बिलकुल इत्यादि।

न्यूनता थोड़ा, ज़रा, कुछ, लगभग, प्रायः इत्यादि।

पर्याप्त	काफ़ी, बस, केवल, बराबर, ठीक इत्यादि।
तुलना	इतना, उतना, जितना, कितना, अधिक, कम इत्यादि।
श्रेणी	थोड़ा-थोड़ा, बारी-बारी से, एक-एक करके, यथाक्रम इत्यादि।

- कल हम सबने मिलकर खूब मज़े किए।
- इस कहानी के बारे में कुछ बताना।
- जितना पचा सको, उतना खाना।
- अभी तुम्हारा पैर पूरी तरह ठीक नहीं हुआ, थोड़ा-थोड़ा चलना।

हमने जाना

- क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता का बोध करवाते हैं।
- क्रियाविशेषण के चार भेद हैं—कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक तथा परिमाणवाचक।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. अविकारी शब्द कौन-सा है?

   संज्ञा विशेषण क्रियाविशेषण

   ख. 'मुझे देखकर वह नीचे उतर आया।' इस वाक्य में क्रियाविशेषण कौन-सा है?

   देखकर नीचे उतर आया

2. **निम्नांकित वाक्यों में आए क्रियाविशेषण छाँटकर लिखिए।**

   क. सैनिकों ने घर को चारों ओर से घेर लिया। __________

   ख. आज वर्षा दिनभर होने के आसार हैं। __________

   ग. व्यायाम सेहत के लिए ठीक है। __________

   घ. ये रुपये तुम दोनों बराबर बाँट लो। __________

   ङ. मेरी सारी परेशानियाँ स्वतः समाप्त हो गईं। __________

3. **निम्नांकित वाक्यों में आए क्रियाविशेषणों को रेखांकित कर उनके भेदों के नाम लिखिए।**

   क. ये कपड़े उठाकर नीचे रख दो। __________

   ख. मुझे अपनी गलती का अहसास सदा होता रहेगा। __________

ग. मालिक को देखकर कुत्ता तेज़ी-से भागकर आया। ____________

घ. पार्क में बच्चे एक-एक करके झूल रहे थे। ____________

ङ. वह मुझे देखकर अचानक चुप हो गया। ____________

च. मुझे पनीर की सब्ज़ी बहुत अच्छी लगती है। ____________

छ. अपने शिक्षक की सीख ध्यानपूर्वक सुनो। ____________

4. उचित क्रियाविशेषण शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. घर के अंदर नहीं, बल्कि ____________ खेलना चाहिए।

ख. यह गमला उठाकर ____________ रख दो।

ग. मैंने तुम्हें ईमानदारी से काम करने की सलाह ____________ दी है।

घ. एक-एक पाठ को ____________ पढ़ना।

ङ. तुम आजकल बहुत ____________ खाते हो।

कम
इधर
बाहर
कई बार
ध्यानपूर्वक

5. दिए गए क्रियाविशेषणों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

क. साथ ____________

ख. अकसर ____________

ग. बेशक ____________

घ. केवल ____________

ङ. शायद ____________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. अविकारी शब्द किसे कहते हैं?

ख. रीतिवाचक तथा कालवाचक क्रियाविशेषण में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

विद्यार्थी सभी क्रियाविशेषण अलग-अलग पर्ची पर लिखें। पर्चियों को बंद करके एक खाली डिब्बे में डालें। विद्यार्थी बारी-बारी से एक-एक पर्ची उठाएँ, उसपर लिखे क्रियाविशेषण को पढ़ें। पहचानें कि वह क्रियाविशेषण का कौन-सा भेद है। उससे एक-एक वाक्य बनाएँ। सभी विद्यार्थी इस खेल को खेलेंगे।

जाना-समझा

अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहते हैं।

24 संबंधबोधक

चित्र के आधार पर इन पंक्तियों को पूरा कीजिए।

- मेरा घर नदी ———— है।
- घर ———— नारियल के दो पेड़ लगे हैं।
- मैं अपनी बेटी ———— जा रही हूँ।
- मुझे अपनी बेटी ———— कुछ खरीदना है।
- हम नाव ———— नदी पार करेंगे।
- नाव तट ———— आएगी।

उपर्युक्त पंक्तियों में क्रमशः के पास, के बाहर, के साथ, के लिए, के द्‌वारा, के निकट शब्द आएँगे। ये शब्द वाक्य में आए अन्य शब्दों का परस्पर संबंध बताते हैं।

> वे अविकारी शब्द, जो संज्ञा या सर्वनाम के बाद लगकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से स्पष्ट करते हैं, संबंधबोधक कहलाते हैं।

पहचानें ▪ संबंधबोधक शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगते हैं।

▪ संबंधबोधकों के साथ संबंध कारक का विभक्ति चिह्‌न का, के, की अथवा से लगा होता है।

अर्थ के आधार पर संबंधबोधक के निम्नलिखित भेद हैं—

1. **कालवाचक** पहले, बाद, आगे, पीछे, पूर्व, पश्चात, उपरांत इत्यादि।
   - भोजन के उपरांत कुछ देर तक विश्राम करना।
2. **स्थानवाचक** अंदर, बाहर, ऊपर, नीचे, भीतर, पास, सामने, निकट, यहाँ इत्यादि।
   - स्टेडियम के बाहर आग लगी थी।
3. **दिशावाचक** आसपास, आरपार, ओर, तरफ़, इधर, उधर, चारों ओर इत्यादि।
   - समुद्र तट के आसपास तेज़ धूप थी।
4. **साधनवाचक** द्‌वारा, ज़रिए, सहारे, मार्फ़त इत्यादि।
   - डाक के मार्फ़त कुछ पुस्तकें तुम्हें भेजी हैं।

5. हेतुवाचक कारण, खातिर, वास्ते, निमित्त, लिए इत्यादि।

- बच्चों के लिए हमने नए कपड़े खरीदे।

6. सादृश्यवाचक तुल्य, योग्य, समान, तरह, अनुरूप, सदृश, भाँति, बराबर इत्यादि।

- पृथ्वी के समान किसी अन्य ग्रह पर जल नहीं है।

7. विरोधवाचक विपरीत, उलटे, विरुद्ध, खिलाफ़ इत्यादि।

- नियमों के विरुद्ध कार्य नहीं करना चाहिए।

8. **सहचरवाचक** संग, साथ, सहित, समेत इत्यादि।

- परिश्रम के साथ ज्ञान अर्जन से सफलता अवश्य मिलती है।

9. तुलनावाचक अपेक्षा, सामने, आगे इत्यादि।

- अंग्रेज़ी की अपेक्षा हिंदी अधिक वैज्ञानिक भाषा है।

सोचो और बताओ

इन संबंधबोधकों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

क. के पीछे ______________________

ख. के सहारे ______________________

ग. के लिए ______________________

10. व्यतिरेकवाचक बिना, अलावा, अतिरिक्त, बगैर, सिवा, रहित इत्यादि।

- इंजन के बिना रेलगाड़ी नहीं चलेगी।

11. **विनिमयवाचक** बदले, एवज, जगह इत्यादि।

- तुम इस पुस्तक के बदले मुझे दूसरी पुस्तक दे दो।

12. पृथकतावाचक से दूर, से परे इत्यादि।

- बच्चा माँ से दूर नहीं रह पाएगा।

हमने जाना

- संबंधबोधक संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से स्पष्ट करते हैं।
- संबंधबोधक काल, स्थान, दिशा, साधन इत्यादि का बोध करवाते हैं।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. 'घर के चारों ओर हरियाली है।' वाक्य में प्रयुक्त संबंधबोधक कौन-सा है?

दिशावाचक　　　स्थानवाचक　　　कालवाचक

ख. 'उसे पढ़ाई की अपेक्षा खेल पसंद है।' वाक्य में प्रयुक्त संबंधबोधक कौन-सा है?

विरोधवाचक पृथकतावाचक तुलनावाचक

2. संबंधबोधक रेखांकित कर भेद का नाम लिखिए।

क. माँ के तुल्य कोई महान नहीं होता। ____________

ख. देश की खातिर सर्वस्व समर्पित है। ____________

ग. सीढ़ी के सहारे छत पर चढ़ जाओ। ____________

घ. वसंत पंचमी के बाद सरदी कम हो जाएगी। ____________

ङ. कानून के विरुद्ध कार्य करने पर दंड मिलेगा। ____________

च. परिवार के साथ विवाह-समारोह में पधारें। ____________

3. संबंधबोधकों को रेखांकित कर उनके स्थान पर अन्य संबंधबोधक लिखिए।

क. सहपाठी के साथ कक्षा में जाओ। ____________

ख. कार के आगे बस रुकी हुई थी। ____________

ग. समुद्र तट के पास लोग टहल रहे थे। ____________

घ. डाकिए के द्वारा डाक बाँटी जाती है। ____________

ङ. दवा के लिए पैसे भी तो चाहिए। ____________

कार्यकलाप

कुछ अविकारी शब्द ऐसे होते हैं, जिन्हें संबंधबोधक तथा क्रियाविशेषण दोनों रूपों में प्रयोग किया जा सकता है; जैसे—

संबंधबोधक (संज्ञा तथा सर्वनाम के साथ)	**क्रियाविशेषण (क्रिया के साथ)**
घर के बाहर ट्रक खड़ा है।	ट्रक बाहर खड़ा है।
आलमारी के अंदर रुपये पड़े हैं।	आलमारी अंदर रखी है।
तालाब के चारों ओर दीवार बनाई है।	गली में पानी चारों ओर बिखरा है।
तुम्हारी कार के आगे मेरी कार है।	उसने कार आगे खड़ी कर दी।

ऐसे ही कुछ शब्द ढूँढ़कर उनका दोनों रूपों में प्रयोग कीजिए।

जाना-समझा

संज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा क्रियाविशेषणों से बने संबंधबोधक यौगिक संबंधबोधक कहलाते हैं।

25 समुच्चयबोधक

चित्र के आधार पर रिक्त स्थानों को भरिए।

टीना __________ मीना हॉकी का अभ्यास कर रही हैं। शेखर __________ आनंद फुटबॉल खेल रहे हैं। मैच स्टेडियम में होगा __________ सभी विद्यार्थी देख सकें।

उपर्युक्त वाक्यों में 'और', 'तथा', 'ताकि' द्वारा शब्दों तथा वाक्यों को जोड़ा गया है।

वे अविकारी शब्द, जो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ते हैं, समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

समुच्चयबोधक के भेद

समुच्चयबोधक के प्रमुख दो भेद हैं—समानाधिकरण समुच्चयबोधक तथा व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक

मुख्य पदों को जोड़नेवाले पद समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं—

1. **संयोजक** ये दो समान वाक्यों या पदों को जोड़ते हैं; जैसे—
   - मुझे और विकास को घर जाना है।
   - मन में भय था तथा बुरे-बुरे विचार आ रहे थे।
   - झूठ बोलना व बेईमानी करना दोनों ही पाप हैं।
   - उसने भूखे को भोजन करवाया एवं उसे कुछ पैसे दिए।

2. **विभाजक** ये दो पदों अथवा शब्दों में विकल्प प्रदान करते हैं; जैसे—
   - तुम पुस्तक पढ़ना पसंद करते हो या कंप्यूटर चलाना?
   - तुम घर जाओ अथवा मुझे जाने दो।

3. विरोधदर्शक ये दो पदों या वाक्यों में विरोध दर्शाते हैं; जैसे—
   - मैंने उसे बुलाया, पर वह नहीं आया।

- उसने मुझे बहुत समझाया, परंतु मुझे समझ नहीं आया।
- मैं तुम्हें पैसे दे दूँगा, लेकिन मेरी एक शर्त है।

सोचो और बताओ

विरोधदर्शक संबंधबोधकों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए।

क. मगर ______________________

ख. वरन ______________________

ग. बल्कि ______________________

4. परिणामदर्शक ये दर्शाते हैं कि एक वाक्य दूसरे वाक्य का परिणाम है; जैसे—
   - मेरा स्वेटर फट गया था, इसलिए नया खरीदा।
   - मैं बीमार हूँ, अतः विद्यालय नहीं आ सकता।
   - तुमने मेहनत की थी, सो तुम पास हुए।
   - मुझसे गलती से शीशा टूट गया था, अतएव मेरा ज़ुर्माना माफ़ कर दीजिए।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक

व्यधिकरण समुच्चयबोधक मुख्य तथा आश्रित वाक्यों को जोड़ते हैं। इसके प्रमुख चार भेद हैं—

1. **कारणवाचक** ये किसी कार्य के होने या न होने का कारण दर्शाते हैं; जैसे—
   - तुम इतना नहीं चल सकते, क्योंकि तुम बीमार हो।
   - मैं तुमपर विश्वास नहीं करता, इसलिए कि तुम सदा झूठ बोलते हो।
   - तुमने वह खिलौना उठाया, जोकि तुम्हारा नहीं था।

2. उद्देश्यवाचक यह समुच्चयबोधक उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं; जैसे—
   - मैं दिन-रात मेहनत करता हूँ, ताकि तुम कुछ बन सको।
   - मैंने कार इसलिए भेजी कि तुम जल्दी पहुँच सको।
   - वह उपहार खरीदना, जो उसे अच्छा लगे।
   - मैं चाहता हूँ, कि तुम सदा उन्नति करो।

3. **संकेतवाचक** ये एक कार्य का होना, दूसरे कार्य पर आश्रित होना दर्शाते हैं; जैसे—
   - जो तुम ध्यान से पढ़ोगे, तो अच्छे नंबर लाओगे।
   - यदि आज बारिश हुई, तो मैं नहीं आऊँगा।
   - यद्यपि तुम योग्य हो, तथापि अभी अनुभवहीन हो।
   - चाहे जितना भी प्रयास करो, परंतु मुझसे जीत नहीं सकती।

4. स्वरूपवाचक ये आश्रित वाक्य का अर्थ स्पष्ट करते हैं; जैसे—
   - निबंध, अर्थात भली प्रकार से बँधा हुआ।
   - हरी घास पर ओस ऐसी लग रही थी, मानो मोती जड़े हों।
   - वह तुम्हारा अग्रज है, यानि वह तुमसे बड़ा है।

हमने जाना

- समुच्चयबोधक दो पदों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ते हैं।
- समुच्चयबोधक दो प्रकार के होते हैं—1. समानाधिकरण 2. व्यधिकरण।
- समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद हैं—संयोजक, विभाजक, विरोधदर्शक तथा परिणामदर्शक।
- व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद हैं—कारणवाचक, उद्देश्यवाचक, संकेतवाचक तथा स्वरूपवाचक।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. मुख्य पदों को जोड़नेवाले समुच्चयबोधक क्या कहलाते हैं?

व्यधिकरण समुच्चयबोधक　　　　समानाधिकरण समुच्चयबोधक

ख. आश्रित वाक्य का अर्थ स्पष्ट करनेवाले समुच्चयबोधक क्या कहलाते हैं?

स्वरूपवाचक समुच्चयबोधक　　　　संकेतवाचक समुच्चयबोधक

2. वाक्यों में आए समुच्चयबोधकों को छाँटकर लिखिए।

क. आप खाना खाएँगे अथवा चाय पीएँगे। ____________

ख. प्रश्न बहुत सरल है, परंतु उत्तर सही नहीं आ रहा। ____________

ग. तुम्हारी पुस्तक फट गई है, अतः तुम मेरी रख लो। ____________

घ. मैं इसे नहीं खाऊँगा, इसलिए कि यह बहुत मीठा है। ____________

ङ. यदि तुम आज नहीं आए, तो मैं तुमसे बात नहीं करूँगा। ____________

3. समुच्चयबोधक शब्दों के द्वारा दोनों वाक्यों को जोड़कर लिखिए।

क. मुझे हॉकी खेलनी है। अराधना को भी हॉकी खेलनी है। ____________

ख. तुम कार से जाओगे? तुम बस से जाओगे? ____________

ग. यह इलाका बहुत सुनसान है। यह इलाका बहुत सुंदर है। ____________

घ. कमरे में बहुत अँधेरा है। मैं पढ़ नहीं सकता। ____________

ङ. तुम यहाँ काम करो। कुछ अनुभव मिलेगा। ____________

4. सही समुच्चयबोधक शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों को भरिए।

क. खेलना ________ पढ़ना मुझे दोनों ही प्रिय हैं। (और / अथवा)

ख. आप बाहर बैठेंगे ________ अंदर आराम करेंगे? (तथा / या)

ग. रास्ता ढलानदार था, ________ फिसलन नहीं थी। (अतः / पर)

घ. तुम हरी सब्जियाँ नहीं खाते ________ तुम कमज़ोर हो। (क्योंकि / इसलिए)

ङ. पत्ते ऐसे हिल रहे थे, ________ झूम रहे हों। (मानो / यानि)

कार्यकलाप

उपर्युक्त चित्र को देखिए तथा अलग-अलग समुच्चयबोधकों का प्रयोग करते हुए चित्र-वर्णन कीजिए।

____

____

____

____

____

____

____

____

जाना-समझा

समुच्चयबोधकों को योजक शब्द भी कहते हैं।

26 विस्मयादिबोधक

चित्र देखकर मन के भावों को व्यक्त करते शब्द लिखिए।

» ____________________ » ____________________

» ____________________ » ____________________

किसी परिस्थिति में मन के भावों को व्यक्त करते जो शब्द निकलते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं, अर्थात विस्मय का बोध करवानेवाले शब्द।

ऐसे अविकारी शब्द, जो विस्मयादि भावों का बोध करवाते हैं, विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं।

पहचानें
- इनका प्रयोग वाक्य के आरंभ में होता है।
- इनके पीछे '!' चिह्न लगा होता है।

विस्मयादिबोधक के रूप

विस्मयादिबोधक का प्रयोग निम्नांकित रूपों में होता है—

विस्मयबोधक	अरे, क्या, ओहो, हैं	शोकबोधक	हाय, ओफ़, ओह, ऊह
हर्षबोधक	आहा, वाह, शाबाश, खूब	आशीर्वादबोधक	दीर्घायु हो, सुखी रहो, यशस्वी बनो, सौभाग्यवती भव
घृणाबोधक	छिः, हट, दुर्, धिक्	भयबोधक	बाप रे, बाप-रे-बाप, हाय, ओह
स्वीकृतिबोधक	हाँ, जी हाँ, अच्छा, ठीक	संबोधनबोधक	अरे, अजी, सुनो, हे
चेतावनीबोधक	सावधान, होशियार, खबरदार, चुप	अनुमोदनबोधक	ठीक, वाह, अच्छा, हाँ-हाँ

अरे! तुमने नई कार खरीदी है।

अहा! मिठाई खाकर मज़ा आ गया।

छि:! तुम्हारे कपड़े कितने गंदे हैं।

सावधान! बर्फ़ पर पैर फिसल सकता है।

सुखी रहो! ईश्वर तुम्हारी सभी इच्छाएँ पूर्ण करें।

बाप रे! यह तो बहुत गहरी घाटी है।

अरे! मेरी बात तो सुनते जाओ।

ठीक! आपके बताए हुए तरीके से ही काम करूँगा।

सोचो और बताओ

इन विस्मयादिबोधकों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. वाह! ____________________

ख. ओफ़! ____________________

ग. अरे! ____________________

घ. बाप-रे-बाप! ____________________

निपात

निपात अव्यय होते हैं। ये किसी शब्द के बाद लगकर उसे बल प्रदान करते हैं। वाक्य में इनका कोई निश्चित स्थान नहीं होता। इन्हें वाक्य में कहीं भी प्रयोग किया जा सकता है। इनका कोई अर्थ नहीं होता; जैसे—

- मैंने सबसे पहले तुम्हें ही बुलाया था।
- यह बात तुम्हारे तक ही रहनी चाहिए।
- मुझे तुमसे कोई लेना-देना नहीं, मुझे केवल मेरे पैसे चाहिए।
- तुम भी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हो।
- गाँव भर में आपकी ही चर्चा हो रही है।
- पढ़ने के लिए पुस्तकें तो तुम्हें खरीदनी पड़ेंगी।
- आज खाना बहुत ही स्वादिष्ट बना है।

हमने जाना

- भावों को प्रकट करनेवाले शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।
- विस्मयादिबोधक शब्द वाक्यों के आरंभ में लगते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. हर्ष का बोध करवानेवाला विस्मयादिबोधक कौन-सा है?

क्या!　　　　वाह!　　　　आह!

ख. भय का बोध करवानेवाला विस्मयादिबोधक कौन-सा है?

बाप रे!　　　　वाह!　　　　धिक्!

2. विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य पूरे कीजिए।

क. ____________ कितनी बड़ी चील।

ख. ____________ आगे सड़क पर पानी भरा है।

ग. ____________ तुमने चाय गिराकर मेरे कपड़े गंदे कर दिए।

घ. ____________ यह कहानी वास्तव में बहुत अच्छी है।

ङ. ____________ सभी पंक्ति बनाकर चलेंगे।

च. ____________ उसने हमारे विद्यालय में प्रवेश लिया है?

छ. ____________ यह स्कूटर तो बार-बार खराब हो जाता है।

ज. ____________ ईश्वर तुम्हारी सभी मनोकामनाएँ पूरी करें।

झ. ____________ उसके साथ तो सचमुच बहुत बुरा हुआ है।

3. दिए गए विस्मयादिबोधक शब्दों से वाक्य बनाइए।

क. खूब! ____

ख. दुर्! ____

ग. ओफ़! ____

घ. अजी! ____

ङ. चुप! ____

च. ओह! ____

कार्यकलाप

पुरानी पत्र-पत्रिकाओं से कुछ चित्र काटकर चिपकाएँ तथा उनके नीचे विभिन्न भावों को व्यक्त करते वाक्य लिखकर एक अलबम तैयार कीजिए।

जाना-समझा

कभी-कभी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्द भी विस्मयादिबोधक शब्दों के रूप में प्रयोग होते हैं।

- बच्चो! इतनी शरारतें अच्छी नहीं। (संज्ञा)
- आप! आप कब आए? (सर्वनाम)
- सुंदर! अति सुंदर चित्र बना है। (विशेषण)
- चलिए! अब हम भी चलते हैं। (क्रिया)

27 पद-परिचय और पदबंध

चित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- आनेवाले व्यक्ति का क्या नाम है? ____________
- वह कहाँ से आया है? ____________
- वह क्या काम करता है? ____________

जब हम किसी से मिलते हैं, तब अपने बारे में कुछ पंक्तियों में बताते हैं। अपने बारे में बताना परिचय कहलाता है।

शब्द जब वाक्य में प्रयोग होते हैं तथा व्याकरणिक नियमों से बँध जाते हैं, तब उन्हें पद कहा जाता है।

वाक्य में आए सभी पदों का व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण परिचय देना पद-परिचय कहलाता है।

पद-परिचय में वाक्य में प्रयुक्त सभी पदों का परिचय निम्नांकित रूप से दिया जाता है।

संज्ञा का पद-परिचय

- राधिका पढ़ती है।

राधिका	संज्ञा
भेद	व्यक्तिवाचक संज्ञा
लिंग	स्त्रीलिंग
वचन	एकवचन
कारक	कर्ता कारक
क्रिया से संबंध	'पढ़ती है' क्रिया का कर्ता।

- विद्यार्थी दिल्ली में घूमने गए हैं।

विद्यार्थी संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'घूमने गए हैं' क्रिया का कर्ता।

दिल्ली संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'घूमने गए हैं' क्रिया का आधार।

सर्वनाम का पद-परिचय

- वह बहुत सुंदर चित्र बनाता है।

वह	सर्वनाम

भेद	पुरुषवाचक
पुरुष	अन्यपुरुष
लिंग	पुल्लिंग
वचन	एकवचन
कारक	कर्ता कारक
अन्य पदों से संबंध	'बनाता है' क्रिया का कर्ता।

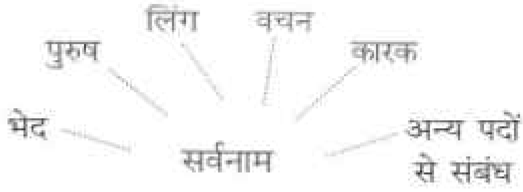

- मुझे खाने के लिए कुछ चाहिए।

मुझे सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तमपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, 'चाहिए' क्रिया का कर्ता।

कुछ सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'चाहिए' क्रिया का कर्म।

सोचो और बताओ

रंगीन शब्द का पद-परिचय लिखिए।

क. मोची जूते की मरम्मत करने लगा।

____

ख. तुम घर के काम में कुछ हाथ बँटाओ।

____

विशेषण का पद-परिचय

- परिश्रमी मनुष्य सदा सुख पाता है।

परिश्रमी	विशेषण
भेद	गुणवाचक विशेषण
लिंग	पुल्लिंग
वचन	एकवचन
कारक	कर्ता कारक
विशेष्य	'मनुष्य' का विशेषण

- ईमानदार व्यक्ति जीवन में उच्चतम स्तर तक पहुँचता है।

ईमानदार विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'व्यक्ति' विशेष्य का विशेषण।

उच्चतम विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, उत्तमावस्था, 'स्तर' विशेष्य का विशेषण।

क्रिया का पद-परिचय

- मैं प्रतिदिन सब्जी लेने जाता हूँ।

लेने जाता हूँ	क्रिया
प्रकार	सकर्मक
अन्य प्रकार	संयुक्त क्रिया
वाच्य	कर्तृवाच्य

पुरुष	उत्तम पुरुष
लिंग	पुल्लिंग
वचन	एकवचन
काल	वर्तमानकाल
कर्ता	मैं
कर्म	सब्ज़ी

- हाथी गन्ना खाकर उठा।

खाकर क्रिया, सकर्मक, पूर्वकालिक, कर्तृवाच्य, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल, कर्ता—हाथी कर्म—गन्ना।

उठा क्रिया, सकर्मक, मुख्य क्रिया, कर्तृवाच्य, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल, कर्ता—हाथी, कर्म—गन्ना।

क्रियाविशेषण का पद-परिचय

- वह अचानक उठ गया।

अचानक	क्रियाविशेषण
भेद	रीतिवाचक
क्रिया, जिसकी विशेषता बताता है	'उठ गया' क्रिया की विशेषता बताता है।

- वह शांतिपूर्वक पढ़ रहा था।

शांतिपूर्वक क्रियाविशेषण, 'पढ़ रहा था' क्रिया की विशेषता बताता है।

सोचो और बताओ

रंगीन शब्द का पद-परिचय लिखिए।

क. लाल गुलाब खिला हुआ है। ____________________

ख. वह खाकर सो गया। ____________________

ग. वह चुपचाप बैठ गया। ____________________

संबंधबोधक का पद-परिचय

- पेड़ के ऊपर चिड़ियों का घोंसला है।

के ऊपर	संबंधबोधक
भेद	स्थानवाचक संबंधबोधक
संबंधी शब्द	'पेड़' तथा 'चिड़ियों का घोंसला' में संबंध बताता है।

- तुम सीढ़ी के सहारे छत पर चढ़ जाओ।

के सहारे संबंधबोधक, साधनवाचक, 'सीढ़ी' तथा 'छत' में संबंध बताता है।

समुच्चयबोधक का पद-परिचय

- बादल गरजेंगे और बिजली चमकेगी।

और समुच्चयबोधक

उपभेद समानाधिकरण

यौगिक शब्द 'बादल गरजेंगे' तथा 'बिजली चमकेगी' वाक्यों को जोड़ रहा है।

उपभेद — यौगिक शब्द — समुच्चयबोधक

- सड़क पर पानी भरा था, इसलिए जूते गीले हो गए।

इसलिए समुच्चयबोधक, व्यधिकरण, पानी भरने तथा जूते गीले होने की प्रक्रिया को जोड़ता है।

विस्मयादिबोधक का पद-परिचय

भाव — विस्मयादिबोधक

- शाबाश! बहुत अच्छा खेले तुम।

शाबाश विस्मयादिबोधक

भाव हर्ष (अच्छा खेलने पर प्रसन्नता)

- छिः कितनी गंदगी फैलाते हो।

छिः विस्मयादिबोधक, घृणाबोधक।

पदबंध

जब कई पद मिलकर एक वाक्यांश का रूप ले लेते हैं, तब उन्हें पदबंध कहते हैं। पदबंध, अर्थात कई पदों को एक साथ बाँधना।

कई पदों से मिलकर बना वाक्यांश, जो एक पद के रूप में कार्य करता है, उसे पदबंध कहते हैं।

- अरुण भाषण प्रतियोगिता में प्रथम आया है। (पद)
- चुपचाप रहनेवाला अरुण भाषण प्रतियोगिता में प्रथम आया है। (पदबंध)

पदबंध के भेद

पदबंध के मुख्य पाँच भेद हैं—

1. संज्ञा पदबंध 2. सर्वनाम पदबंध 3. विशेषण पदबंध 4. क्रिया पदबंध 5. अव्यय पदबंध।

1. संज्ञा पदबंध

जो पदबंध, वाक्य में संज्ञा का कार्य करते हैं, उन्हें संज्ञा पदबंध कहते हैं; जैसे—

- देश के लिए मर मिटनेवाले सिपाही देश का अभिमान हैं।
- फसलों के कटने से संबंधित त्योहार सभी राज्यों में मनाए जाते हैं।
- दिन-रात परिश्रम करनेवाले वैज्ञानिक नए-नए आविष्कार कर रहे हैं।
- माली सरोवर में खिले कमल को देख प्रसन्न हो रहा है।
- सबको हँस-हँसकर देखनेवाला बच्चा 'बेबी शो' में प्रथम आया है।

2. सर्वनाम पदबंध

जो पदबंध, वाक्य में सर्वनाम का कार्य करते हैं, उन्हें सर्वनाम पदबंध कहते हैं; जैसे—

- सदा परोपकार की बातें करनेवाले तुम आज स्वार्थी कैसे हो गए?
- इन सभी गलतियों में से कुछ तुम्हारी भी गलतियाँ हैं।

- मेरे हर अच्छे-बुरे फैसले में साथ देनेवाला कौन आज भी मेरा साथ देगा।
- हमेशा मुसकरानेवाले आप आज उदास क्यों हैं?
- हर किसी की खुशामद करनेवाले उससे तो तुम अच्छे हो।

3. विशेषण पदबंध

जो पदबंध, वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता का बोध करवाते हैं, उन्हें विशेषण पदबंध कहते हैं; जैसे—

- गोल, चौकोर, सुंदर पत्थर गंगा की धारा में बह आए थे।
- उस जैसा चतुर, बुद्धिमान तथा परिश्रमी लड़का पूरी कक्षा में नहीं है।
- उसकी उँगलियाँ बर्फ़ से भी अधिक ठंडी थीं।
- उसके दूध जैसे गोरे रंग को देख सभी दंग रह गए।
- जिराफ़ गरदन ऊपर किए नरम हरे पत्ते खाने लगा।
- दादाजी ने दस साल पुराना कोट निकालकर पहन लिया।

4. क्रिया पदबंध

जो पदबंध, वाक्य में क्रिया के रूप में प्रयोग होते हैं, उन्हें क्रिया पदबंध कहते हैं; जैसे—

- लुटेरा पर्स छीनकर दौड़ गया।
- सिपाहियों ने चोर को घेरकर पकड़ लिया।
- वह इतनी दूर चलकर थक गई।
- दादी रामायण पढ़कर गुनगुनाने लगीं।
- धोबिन कपड़े धोकर निचोड़ने लगी।

5. अव्यय पदबंध

जो पदबंध, वाक्य में अव्यय के रूप में प्रयुक्त हों, उन्हें अव्यय पदबंध कहते हैं; जैसे—

- व्यक्ति ने रुककर चारों ओर ध्यान से देखा।
- वायदे के अनुरूप उसने सारा पैसा लौटा दिया।
- घड़े के भरने तक वह खड़ा रहा।
- मेरे घर के बिलकुल पीछे एक नया घर बना है।
- बच्चा तन्मयता के साथ पढ़ने लगा।

हमने जाना

- वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द पद बन जाते हैं।
- वाक्य में आए सभी शब्दों का व्याकरण की दृष्टि से परिचय देना पद-परिचय कहलाता है।
- एक पद के रूप में कार्य करनेवाला वाक्यांश पदबंध कहलाता है।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द क्या बन जाते हैं?

   पद　　　　अव्यय　　　　विकारी शब्द

   ख. वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के बारे में बताना क्या कहलाता है?

   शब्द-वर्णन　　　　पद-परिचय　　　　शब्द-विश्लेषण

2. **रंगीन शब्दों का पद-परिचय दीजिए।**

   क. वर्तुला अपने घर को सजाती है।

   वर्तुला ______ भेद ______ लिंग ______

   वचन ______ कारक ______ क्रिया से संबंध ______

   ख. वह दिन-रात पढ़ता है।

   वह ______ भेद ______ पुरुष ______

   लिंग ______ वचन ______ कारक ______

   अन्य पदों से संबंध ______

   ग. अच्छे बच्चे ईमानदारी से काम करते हैं।

   अच्छे ______ भेद ______ लिंग ______

   वचन ______ कारक ______ विशेष्य ______

   घ. सभी मिलकर खाना खाते हैं।

   खाते हैं ______ प्रकार ______ अन्य प्रकार ______

   वाच्य ______ पुरुष ______ लिंग ______

   वचन ______ काल ______ कर्ता ______

   कर्म ______

   ङ. सड़क पर धीरे चला करो।

   धीरे ______ भेद ______ क्रिया, जिसकी विशेषता बताता है ______

   च. ज़मीन के नीचे खुदाई चल रही है।

   के नीचे ______ भेद ______ संबंधी शब्द ______

छ. मैं और तुम घूमने जाएँगे।

और ______ उपभेद ______ यौगिक शब्द ______

ज. सुनो! इसे जल्दी समाप्त करो।

सुनो! ______ भाव ______

3. रंगीन शब्दों को पहचानकर पदबंध का नाम लिखिए।

क. आसमान में उड़नेवाली चील **शिकार की ताक में है।** ______

ख. इधर-उधर चक्कर लगानेवाला वह **थककर बैठ गया।** ______

ग. कक्षा का सबसे मेधावी **बच्चा रमन है।** ______

घ. **सब्जीवाला सब्जी** बेचकर चला गया। ______

ङ. मेरी आँखों के ही सामने **तुमने पुस्तक उठाई थी।** ______

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. संज्ञा तथा सर्वनाम पदबंध में क्या अंतर है?

ख. विशेषण पदबंध किस प्रकार क्रिया पदबंध से भिन्न है?

कार्यकलाप

विद्यार्थी निम्नांकित तरीके से पद-परिचय का अभ्यास करें; जैसे—(श्यामपट पर वाक्य लिखें।)
'मुरगी दाना चुग रही है।'

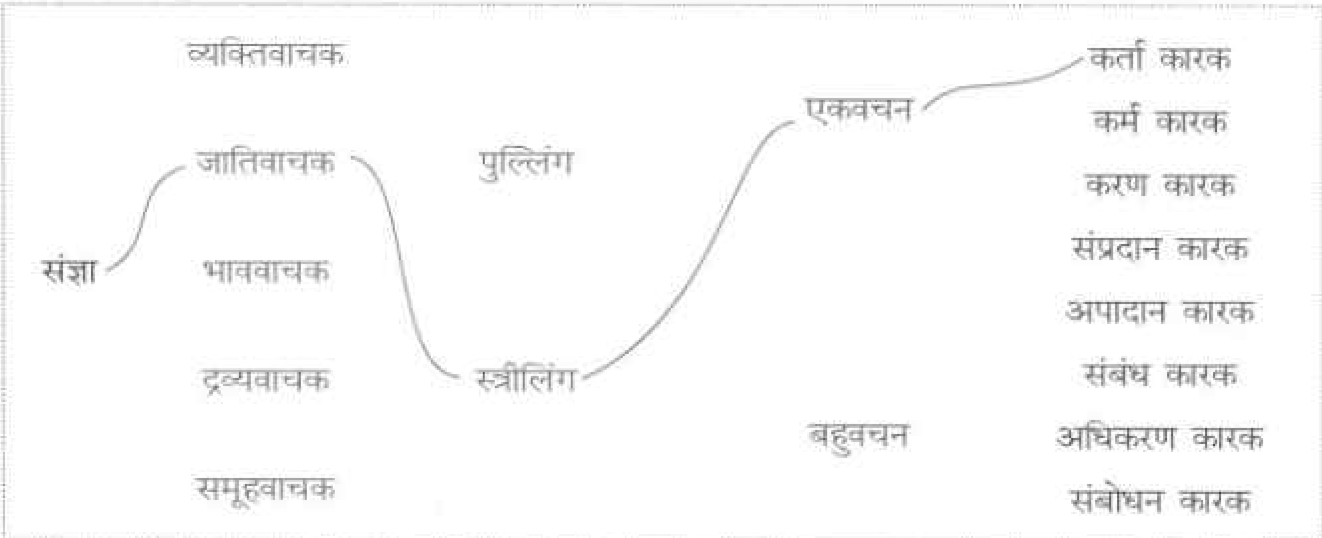

जाना-समझा

पदबंध वाक्य नहीं होते, अपितु वाक्यांश होते हैं।

28 वाक्य-विचार

चित्र के आधार पर संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए।

ध्यान दें सभी शब्द सार्थक तथा व्यवस्थित रूप में आने चाहिए।

भावों तथा विचारों को व्यक्त करनेवाला सार्थक तथा व्यवस्थित शब्द समूह वाक्य कहलाता है।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते हैं—उद्देश्य तथा विधेय

उद्देश्य ↓ जिसके बारे में बताया जाए। (कर्ता)

विधेय ↓ जो बताया जाए।

ड्राइवर ↓ गाड़ी चला रहा है। ↓

उद्देश्य	**विधेय**
बच्चे	पढ़ रहे हैं।
आशिमा	घूम रही है।
मोची	जूते बना रहा है।
इंजीनियर	निरीक्षण कर रहा है।

उद्देश्य तथा विधेय का विस्तार

उद्देश्य का विस्तार ↓ कर्ता तथा विशेषण		विधेय का विस्तार ↓ क्रिया, कर्म और क्रियाविशेषण
घुँघराले बालोंवाला	बच्चा	आइसक्रीम चुपचाप खा रहा है।
कक्षा के सभी	बच्चे	पुस्तक ध्यानपूर्वक पढ़ रहे हैं।
चुलबुली	आशिमा	बारिश में छाता लेकर घूम रही है।
गली के कोने में बैठा	मोची	चमड़े से जूते बना रहा है।
वरिष्ठ	इंजीनियर	तत्परता से बाँध का निरीक्षण कर रहा है।

वाक्य के भेद

वाक्य के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं—1. अर्थ के आधार पर 2. रचना के आधार पर।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं—

1. **विधानवाचक** ऐसे वाक्य सामान्य कथन होते हैं।
   - हवाई जहाज उड़ रहे हैं। ■ बच्चे स्केटिंग कर रहे हैं।

2. **निषेधवाचक** ऐसे वाक्यों से किसी कार्य के न होने का ज्ञान होता है।
   - शिक्षक कक्षा में नहीं पढ़ा रहे हैं।
   - तुम समय का सदुपयोग नहीं कर रहे हो।

3. **आज्ञावाचक** ऐसे वाक्यों में आज्ञा, अनुमति, प्रार्थना तथा उपदेश के भाव निहित होते हैं।
   - तुरंत अपने पिताजी को बुलाकर लाओ। (आज्ञा)
   - आज तुम कुछ देर टेलीविजन देख सकते हो। (अनुमति)
   - कृपया एक दिन का अवकाश प्रदान करें। (प्रार्थना)
   - जीव-जंतुओं पर दया करनी चाहिए। (उपदेश)

4. **प्रश्नवाचक** ऐसे वाक्यों में प्रश्न पूछे जाते हैं। इनके अंत में प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगा होता है।
   - आपको कौन-सा विषय अच्छा लगता है?
   - गणतंत्र दिवस क्यों मनाया जाता है?

5. **इच्छावाचक** ऐसे वाक्य इच्छा, आशीर्वाद अथवा शुभकामना व्यक्त करते हैं।
   - मेरा मन करता है कि मैं क्रिकेट खेलने जाऊँ। (इच्छा)
   - ईश्वर तुम्हें सदा सुखी रखें। (आशीर्वाद)
   - आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। (शुभकामना)

6. **संदेहवाचक** ऐसे वाक्यों में किसी कार्य के होने में संदेह या संभावना प्रकट की जाती है।

- इस परीक्षा में मुझे शायद ही सफलता मिले। (संदेह)
- लगता है आज बारिश होगी। (संभावना)

7. संकेतवाचक — ऐसे वाक्यों में किसी एक कार्य का होना, दूसरे कार्य पर निर्भर होने का संकेत मिलता है।
   - यदि एक गोल और हो जाए, तो हम जीत सकते हैं।
   - अगर उसका फोन आए, तो मुझे बुला लेना।

8. विस्मयवाचक — ऐसे वाक्य विस्मय, हर्ष, घृणा अथवा शोक आदि भावों को व्यक्त करते हैं। इनसे पहले विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग होता है।
   - अरे! पीली चोंच वाली चिड़िया।
   - छिः! कितनी मक्खियाँ भिनभिना रही हैं।

सोचो और बताओ
निर्देशानुसार वाक्य बनाइए।

फूलों पर तितलियाँ मँडरा रही हैं।

क. ____________________ (प्रश्नवाचक)

ख. ____________________ (निषेधवाचक)

ग. ____________________ (संदेहवाचक)

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं—1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्रित वाक्य।

1. सरल वाक्य सरल वाक्यों में एक उद्देश्य तथा एक विधेय होता है।
   - वन महोत्सव पर पौधे लगाए जाते हैं।
   - दादाजी रोज पक्षियों को दाना खिलाते हैं।
   - मान्या चित्रकला सीखती है।

2. **संयुक्त वाक्य** इसमें दो या अधिक सरल वाक्य समानाधिकरण समुच्चयबोधकों द्वारा जुड़े होते हैं।
   - सरल वाक्य — माँ ने पकौड़े बनाए। माँ ने कचौड़ी बनाई।
   - संयुक्त वाक्य — माँ ने पकौड़े बनाए और कचौड़ी बनाई।
   - सरल वाक्य — दिव्या साइकिल से गिर पड़ी। दिव्या का सारा सामान बिखर गया।
   - संयुक्त वाक्य — दिव्या साइकिल से गिर पड़ी, इसलिए उसका सारा सामान बिखर गया।
   - सरल वाक्य — जल-संकट उत्पन्न हो गया है। जल प्रदूषित हो गया है।
   - संयुक्त वाक्य — जल-संकट उत्पन्न हो गया है, क्योंकि जल प्रदूषित हो गया है।

3. मिश्रित वाक्य मिश्रित वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक आश्रित उपवाक्य होता है। ये व्यधिकरण समुच्चयबोधकों द्वारा जुड़े होते हैं।
   - सरल वाक्य — हमने ठंड से बचने के लिए स्वेटर पहना।

- मिश्रित वाक्य हमने स्वेटर पहना ताकि ठंड से बचे रहें।
- सरल वाक्य गार्ड के हरी झंडी दिखाते ही गाड़ी चल पड़ी।
- मिश्रित वाक्य जैसे ही गार्ड ने हरी झंडी दिखाई, गाड़ी चल पड़ी।
- सरल वाक्य वृक्षों के कटने से हवा प्रदूषित हो रही है।
- मिश्रित वाक्य ज्यों-ज्यों वृक्ष कट रहे हैं, हवा प्रदूषित हो रही है।

उपवाक्य

एक वाक्य के अंदर, ऐसा पद समूह, जो वाक्य का भाग होता है, जिसका अपना अर्थ होता है, जिसका एक उद्देश्य तथा एक विधेय होता है, उपवाक्य कहलाता है।

उपवाक्य दो प्रकार के होते हैं—1. प्रधान उपवाक्य 2. आश्रित उपवाक्य।

1. **प्रधान उपवाक्य** प्रधान उपवाक्य स्वतंत्र होता है। प्रधान उपवाक्य की क्रिया मुख्य क्रिया होती है।

2. **आश्रित उपवाक्य** आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर आश्रित होता है।

   पहचानें आश्रित उपवाक्य अधिकतर क्योंकि, कि, यदि, यद्यपि, जिन्हें, ताकि, चूँकि, जिससे, जो, जितना, ज्यों-ज्यों, जब, जहाँ, जैसे इत्यादि से आरंभ होता है।

वह तुम्हारा बड़ा भाई था।	(जिससे मैंने बात की थी।)
वह तुम्हारा बड़ा भाई था।	स्वतंत्र वाक्य (प्रधान उपवाक्य)
जिससे मैंने बात की थी।	स्वतंत्र वाक्य के बिना यह वाक्य अधूरा है। बात स्पष्ट करने के लिए इसे स्वतंत्र वाक्य, अर्थात प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होना होगा। इसलिए यह आश्रित उपवाक्य है।

सोचो और बताओ

प्रधान उपवाक्य को लाल रंग से तथा आश्रित उपवाक्य को नीले रंग से रेखांकित करें।

क. जैसे ही शिक्षक आए, बच्चे चुपचाप बैठ गए।

ख. वह बहुत संभलकर चल रहा था, क्योंकि बाहर बहुत कीचड़ था।

ग. उन्हें कोई अच्छा नहीं समझता, जो कान के कच्चे होते हैं।

घ. रोज व्यायाम करना चाहिए, जिससे शरीर स्वस्थ रहे।

आश्रित उपवाक्य के प्रकार

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—1. संज्ञा उपवाक्य 2. विशेषण उपवाक्य 3. क्रियाविशेषण उपवाक्य

1. संज्ञा उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य, वे उपवाक्य होते हैं, जो संज्ञा की भाँति व्यवहार में आते हैं।

   पहचान इससे पहले योजक शब्द 'कि' लगा होता है।

   - मोहन ने उठते ही कहा कि मुझे भूख लगी है।
   - बच्चे ने कहा कि मुझे घर जाना है।

2. विशेषण उपवाक्य विशेषण उपवाक्य, वे उपवाक्य होते हैं, जो विशेषण की भाँति व्यवहार में आते हैं।

   पहचान इससे पहले जो, जैसा, जिसका, जितना शब्दों का प्रयोग होता है।

- मैंने एक व्यक्ति को देखा जो बहुत लंबा था।
- मैंने एक स्वेटर खरीदा है जिसका डिजाइन अनोखा है।

3. क्रियाविशेषण उपवाक्य क्रियाविशेषण उपवाक्य, वे उपवाक्य होते हैं, जो क्रिया की भाँति व्यवहार में आते हैं।

पहचान इससे पहले जब, जहाँ, ज्यों, यद्‌यपि, जिधर इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। इनसे समय, स्थान, उद्‌देश्य, कारण, परिमाण इत्यादि का बोध होता है।

- ज्यों ही पानी बरसा, बच्चों की टोली मस्ती करने लगी।
- जिधर तक नज़र जाती है, हरियाली-ही-हरियाली नज़र आती है।

हमने जाना

- वाक्य शब्दों का सार्थक तथा व्यवस्थित समूह होता है।
- उपवाक्य वाक्य का ही भाग होता है, इसका अपना उद्‌देश्य तथा विधेय होता है।
- वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं—उद्‌देश्य तथा विधेय।
- अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—विधानवाचक, निषेधवाचक, आज्ञावाचक, प्रश्नवाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक, संकेतवाचक तथा विस्मयवाचक।
- रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा मिश्रित वाक्य।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. उपवाक्य किस प्रकार का वाक्य होता है?

स्वतंत्र वाक्य   वाक्य का ही एक भाग   विधेय रहित

ख. किस आश्रित उपवाक्य से पहले योजक चिह्न 'कि' लगा होता है?

संज्ञा उपवाक्य   विशेषण उपवाक्य   क्रियाविशेषण उपवाक्य

2. निम्नांकित तालिका को पढ़कर वाक्य लिखिए।

उद्‌देश्य	उद्‌देश्य का विस्तार	विधेय	विधेय का विस्तार
क. तितली	रंग-बिरंगे पंखोंवाली	बैठ गई	फूल पर चुपके से
ख. अतिथिगण	समारोह में आमंत्रित	सुना रहे थे	अपने अनुभव
ग. पक्षी	पेड़ पर बैठा	खा रहा था	फलों को धीरे-धीरे
घ. पहाड़ियाँ	शिमला की ऊँची	ढँकी हुई थीं	बर्फ़ से पूरी तरह
ङ. बालक	कोने में खड़ा	सोच रहा था	बहुत देर से कुछ

क. ____________________

ख. ____________________

ग. ____________________

घ. ____________________

ङ. ____________________

3. **निम्नांकित वाक्य को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए।**

क. विधानवाचक मैं दादी माँ को कंप्यूटर चलाना सिखाऊँगा।

ख. निषेधवाचक ____________________

ग. आज्ञावाचक ____________________

घ. प्रश्नवाचक ____________________

ङ. इच्छावाचक ____________________

च. संदेहवाचक ____________________

छ. संकेतवाचक ____________________

ज. विस्मयवाचक ____________________

4. **दिए गए सरल वाक्यों को संयुक्त तथा मिश्रित वाक्यों में बदलिए।**
सरल वाक्यों को दो उपवाक्यों में बाँटिए तथा निम्नलिखित योजकों से जोड़िए–

संयुक्त वाक्य → और, परंतु, लेकिन, इसलिए, अतः।

मिश्रित वाक्य → ज्यों, यद्यपि, जैसे, ताकि, चूँकि।

क. सरल वाक्य घंटी बजते ही छात्र पंक्ति बनाने लगे।

संयुक्त वाक्य घंटी बजी और छात्र पंक्ति बनाने लगे।

मिश्रित वाक्य ज्यों ही घंटी बजी, छात्र पंक्ति बनाने लगे।

ख. सरल वाक्य वह बहुत तेज़ दौड़ने पर भी जीत नहीं पाया।

संयुक्त वाक्य ____________________

मिश्रित वाक्य ____________________

ग. सरल वाक्य उसके निशाना लगाते ही शेर भाग गया।

संयुक्त वाक्य ____________________

मिश्रित वाक्य ____________________

घ. सरल वाक्य अच्छे अंक लाने के लिए मेहनत करो।

संयुक्त वाक्य ______________________________

मिश्रित वाक्य ______________________________

ङ. सरल वाक्य बीमार होने के कारण मैं विद्यालय नहीं आ सका।

संयुक्त वाक्य ______________________________

मिश्रित वाक्य ______________________________

5. उपर्युक्त मिश्रित वाक्यों से आश्रित उपवाक्य छाँटकर लिखिए।

क. ______________________________

ख. ______________________________

ग. ______________________________

घ. ______________________________

ङ. ______________________________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद लिखिए।

ख. आश्रित उपवाक्य किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार के होते हैं?

कार्यकलाप

निम्नांकित चक्र को घुमाइए। रुकने पर जो शब्द आए, उससे संयुक्त अथवा मिश्रित वाक्य बनाइए।

जाना-समझा

वाक्य रचना में पदों का एक क्रम होता है।

- कर्ता → गौण कर्म → मुख्य कर्म → क्रियाविशेषण → क्रिया

29 वाक्य रचना की सामान्य अशुद्धियाँ

भाषा में प्रभावशाली वाक्य रचना का अपना महत्त्व होता है। वाक्य रचना ऐसी होनी चाहिए, जो त्रुटिरहित हो, जिसमें प्रयुक्त सभी पद निश्चित क्रम में हों तथा लिंग, वचन, पुरुष तथा काल के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त विभिन्न पदों का एक-दूसरे से संबंध दिखाया जाए। यदि ऐसा नहीं होता, तो वाक्य में अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं। वाक्य रचना में पाई जानेवाली सामान्य अशुद्धियाँ निम्नलिखित हैं—

लिंग तथा वचन-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. प्रत्येक व्यक्ति अपनी बात कह सकते हैं।	1. प्रत्येक व्यक्ति अपनी बात कह सकता है।
2. कालिदास की पत्नी बुद्धिमान थी।	2. कालिदास की पत्नी बुद्धिमती थी।
3. औरत ने कानों में झुमका पहन रखी थी।	3. औरत ने कानों में झुमकी पहन रखी थी।
4. बीस आदमी ने मिलकर तालाब खोद दिया।	4. बीस आदमियों ने मिलकर तालाब खोद दिया।
5. ईश्वर के अनेकों रूप हैं।	5. ईश्वर के अनेक रूप हैं।

कारक-संबंधी अशुद्धियाँ

1. थके मुसाफिरों को पानी को पिलाओ।	1. थके मुसाफिरों को पानी पिलाओ।
2. सड़क में कूड़ा मत फेंको।	2. सड़क पर कूड़ा मत फेंको।
3. एकलव्य ने गुरुदक्षिणा के लिए अँगूठा दिया।	3. एकलव्य ने गुरुदक्षिणा में अँगूठा दिया।
4. नेहरूजी का बच्चों पर बहुत प्रेम था।	4. नेहरूजी को बच्चों से बहुत प्रेम था।
5. आज का समाचार सुन दिल दहल गया।	5. आज के समाचार सुन दिल दहल गया।

सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियाँ

1. मृत्यु पर कोई का वश नहीं।	1. मृत्यु पर किसी का वश नहीं।
2. मैं आपके दिल से आभारी हूँ।	2. मैं आपका दिल से आभारी हूँ।
3. मैंने पहले भी ये इमारत देखी है।	3. मैंने पहले भी यह इमारत देखी है।
4. गली के कोने में कुछ खड़ा है।	4. गली के कोने में कोई खड़ा है।
5. मैं मेरी बात फिर से दोहराता हूँ।	5. मैं अपनी बात फिर से दोहराता हूँ।

सोचो और बताओ

	शुद्ध वाक्य
क. जैसी करोगे वैसा भरोगे।	
ख. मैं आपका दर्शन करना चाहता हूँ।	

क्रिया तथा क्रियाविशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ

1. मयंक, श्लेष और अनुराग बाज़ार जाता है।	1. मयंक, श्लेष और अनुराग बाज़ार जाते हैं।
2. खेत में नर-नारी मिलकर कार्य कर रही थीं।	2. खेत में नर-नारी मिलकर कार्य कर रहे थे।
3. शेर और बिल्ली एक ही जाति की प्राणी है।	3. शेर और बिल्ली एक ही जाति के प्राणी हैं।
4. धीरे-धीरे विद्यार्थी ने सीखना शुरू किया।	4. विद्यार्थी ने धीरे-धीरे सीखना शुरू किया।
5. उसे इसका उत्तर थोड़ा-सा भी नहीं आता।	5. उसे इसका उत्तर बिलकुल नहीं आता।

विशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ

1. सड़क पर भारी-भरकम भीड़ इकट्ठा हो गई।	1. सड़क पर बहुत भीड़ इकट्ठा हो गई।
2. मैंने सूर्य ऊर्जा से खाना बनाया।	2. मैंने सौर ऊर्जा से खाना बनाया।
3. कठिन शब्द दूसरों को पीड़ा पहुँचाते हैं।	3. कठोर शब्द दूसरों को पीड़ा पहुँचाते हैं।
4. आलसी व्यक्ति सदा फलता-फूलता है।	4. परिश्रमी व्यक्ति सदा फलता-फूलता है।
5. ताड़ का पेड़ बहुत बड़ा होता है।	5. ताड़ का पेड़ बहुत लंबा होता है।

पदक्रम-संबंधी अशुद्धियाँ

1. कई विभाग के कर्मचारी हड़ताल पर थे।	1. विभाग के कई कर्मचारी हड़ताल पर थे।
2. उसने समोसे गरमागरम चटनी के साथ दिए।	2. उसने गरमागरम समोसे चटनी के साथ दिए।
3. मेहमान को गरम करके हलवा खिलाओ।	3. मेहमान को हलवा गरम करके खिलाओ।
4. जहाँ राह, वहाँ चाह।	4. जहाँ चाह, वहाँ राह।
5. वह, तुम और मैं दिल्ली चलेंगे।	5. तुम, वह और मैं दिल्ली चलेंगे।

पुनरुक्ति-संबंधी अशुद्धियाँ

1. मुझे केवल मात्र इस प्रश्न का उत्तर चाहिए।	1. मुझे केवल इस प्रश्न का उत्तर चाहिए।
2. तुम सब आपस में परस्पर मिल-जुलकर रहो।	2. तुम सब परस्पर मिल-जुलकर रहो।
3. चौकीदार सारी रातभर गश्त लगाता रहा।	3. चौकीदार रातभर गश्त लगाता रहा।
4. उसकी बहन अत्यंत बहुत सुंदर है।	4. उसकी बहन अत्यंत सुंदर है।
5. नौजवान युवाओं को रोजगार दिया जाएगा।	5. नौजवानों को रोजगार दिया जाएगा।

सोचो और बताओ

	शुद्ध वाक्य
क. वह चादर पहनकर गया है।	____________
ख. जंगल में शेर की चिंघाड़ गूँज उठी।	____________
ग. गरम चाँदनी चारों ओर बिखरी थी।	____________

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द-संबंधी अशुद्धियाँ

1. सारी जनसंख्या भाषण सुनने पहुँच गई।	1. सारी जनता भाषण सुनने पहुँच गई।
2. मैं पानी में तैरने का आदि हूँ।	2. मैं पानी में तैरने का आदी हूँ।
3. मुझसे किसी बात की उपेक्षा न रखो।	3. मुझसे किसी बात की अपेक्षा न रखो।
4. मेरा ग्रह थोड़ी ही दूरी पर है।	4. मेरा गृह थोड़ी ही दूरी पर है।
5. इस पुरानी इमारत के गिरने की संभावना है।	5. इस पुरानी इमारत के गिरने की आशंका है।

अन्य अशुद्धियाँ

1. डूबते को लकड़ी का सहारा बहुत है।	1. डूबते को तिनके का सहारा बहुत है।
2. तुम्हारे चोट लगने पर मुझे बहुत शोक हुआ।	2. तुम्हारे चोट लगने पर मुझे बहुत दुख हुआ।
3. यह लेख विद्वतापूर्वक है।	3. यह लेख विद्वतापूर्ण है।
4. वह पाठ को कई बार दोहराने लगा।	4. वह पाठ को बार-बार दोहराने लगा।
5. अपने कथन के अनुसार व्यवहार करें।	5. अपने कथन के अनुरूप व्यवहार करें।

हमने जाना

- सभी वाक्य एक निश्चित क्रम में लिखे जाने चाहिए।
- वाक्य में प्रयुक्त लिंग, वचन तथा पुरुष क्रिया के अनुसार होने चाहिए।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. 'चादर बाँधकर सो जाओ।' वाक्य में रंगीन शब्द के लिए उपयुक्त शब्द कौन-सा है?

लेकर ओढ़कर तानकर

ख. 'किसान बैलों को उठाकर खेतों की ओर चल पड़ा।' वाक्य में रंगीन शब्द के लिए उपयुक्त शब्द कौन-सा है?

पकड़कर भगाकर हाँककर

2. दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।

क. रविवार के दिन हमारा अवकाश रहता है। ______________________

ख. हिमालय पर्वत की चढ़ाई कठिन है। ______________________

ग. मेरी आँख में कोई गिर गया है। ______________________

घ. एकमात्र केवल तुम मेरी बात समझ सकते हो। ______________________

ङ. हस्ताक्षर ठीक से बनाया करो। ______________________

च. जेबरा के शरीर में काली धारियाँ होती है। ______________________

छ. मुझे गृह कार्य करने को पुस्तक चाहिए। ______________________

ज. तुम्हारी चाय में कोई गिर गया है। ______________________

झ. सड़क पर नहीं खेलो। ______________________

ञ. आज बारिश आने की आशंका है। ______________________

3. शुद्ध वाक्य पर ✓ तथा अशुद्ध वाक्य पर × लगाइए।

क. गीत की दो-चार लड़ियाँ गाओ। गीत की दो-चार कड़ियाँ गाओ।

ख. मैं अपने आँसू रोक नहीं पाई। मैं अपने आँसुओं को रोक नहीं पाई।

ग. सबसे यह बात बता देना। सबको यह बात बता देना।

घ. अब आप चले जाइए। अब आप चले जाओ।

ङ. आपको अपना काम पहले करना चाहिए। आपको आपका काम पहले करना चाहिए।

च. जायसी प्राचीनकालीन युग के कवि थे। जायसी प्राचीनकाल के कवि थे।

छ. मैंने महिला लेखिकाओं की कई रचनाएँ पढ़ी हैं। मैंने लेखिकाओं की कई रचनाएँ पढ़ी हैं।

ज. गहन घाटियाँ देख बच्चे डर गए। गहरी घाटियाँ देख बच्चे डर गए।

कार्यकलाप

विद्यार्थी एक वाक्य लें। उसमें भिन्न-भिन्न कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण लगाकर उन वाक्यों का उच्चारण करें तथा शुद्ध तथा अशुद्ध वाक्यों की पहचान करें; जैसे—

मैंने राम को पेंसिल दी। (✓) मैंने राम से पेंसिल दी। (×)

मैंने राम ने पेंसिल दी। (×) मैंने राम के लिए पेंसिल दी। (✓)

जाना-समझा

वाक्य में प्रयुक्त पदों का निश्चित क्रम में होना पदक्रम कहलाता है।

आओ दोहराएँ 3 (पाठ 21 से 29 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।
   क. क्रिया के बीते हुए समय में होने की जानकारी किस काल से मिलती है?
   भूतकाल से　　　वर्तमानकाल से　　　भविष्यतकाल से
   ख. 'सुप्रिया दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम आई।' यह किस काल का उदाहरण है?
   सामान्य वर्तमानकाल का　　　सामान्य भूतकाल का　　　सामान्य भविष्यतकाल का

2. सामान्य वर्तमानकाल को सामान्य भविष्यतकाल में बदलिए।
   क. फूल बाग को महकाता है। ____________________
   ख. माँ अगरबत्तियाँ जलाती हैं। ____________________

3. वाच्य को पहचानकर नाम लिखिए।
   क. घोड़ा हिनहिनाता है। ____________________
   ख. अक्षय के द्वारा समोसे खाए जाते हैं। ____________________

4. कर्मवाच्य में बदलिए।
   क. माँ चावल बीन रही हैं। ____________________
   ख. आदित्य कंप्यूटर पर गेम खेलता है। ____________________

5. निम्नांकित वाक्यों में आए क्रियाविशेषणों को रेखांकित कर उनके भेदों के नाम लिखिए।
   क. ये कपड़े उठाकर नीचे रख दो। ____________________
   ख. मुझे अपनी गलती का अहसास सदा होता रहेगा। ____________________

6. वाक्यों में आए समुच्चयबोधकों को छाँटकर लिखिए।
   क. आप खाना खाएँगे अथवा चाय पीएँगे। ____________________
   ख. प्रश्न बहुत सरल है, परंतु उत्तर सही नहीं आ रहा। ____________________

7. सही समुच्चयबोधक शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों को भरिए।
   क. आप बाहर बैठेंगे __________ अंदर आराम करेंगे? (तथा/या)
   ख. रास्ता ढलानदार था, __________ फिसलन नहीं थी। (अतः/पर)

8. विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य पूरे कीजिए।
   क. __________ ईश्वर तुम्हारी सभी मनोकामनाएँ पूरी करें।
   ख. __________ उसके साथ तो सचमुच बहुत बुरा हुआ है।

9. रंगीन शब्दों का पद-परिचय दीजिए।
   क. वर्तुला अपने घर को सजाती है। ____________________
   ख. वह दिन-रात पढ़ता है। ____________________

10. रंगीन शब्दों को पहचानकर पदबंध का नाम लिखिए।
   क. कक्षा का सबसे मेधावी बच्चा रमन है। ____________________
   ख. सब्ज़ीवाला सब्ज़ी बेचकर चला गया। ____________________

11. संयुक्त वाक्य में बदलिए।
   क. घंटी बजते ही छात्र पंक्ति बनाने लगे। ____________________
   ख. वह बहुत तेज़ दौड़ने पर भी जीत नहीं पाया। ____________________

12. दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।
   क. जेबरा के शरीर में काली धारियाँ होती है। ____________________
   ख. तुम्हारी चाय में कोई गिर गया है। ____________________

30 विरामचिह्न

आज का विचार

- ईश्वर आपको, सुखी रखे इनसान।
- बुरा बोलो, मत सुनना सच।
- सदा वक्त रहता एक-सा, नहीं बदलता है समय।

आज का विचार

- ईश्वर आपको सुखी रखें।
- इनसान बुरा बोलो मत, सुनना सच सदा।
- वक्त रहता एक-सा नहीं, बदलता है समय।

उपर्युक्त लिखे 'आज का विचार' पढ़कर क्या समझ आया?

हमने जाना कि रुकने के लिए कुछ चिह्न लगाए गए हैं। परंतु, दोनों ओर ये चिह्न अलग-अलग स्थानों पर लगे हैं, जिससे अर्थ में ज़मीन-आसमान का अंतर आ गया है। अर्थ का अनर्थ हो गया है।

विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए लिखते समय विशेष स्थान पर रुकने का संकेत देनेवाले चिह्न विरामचिह्न कहलाते हैं।

विरामचिह्न भाषा को स्पष्ट तथा अर्थपूर्ण बनाते हैं। अलग विरामचिह्न का प्रयोग कर एक ही वाक्य में अलग भाव व्यक्त किए जा सकते हैं; जैसे—

- क्या आप हमारे घर चलेंगी? (प्रश्नवाचक)
- क्या! आप हमारे घर चलेंगी। (हर्षसूचक)
- क्या? आप हमारे घर चलेंगी। (आश्चर्यसूचक)

हिंदी के प्रमुख विरामचिह्न

हिंदी के प्रमुख विरामचिह्न निम्नांकित हैं—

1. पूर्ण विराम (।)

- यह चिह्न प्रश्नवाचक वाक्यों के अतिरिक्त सभी वाक्यों तथा उन वाक्यांशों के अंत में लगाया जाता है, जो स्वतंत्र तथा स्वयं में पूर्ण होते हैं; यथा—
  - गेहूँ की फसल पक गई है।
  - चलो, अब चलें।
  - स्वर्ण के दाम बढ़ रहे हैं।
- प्रत्यक्ष प्रश्न के बाद भी पूर्ण विराम लगाते हैं—बच्चों से पूछें, कि उन्हें क्या चाहिए।

2. अल्पविराम (,)

बहुत कम समय के लिए रुकने का संकेत देने के लिए अल्पविराम का प्रयोग करते हैं। अल्पविराम

का प्रयोग निम्नांकित स्थितियों में किया जाता है—

- समान पदों में—चंपा, गुलाब, चमेली और सूर्यमुखी के फूल मुझे पसंद हैं।
- शब्दों की पुनरावृत्ति में—बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया मिठाई बनी है।
- संबोधन और हाँ-नहीं के बाद—
  - सुनो, इस प्रश्न को हल करके दिखाओ।
  - हाँ, तुम्हारा उत्तर बिलकुल सही है।
  - नहीं, तुम्हें इसमें सुधार करना चाहिए।

- योजक शब्दों से पहले—वह सामान बेच रहा था, परंतु किसी ने खरीदा नहीं।
- उद्धरणचिह्न लगाने से पहले—शिक्षक ने कहा, "हम आज प्रेमचंद की रचना पढ़ेंगे।"
- सन् के साथ तिथि लिखने के बाद—भारत 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र हुआ।

3. अर्धविराम (;)

- जब पूर्णविराम से कम, परंतु अल्पविराम से कुछ अधिक देर रुकते हैं, तब अर्धविराम लगाते हैं।
  - तेज़ धमाका हुआ; इमारतें गिरने लगीं; रास्ते बंद हो गए।
  - छुट्टी का दिन है; आराम कहाँ होगा; बहुत सारे काम करने हैं।
  - बाज़ार जाना है; कपड़ा खरीदना है; सिलने के लिए देना है।

4. **प्रश्नवाचक चिह्न (?)**

- जिन वाक्यों के अंत में प्रश्न पूछा जाता है, उन वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है; यथा—
  - क्या तुम सचमुच वहाँ जाना चाहती हो?
  - 'पंजाब केसरी' किसे कहा जाता था?
  - यह कार्य कब तक हो जाएगा?
  - इस विषय पर लेख कौन लिख सकता है?
- जहाँ स्थिति अनिश्चित हो; यथा—आपको शायद पहले भी कहीं देखा है?
- व्यंग्य रूप में; यथा—आप ही एक समझदार हैं, हैं न?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

- इनका प्रयोग हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है।
  - वाह! कितना मीठा तरबूज है।
  - उफ़! कितनी भयंकर दुर्घटना थी।
- तीव्र मनोवेग की अभिव्यक्ति के लिए—अब चुप क्यों खड़े हो! जल्दी जाओ।
- संबोधन के बाद—सुनो! इसे घर तक ले चलो।
- स्वीकृति या अस्वीकृति के लिए—हाँ! मुझे घूमना बहुत पसंद है।

6. निर्देशक चिह्न (—)

निर्देशक चिह्न निर्देश देने के लिए प्रयुक्त होते हैं। ये अग्रांकित स्थानों पर प्रयुक्त होते हैं।

» किसी के कहे कथन से पहले—प्रधानाचार्य ने कहा—सभी के लिए यह परीक्षा देना अनिवार्य है।

» व्याख्या करते समय—पंजाब—पाँच नदियों का समूह—चेनाब, झेलम, रावी, व्यास तथा सतलुज।

» संवाद से पहले—राजा—सारे इलाके में एलान कर दिया जाए।

सोचो और बताओ	पूर्णविराम	अर्धविराम
विरामचिह्न लिखिए।	विस्मयादिबोधक	अल्पविराम
	प्रश्नवाचक	निर्देशक चिह्न

7. उद्धरणचिह्न (" ") (' ')

» महत्त्वपूर्ण कथन को ज्यों-का-त्यों लिखने के लिए दोहरा उद्धरणचिह्न (" ") लगाते हैं।

- बाल गंगाधर तिलक ने कहा था, "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूँगा।"

» पुस्तक, समाचार-पत्र के नाम, लेखक के उपनाम, उपाधि अथवा शीर्षक आदि के लिए इकहरा उद्धरणचिह्न लगाते हैं।

- कृष्ण का अर्जुन को दिया उपदेश 'गीता' में वर्णित है।
- 'नवभारत टाइम्स' प्रमुख समाचार-पत्र है।
- अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हिंदी के प्रमुख कवि हैं।
- डॉ० राधाकृष्णन को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था।
- मेरी कविता का शीर्षक है—'काश! हम उड़ पाते नभ में'

8. योजक चिह्न (-)

योजक चिह्न निम्नांकित स्थानों पर प्रयोग होता है—

» सामासिक शब्दों में; जैसे—दही-बड़ा, दाल-भात

» विपरीत शब्दों में; जैसे—अंदर-बाहर, धनी-निर्धन

» पुनरुक्त शब्दों में; जैसे—कभी-कभी, क्षण-क्षण

» अनिश्चित संख्यावाचक में

- सा, सी, से के बाद; जैसे—थोड़ा-सा, बड़ी-सी, कम-से-कम
- जब का, के, की लुप्त हो; जैसे—गीता-सार (गीता का सार), शब्द-भेद (शब्द के भेद), राम-लीला (राम की लीला)

» पूर्णांक से कम संख्या में; जैसे—एक-तिहाई, एक-चौथाई

9. लाघव चिह्न (०)

किसी शब्द का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग करते हैं; जैसे—

पं० जवाहरलाल नेहरू (पंडित) पृ०सं० पाँच (पृष्ठ संख्या)

10. **कोष्ठक ( )**

- रंगमंच-संबंधी निर्देशों के लिए—राजा (स्थान से उठते हुए)
- क्रम संख्या में— (1), (2), (क), (ख)
- पद का अर्थ स्पष्ट करने के लिए—व्यक्तियों के नाम (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

11. **विवरण चिह्न (:—)**

- विवरण चिह्न का प्रयोग विवरण या उदाहरण देते समय करते हैं; जैसे—
  - संज्ञा के तीन भेद हैं:—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा।
  - हमारे सामने अनेक समस्याएँ हैं—कोरोना, जलसंकट, प्रदूषण इत्यादि।

12. **हंसपद (‸)**

- हम मुगल ‸ देखने गए। (गार्डन)
- डॉ० राधाकृष्णन के जन्मदिन को 'शिक्षक दिवस' के रूप में ‸ जाता है। (मनाया)

हमने जाना

- विराम चिह्न लिखते समय रुकने का संकेत देनेवाले चिह्न हैं।
- विराम चिह्न भाषा को स्पष्ट तथा अर्थपूर्ण बनाते हैं।

आओ कुछ करें

1. **दिए गए वाक्यों में सही स्थान पर विरामचिह्न लगाइए।**

क. लाला लाजपतराय पंजाब केसरी कहलाते थे

ख. आलस्य छोड़ो दिन रात मेहनत करो सफल होओगे

ग. गुण दोष अच्छा बुरा परख कर ही कार्य करना

घ. किसको मनन का घर मालूम है कौन उसे बुलाकर लाएगा

ङ. बाप रे बाप इतनी ऊँची इमारत

च. वीर तुम बढ़े चलो यह किसकी रचना है

छ. कभी कभी जीवन में उतार चढ़ाव आ जाते हैं

ज. गुरुजी तुम सभी शहर में जाकर दाल रोटी का प्रबंध करो

झ. दिए गए स्थान पर अपने माता पिता का नाम स्पष्ट अक्षरों में लिखें

ञ. मेरे भाई बहन ने इसी कॉलेज से बीए किया है

2. **सही स्थान पर विरामचिह्न लगाइए।**

एक चूहा बिल से निकला उदास वहीं बैठ मन ही मन सोचते हुए अपने आप से बोला काश मेरा कोई मित्र होता हम दोनों मिल बैठकर अपने अपने मन की बातें कहते मैं उसे बताता मेरे गाँव में कई प्रकार के पशु पक्षी थे वह मुझे कहता शरारत से क्या तुमने उनको पकड़ा था तभी अचानक उसे किसी ने पुकारा सुनो मैंने तुम्हें कुछ न कुछ बोलते सुना है शायद तुम बहुत अकेले हो क्या मैं तुम्हारा मित्र बन सकता हूँ सच सच में तुम मेरे मित्र बनोगे चूहा अचरज से बोला

3. **विरामचिह्न-संबंधी अशुद्धियाँ दूर करके सही स्थान पर विरामचिह्न लगाइए।**

क. आज हम कुरता, पजामा तथा 'पशमीना शाल' खरीदेंगे।

ख. कॉपियाँ, खरीदना, उनपर कवर, चढ़ाना नाम लिखना कितना काम है मुझे?

ग. नदी के किनारे; पर कंकड़—पत्थर—मिट्टी आदि का ढेर लगा था!

घ. 15 अगस्त 1947, को पं० जवाहरलाल नेहरू ने लालकिले पर झंडा फहराया थाः—

ङ. ओफ, "कितनी गरम गरम लू चल रही है।"

च. तुमसे! तीन गुना आमदनी है, उसकी पर फिर भी, कितना सोच समझकर खर्च करता है।

4. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. विरामचिह्न किसे कहते हैं? प्रमुख विरामचिह्नों के नाम लिखिए।

ख. पूर्णविराम तथा अल्पविराम में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

किस स्थिति में कौन-सा चिह्न लगता है? दिए गए निर्देशों के आधार पर शब्द-पहेली में भरिए।

[1]यो

[5]अ [2]प्र क

[3]वि

[4]पू वि

[6]वि

[7]उ ध

[8]को क

ऊपर से नीचे

1. सामासिक शब्दों में लगाते हैं।
3. हर्ष प्रकट करने के लिए
5. उद्धरणचिह्न से पहले
6. विवरण देने में

बाएँ से दाएँ

2. जहाँ स्थिति अनिश्चित हो
4. स्वतंत्र वाक्यांशों में
7. लेखक के उपनाम में
8. रंगमंचीय निर्देशों में

जाना-समझा

किसी शब्द, पद अथवा उपशीर्षक के पश्चात विरामचिह्न नहीं लगाया जाता।

31 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

उपर्युक्त चित्र के आधार पर सही विकल्प पर ✓ लगाइए।

घर फूँककर तमाशा देखने से क्या अभिप्राय है?

घर को जलाकर देखते रहना।

जलते हुए घर के सामने तमाशा करना।

अपनी हानि स्वयं करके खुश होना।

ऐसे वाक्यांश, जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।

- मुहावरे वाक्यांश होते हैं।
- इनके द्वारा कम शब्दों में गहरे भाव व्यक्त किए जा सकते हैं।
- ये भाषा के सौंदर्य में वृद्धि करते हैं।
- मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर उनके पर्यायवाची शब्द प्रयोग नहीं किए जा सकते।

कुछ मुहावरे, उनके अर्थ तथा वाक्य-प्रयोग निम्नांकित हैं–

1. अंग-अंग ढीला होना (बहुत थक जाना)
   सुबह से दौड़-धूप करते मेरा अंग-अंग ढीला हो गया है।
2. अपना-सा मुँह लेकर रह जाना (लज्जित होना)
   अरुण प्रथम आने की डींग हाँक रहा था, फेल होने पर अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

3. आँखें बिछाना (आदर-सम्मान देना)
अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता जीतकर जब वह अपने गाँव लौटा, तब सारा गाँव उसके स्वागत में आँखें बिछाए खड़ा था।

4. आँच न आने देना (जरा-सा भी कष्ट न होने देना)
सच्चे मित्र अपने मित्र पर आँच नहीं आने देते।

5. आड़े हाथों लेना (भला-बुरा कहना)
बेटे की काली करतूतों को जानकर पिता ने उसे आड़े हाथों लिया।

6. आस्तीन का साँप होना (धोखेबाज मित्र)
तुम जैसे आस्तीन के साँप के कारण ही मेरा सारा व्यवसाय चौपट हो गया है।

7. आसमान पर थूकना (निर्दोष पर लांछन लगाना)
उस जैसे सच्चे इंसान पर दोषारोपण करना तो आसमान पर थूकना है।

8. ईंट-से-ईंट बजाना (नष्ट कर देना)
भारतीय सेना शत्रुओं की ईंट-से-ईंट बजाने की सामर्थ्य रखती है।

9. उड़ती चिड़िया पहचानना (अत्यंत अनुभवी होना)
तुम उसे मूर्ख नहीं बना सकते, वह तो उड़ती चिड़िया पहचानता है।

10. एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना (एक जैसा होना)
दूसरों को मूर्ख बनाने के मामले में तो तुम दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो।

11. कठपुतली बनना (दूसरों के इशारे पर काम करना)
मैं यह नौकरी नहीं कर पाऊँगा, क्योंकि पदाधिकारी की कठपुतली बनना मेरे वश की बात नहीं।

12. कलेजा मुँह को आना (बहुत दुखी होना)
सड़क दुर्घटना में अपने प्रिय मित्र की मृत्यु की खबर सुनकर कलेजा मुँह को आ गया।

13. कलेजे पर पत्थर रखना (चुपचाप दुख सहना)
कलेजे पर पत्थर रखकर उसने अपने छोटे-से बेटे को काम के लिए इतनी दूर भेजा है।

14. कंचन बरसना (लाभ-ही-लाभ होना)
उसने इतनी समझदारी से व्यापार किया है कि दो वर्षों में ही उसके घर कंचन बरसने लगा है।

15. खटाई में पड़ना (कोई निर्णय न हो पाना)
यह परियोजना तो अच्छी थी, परंतु अधिकारियों के तबादले के कारण खटाई में पड़ गई है।

16. गड़े मुरदे उखाड़ना (बीती बातों को याद करना)
गड़े मुरदे उखाड़ने से दुख के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलनेवाला।

17. गिरगिट की तरह रंग बदलना (सिद्धांतहीन होना)
जीवन में कुछ सिद्धांत अपनाओ, गिरगिट की तरह रंग मत बदलो।

18. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना (डर जाना)
पुलिस अधिकारियों को अपनी दुकान पर देख उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

19. चैन की वंशी बजाना (सुख से रहना)
हम तो रूखा-सूखा खाते हैं और चैन की वंशी बजाते हैं।

20. छठी का दूध याद आना (भारी संकट में पड़ना)
भारतीय सेना का मुकाबला करने में तो ताकतवर देशों को भी छठी का दूध याद आ जाता है।

21. छाती पर मूँग दलना (जान-बूझकर दुख देना)
तुम अपने लिए अलग घर ले लो, मेरी छाती पर मूँग न दलो।

22. छींका टूटना (अनायास लाभ होना)
ये तो कंगाली का जीवन जी रहे थे। न जाने किसके भाग से छींका टूट गया।

सोचो और बताओ
मुहावरों को उनके अर्थ से मिलाइए।

छाती पर साँप लोटना	खुशियाँ मनाना
आसमान सिर पर उठाना	ईर्ष्या से जलना
घी के दीये जलाना	बहुत शोर करना

23. जख्म पर मलहम लगाना (सांत्वना देना)
तुम्हारे भाई के कारण हमारा इतना नुकसान हुआ, अब तुम जख्म पर मलहम लगाने आए हो।

24. जान के लाले पड़ना (विपत्ति में फँसना)
बादल फटने के कारण पानी के सैलाब से स्थानीय लोगों को जान के लाले पड़ गए हैं।

25. झख मारना (व्यर्थ समय नष्ट करना)
दिनभर झख मारते रहते हो, कोई नौकरी क्यों नहीं कर लेते?

26. ठन-ठन गोपाल होना (बिलकुल कंगाल होना)
अभी मैं तुम्हारी कोई आर्थिक सहायता नहीं कर पाऊँगा। आजकल तो मैं खुद ही ठन-ठन गोपाल हूँ।

27. डंके की चोट पर कहना (सरेआम कहना)
मैं डंके की चोट पर कहता हूँ कि इस बार चुनावों में मेरी पार्टी ही जीतेगी।

28. तिल का ताड़ बनाना (छोटी-सी बात को बड़ा बनाना)
समझदारी से मिल-बैठकर इस मामले को निपटा लो। तिल का ताड़ बनाने से कुछ नहीं होगा।

29. ताल ठोंकना (लड़ने के लिए ललकारना)
पहलवान ताल ठोककर दंगल के लिए आगे आया।

30. धूल चटाना (परास्त करना)
उससे कुश्ती का मुकाबला मत करना। वह तुम्हें मिनटों में धूल चटा देगा।

31. दाल में काला होना (संदेह होना)
तुम बार-बार जो इधर-उधर देख रहे थे, मुझे तभी लगा था कि दाल में कुछ काला है।

32. दाने-दाने को मोहताज होना (भूखे मरना)
व्यापार में लगातार घाटे के कारण हमारा परिवार आज दाने-दाने को मोहताज है।

33. दिन फिरना (भाग्य पलटना)
परेशानियों से घबराओ नहीं, दिन फिरते देर नहीं लगती।

34. प्राण हथेली पर लिए फिरना (जान की परवाह न करना)
मातृभूमि की रक्षा के लिए स्वतंत्रता सेनानी प्राण हथेली पर लिए फिरते थे।

35. फूटी आँख न सुहाना (बिलकुल अच्छा न लगना)
जब से मैंने अपने मित्र की असलियत जानी है, तब से वह मुझे फूटी आँख नहीं सुहाता।

36. माथा ठनकना (अनिष्ट की पहले से आशंका होना)
दोनों को हँसकर बातें करते देखकर ही मेरा माथा ठनक गया था। आज वह बात सच हो गई।

37. मुँह घुमा लेना (उपेक्षा करना)
मुझसे तुम्हें किस बात की नाराजगी है? मुझे देखते ही मुँह घुमा लेते हो।

सोचो और बताओ

मुहावरों को उनके अर्थ से मिलाइए।

पेट में चूहे कूदना	भाग जाना
नौ-दो ग्यारह होना	कठिन कार्य करना
लोहे के चने चबाना	बहुत भूख लगना

38. रात-दिन एक करना (कठिन परिश्रम करना)
अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए रात-दिन एक करना पड़ता है।

39. सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना (कार्य प्रारंभ होते ही विघ्न आना)
अभी व्यापार करना आरंभ ही किया था कि अधिकारियों ने छापा मारकर गोदाम सील कर दिया। इसे कहते हैं, सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना।

40. हाथ को हाथ न सूझना (घना अंधकार होना)
ज़रा मोमबत्ती लेकर आना, यहाँ तो हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा।

लोकोक्तियाँ

जनसामान्य में प्रचलित कहावतें लोकोक्तियाँ कहलाती हैं। लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं।

- लोकोक्तियों में प्रयुक्त शब्दों को बदला नहीं जा सकता।
- लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली बनती है।

कुछ लोकोक्तियाँ, उनके अर्थ तथा वाक्य-प्रयोग निम्नांकित हैं—

1. अंधों में काना राजा (गुणहीन व्यक्तियों के बीच कम गुणवाला गुणवान समझा जाता है।)
गाँव के सभी लोगों में रामदास ही कुछ पढ़ा-लिखा है। इसीलिए, वह ही अंधों में काना राजा है।

2. आधी छोड़ पूरी को धावै, आधी मिले न पूरी पावै (लोभ से हानि होती है।)
ज्यादा पैसों के चक्कर में इस कंपनी को छोड़ा था, अब वहाँ से भी निकाल दिए गए। इसी को तो कहते हैं, आधी छोड़ पूरी को धावै, आधी मिले न पूरी पावै।

3. अपना हाथ जगन्नाथ (परिश्रम से ही लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।)
अपने किसी काम के लिए मैं दूसरों के भरोसे नहीं रहता। मैं जानता हूँ, अपना हाथ जगन्नाथ।

4. आग लगने पर कुआँ खोदना (कार्य की सिद्धि से पहले उपाय न करना।)
परीक्षा पास करने के लिए दिन-रात परिश्रम की आवश्यकता होती है। आग लगने पर कुआँ खोदने से कुछ नहीं होगा।

5. आम के आम गुठलियों के दाम (दोहरा लाभ होना।)
समाचार-पत्र लेकर पढ़े, फिर उतने ही पैसों में रद्दी में बेच दिए। इसे कहते हैं—आम के आम गुठलियों के दाम।

6. एक तो करेला, दूसरा नीम चढ़ा (एक दोष के रहते दूसरा दोष आना।)
एक तो तुम घमंडी हो, उस पर कड़वा बोलती हो। कौन तुमसे बात करेगा। एक तो करेला, दूसरा नीम चढ़ा।

7. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली (दो असमान व्यक्तियों में तुलना करना।)
छोटी-मोटी रचनाएँ करके स्वयं को कालिदास मत समझो। कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।

8. कोयले की दलाली में हाथ काले (बुरे व्यक्ति के साथ रहने पर बुराई ही मिलती है।)
कितनी बार कहा था बुरी संगति का त्याग करो, परंतु तुम नहीं माने। कोयले की दलाली में हाथ काले तो होंगे ही।

9. घर का भेदी लंका ढाए (आपसी फूट से हानि होती है।)
विभीषण अगर श्रीराम को रावण की मृत्यु का राज़ न बताता, तो रावण की मृत्यु न होती। सच ही कहा है—घर का भेदी लंका ढाए।

10. चमड़ी जाए, पर दमड़ी न जाए (बहुत कंजूस होना।)
भयंकर सरदी में ठंड से काँपते रहे, परंतु गरम कपड़े नहीं खरीदे। उनका उसूल है चमड़ी जाए, पर दमड़ी न जाए।

11. चोर की दाढ़ी में तिनका (अपराधी सशंकित रहता है।)

पुलिसवालों के पूछने से पहले ही वह स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने लगा। सही कहा गया है—चोर की दाढ़ी में तिनका होता है।

सोचो और बताओ
लोकोक्तियों को उनके अर्थ से मिलाइए।

काला अक्षर भैंस बराबर	इच्छित बात का होना
अंधा क्या चाहे दो आँखें	निश्चिंत होना
खोदा पहाड़ निकली चुहिया	बिलकुल अनपढ़
चादर तानकर सोना	परिश्रम अधिक, परिणाम कम

12. छोटा मुँह बड़ी बात (योग्यता से बढ़कर बात करना।)
आप जैसे महान कलाकार को कला की बारीकियाँ सिखाना तो छोटे मुँह बड़ी बात होगी।

13. न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी (किसी काम के लिए ऐसा प्रबंध नहीं करना चाहिए जो नहीं हो सके।)

वह कहता है कि जब वह बहुत बड़ा-सा घर खरीदेगा, तभी हमें अपने घर बुलाएगा। न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।

14. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद (अयोग्य व्यक्ति गुणों की सही परख नहीं कर सकता।)
शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम में उसे लेकर जा रहे हो, जिसे संगीत की कोई समझ नहीं। अरे भाई! बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

15. डूबते को तिनके का सहारा (विपत्ति में थोड़ी-सी सहायता बहुत होती है।)
घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी, मित्र ने अचानक कुछ रुपये भेज दिए। वो रुपये तो हमारे लिए डूबते को तिनके का सहारा थे।

16. **दूध का जला छाछ को भी फूँक-फूँककर पीता है** (धोखा खाकर व्यक्ति सावधान हो जाता है।)
उसने मुझे मीठी-मीठी बातों में उलझाकर मेरा सारा कारोबार हड़प लिया। अब तो मैं किसी की भी मीठी बात पर सहज विश्वास नहीं करता। तुमने सुना नहीं, दूध का जला छाछ को भी फूँक-फूँककर पीता है।

17. जैसा देश वैसा वेश (अवसर के अनुकूल व्यवहार करना।)
विदेशों वाले तौर-तरीकों में कुछ बदलाव करो। कहते हैं न कि जैसा देश वैसा वेश।

18. थोथा चना बाजे घना (अयोग्य व्यक्ति ही आत्मप्रशंसा करता है।)
उसे चित्रकला का ज़रा भी ज्ञान नहीं, परंतु सभी को बताती है कि उसने चित्रकला प्रतियोगिता जीती थी। थोथा चना बाजे घना।

19. पर उपदेश कुशल बहुतेरे (दूसरों को उपदेश देना सरल है।)
मुझे सुबह जल्दी जागने की सलाह देते हो और स्वयं देर तक सोते हो। पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

20. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (दोनों ओर से हानि होना।)
नई नौकरी के लालच में पुरानी नौकरी भी छोड़ दी। किसी कारण से उसकी नई नौकरी भी नहीं लगी। अब तो उसकी हालत ऐसी है कि धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

21. भागते भूत की लँगोटी ही सही (जाते हुए माल में से जो कुछ मिले वही बहुत है।)
पुलिस चोरी का जो थोड़ा-बहुत माल बरामद कर पाई, अमरनाथ ने उससे यह सोचकर संतोष कर लिया कि भागते भूत की लँगोटी ही सही।

22. रस्सी जल गई, पर बल नहीं गया (शक्ति नष्ट हो जाने पर भी अकड़ बनी रहना।)
सेठजी की सारी संपत्ति नष्ट हो गई है, परंतु आज भी पहले की तरह रौब से ही बात करते हैं। रस्सी जल गई, पर बल नहीं गया।

23. सौ सुनार की, एक लोहार की (शक्तिशाली का एक बार निर्बल के सौ बार पर भारी होता है।)
मोहल्लेवाले उसे रोज़ समझाते थे, पर सुधीर की दादागिरी बढ़ती ही जा रही थी। पहलवान के एक ही थप्पड़ से उसकी सारी दादागिरी निकल गई। ठीक ही कहा गया है, सौ सुनार की, एक लोहार की।

24. सुबह का भूला शाम को घर आ जाए, तो उसे भूला नहीं कहते (अपनी भूल को जल्दी सुधार लेना अच्छा होता है।)
तुम्हें अपनी गलती पर पश्चाताप हो रहा है, यह अच्छी बात है। यदि सुबह का भूला शाम को घर आ जाए, तो उसे भूला नहीं कहते।

25. **जैसी करनी वैसी भरनी** (कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है।)
तुम मेरे साथ बुराई करके मुझसे भलाई की उम्मीद न रखना। जैसी करनी वैसी भरनी।

हमने जाना

- मुहावरे ऐसे वाक्यांश होते हैं, जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर अपने विशेष अर्थ में प्रयोग किए जाते हैं।
- लोकोक्तियाँ जनसामान्य में प्रचलित कहावतें होती हैं।

आओ कुछ करें

1. **उचित विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. 'ईंट-से-ईंट बजाना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

ईंट पर ईंट मारना   नष्ट कर देना   एक ईंट से दूसरी ईंट को बजाना

ख. 'कंचन बरसना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

सोने की वर्षा होना   लाभ-ही-लाभ होना   सोना देना

ग. 'चैन की वंशी बजाना' मुहावरे का क्या अर्थ होगा?

चैन से बैठकर वंशी बजाना   सुख से रहना   वंशी पर चेन लगाना

घ. 'छींका टूटना' मुहावरे का क्या अर्थ होगा?

सबकुछ नष्ट होना   अनायास लाभ होना   छींका कमज़ोर होना

ङ. 'ताल ठोंकना' मुहावरे का क्या अर्थ होगा?

तालाब ठीक करना   ताली बजाना   लड़ने के लिए ललकारना

2. **लोकोक्तियों को उनके अर्थ से मिलाइए।**

क. आम के आम गुठलियों के दाम	दूसरों को उपदेश देना सरल है।
ख. घर का भेदी लंका ढाए	योग्यता से बढ़कर बात करना
ग. डूबते को तिनके का सहारा	दोहरा लाभ होना
घ. पर उपदेश कुशल बहुतेरे	विपत्ति में थोड़ी सहायता बहुत होती है।
ङ. जैसा देश वैसा वेश	अवसर के अनुकूल व्यवहार करना
च. छोटा मुँह बड़ी बात	आपसी फूट से हानि होती है।

3. **रिक्त स्थानों में उचित मुहावरा भरिए।**

क. इस गुफा में तो हाथ ______________________ नहीं देता।

ख. समय पर काम देने के लिए उसने रात ______________________ दिया।

ग. मैं तो जो भी योजना बनाता हूँ खटाई ______________________ जाती है।

घ. मुझे देखकर तुम्हारे चेहरे ________________ क्यों उड़ने लगीं?

ङ. हमसे मत उलझना। हम तुम्हें छठी ________________ देंगे।

च. तुम जो कहना चाहते हो, उसे डंके ________________ कहो।

4. दिए गए वाक्यांशों के लिए उचित मुहावरा लिखिए।

क. कठिन परिश्रम करना ________________

ख. अत्यंत अनुभवी होना ________________

ग. चुपचाप दुख सहना ________________

घ. सिद्धांतहीन होना ________________

ङ. भारी संकट में पड़ना ________________

च. बिलकुल कंगाल होना ________________

5. दी गई लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. भागते भूत की लँगोटी ही सही ________________

ख. थोथा चना बाजे घना ________________

ग. रस्सी जल गई, पर बल नहीं गया ________________

घ. अपना हाथ जगन्नाथ ________________

ङ. आग लगने पर कुआँ खोदना ________________

6. **निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. मुहावरे तथा लोकोक्तियों में क्या अंतर है?

ख. भाषा में मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग क्यों किया जाता है?

कार्यकलाप

संकेत समझकर दी गई पहेली को पूरा कीजिए। इसी प्रकार की पहेली का निर्माण स्वयं कीजिए।

अनार—बीमार	एक अनार सौ बीमार	बंदर—अदरक	
जख्म—मलहम		चोर—दाढ़ी	

जाना-समझा

वाक्यों में मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है, उनके अर्थ का नहीं।

32 अलंकार

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» स्त्री ने कौन-कौन से गहने पहने हैं? ____________________

» गहने क्यों पहनते हैं? ____________________

जिस प्रकार से गहने स्त्री के सौंदर्य में वृद्धि करते हैं, उसी प्रकार शब्द काव्य के सौंदर्य में वृद्धि करते हैं।

वे शब्द, जो कविता (काव्य) का सौंदर्य बढ़ाएँ, अलंकार कहलाते हैं।

जिस प्रकार सौंदर्य बढ़ानेवाले गहने अलग-अलग प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार काव्य का सौंदर्य बढ़ानेवाले अलंकार भी भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं।

काव्य में जब शब्द के प्रयोग से सौंदर्य उत्पन्न हो, उसे शब्दालंकार कहते हैं और जब शब्द का अर्थ सौंदर्य उत्पन्न करे, तब उसे अर्थालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार

अनुप्रास अलंकार

↓

एक वर्ण की आवृत्ति (एक वर्ण बार-बार आना)

↓

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।

↓

म वर्ण की आवृत्ति

जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

- सेवक सचिव सुमंत बुलाए।
- रघुपति राघव राजा राम।

यमक अलंकार

↓

एक शब्द कई बार आए, परंतु भिन्न अर्थ में।

↓

काली घटा का घमंड घटा।

काले बादल — घटना (कम होना)

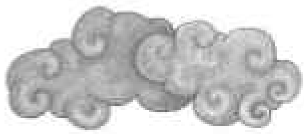

जहाँ एक शब्द, एक से अधिक बार आए, परंतु हर बार उसका अर्थ भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

- कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। या खाए बौराय जग, या पाए बौराए॥

  धतूरा स्वर्ण

- तीन बेर खाती थी, वह तीन बेर खाती थी।

  बार एक फल

अर्थात वह दिन में तीन बार तीन बेर के फल खाती थी।

श्लेष अलंकार

एक शब्द पर अर्थ भिन्न

मंगन को देख पट देत बार-बार है।

वस्त्र दरवाज़ा

जहाँ एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकले, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

- सुबरन को ढूँढ़त फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर।

  अच्छा वर्ण (कवि के लिए)

  अच्छा रूप (व्यभिचारी के लिए)

  स्वर्ण (चोर के लिए)

- रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

  पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

  पानी → कांति (मोती के लिए), सम्मान (मनुष्य के लिए) तथा जल (चूने के लिए)।

सोचो और बताओ

कौन-सा अलंकार है?

क. मुदित महिपति मंदिर आए। ________

ख. जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं। ________

ग. सीधी चलते राह जो, रहते सदा निशंक। ________

जो करते विप्लव, उन्हें हरि का है आतंक।।

अर्थालंकार

उपमा अलंकार

दो वस्तुओं में तुलना

निर्मल तेरा नीर अमृत-सम उत्तम है।

नीर की अमृत से तुलना सा, सी, सरिस, सम, समान शब्दों का प्रयोग

जहाँ दो वस्तुओं के बीच अत्यधिक समानता के कारण तुलना होती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

- पीपर पात सरिस मन डोला
  (मन के डोलने की तुलना पीपल के पत्ते से)

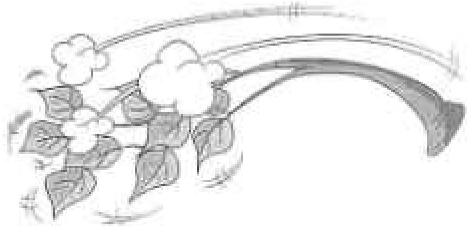

- मुख बाल रवि सम लाल होकर
  (बालक के मुख की तुलना सूर्य से)

रूपक अलंकार

समानता के कारण एक मानना

चरण-कमल बंदौ हरि राई

चरणों को कमल मानना दोनों के मध्य योजक चिह्न

जहाँ अत्यधिक समानता के कारण दो वस्तुओं में तुलना न करके उन्हें एक मान लिया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

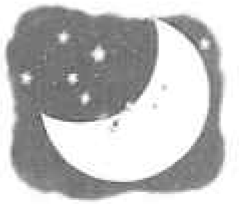

- पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो।
- मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों।

सोचो और बताओ अलंकार रूपक है या उपमा?	क. मखमल की झूल पड़े हाथी-सा टीला	__________
	ख. अंबर-पनघट से डुबो रही घट तारा ऊषा-नागरी।	__________

उत्प्रेक्षा अलंकार

एक वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना

अति कटु वचन कहत कैकेयी। मानहु लोन जरे पर देई।।

(कैकेयी के कठोर वचन ऐसे पीड़ादायक थे, जिस प्रकार की पीड़ा जले पर नमक छिड़कने से होती है।)

मानो, जानो, ज्यों, जनहुँ, जनु, मानहुँ इत्यादि शब्दों का प्रयोग।

जहाँ दो वस्तुओं में भिन्नता होते हुए भी उनमें समानता की संभावना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

- उसका मारे क्रोध के तन काँपने लगा।
  मानो हवा के ज़ोर से सोता हुआ सागर जगा।।
- कहती हुई उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
  हिमकणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए॥

अतिशयोक्ति अलंकार

बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करना

बाण नहीं पहुँचे शरीर तक,
शत्रु गिरे पहले ही भू पर।

(बाण लगने से पहले शत्रुओं का गिरना—बढ़ा-चढ़ाकर किया गया वर्णन।)

जहाँ एक वस्तु या व्यक्ति का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि उसपर विश्वास करना कठिन हो, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

- एक दिन राम पतंग उड़ाई। देवलोक में पहुँची जाई।।
- धनुष उठाया ज्यों ही उसने,
  और चढ़ाया उसपर बाण।
  धरा-सिंधु नभ काँपे सहसा,
  विकल हुए जीवों के प्राण।।

हमने जाना

- काव्य का सौंदर्य बढ़ानेवाले शब्द अलंकार कहलाते हैं।
- अलंकार दो प्रकार के होते हैं—शब्दालंकार तथा अर्थालंकार।
- अनुप्रास, यमक तथा श्लेष शब्दालंकार हैं।
- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा अतिशयोक्ति अर्थालंकार हैं।

आओ कुछ करें

1. दी गई पंक्तियों में आए अलंकार को पहचानकर नाम लिखिए।

क. कालिंदी कूल कदंब की डाल।

नाम ____________________ पहचान ____________________

ख. तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

नाम ____________________ पहचान ____________________

ग. कबीरा सोई पीर है, जो जानै पर पीर।

नाम ____________________ पहचान ____________________

घ. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की ढेरी थी।

नाम ____________________ पहचान ____________________

ङ. वन शारदी चंद्रिका-चादर ओढ़े।

नाम ____________________ पहचान ____________________

2. **निम्नांकित पंक्तियों और संकेत को पढ़कर अलंकार का नाम लिखिए।**

क. हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।

संकेत—बढ़ा-चढ़ाकर किया गया वर्णन ____________________

ख. तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा।
संकेत—'सा' का प्रयोग ____________________

ग. सुनत जोग लागत है ऐसे, ज्यों करुई ककड़ी

संकेत—'ज्यों' का प्रयोग ____________________

घ. माला फेरत युग भया, फिरा न मनका फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥

संकेत—'मनका' दो बार अलग अर्थ में प्रयोग ____________________

ङ. मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे श्याम हरित दुति होय॥

संकेत—एक शब्द के अनेक अर्थ—प्रसन्न, हरा ____________________

कार्यकलाप

विद्यार्थी पत्र-पत्रिकाओं से कुछ कविताओं का चयन कर दिए गए स्थान पर चिपकाएँ तथा उनमें आए अलंकार पहचानें।

जाना-समझा

जिसकी उपमा दी जाए, उसे उपमेय कहते हैं तथा जिससे उपमा दी जाए, उसे उपमान कहते हैं।

33 डायरी-लेखन

डायरी हमारा ऐसा व्यक्तिगत दस्तावेज होता है, जिसमें हम अपने विचारों, अनुभवों, यादगार पलों आदि को क्रमबद्ध रूप से लिखते हैं। इसमें हम अपने मन की बात उसी प्रकार बेझिझक लिख सकते हैं, जैसे हम अपने अत्यंत प्रिय मित्र को पत्र लिखते हैं। लेखन-कौशल के विकास के लिए डायरी निरंतर लिखनी चाहिए।

डायरी-लेखन (प्रारूप)

तारीख ____________ समय ______

संबोधन ______________________

वर्णन ________________________

____

____

हस्ताक्षर

____

डायरी-लेखन (नमूना)

31 जनवरी, 20... 11:45 रात्रि

प्रिय डायरी

मुझे लगता है यदि हम वादा करते हैं, तो हमें उसे निभाना भी चाहिए। इसलिए, मैंने पिताजी से किए वायदे के अनुरूप सभी पाठ याद कर लिए हैं। मुझे मालूम है, पिताजी यह जानकर बहुत खुश होंगे। पिताजी की प्रतिक्रिया तुम्हें कल बताऊँगा।

अमन

विशेष प्रतिदिन डायरी-लेखन में संबोधन और हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं होती।

डायरी-लेखन के उदाहरण

1. 25 मार्च, 20... 11:00 रात्रि

   तुम्हें तो मालूम ही है कि आज मेरा जन्मदिन था। मैं सुबह-सुबह ही तैयार हो गई थी। सबने मुझे आशीर्वाद देकर मेरे उज्ज्वल भविष्य की कामना की। सबने मिलकर ही घर में विशेष खाना बनाया और खाया। पुरानी यादों और किस्सों का दौर भी चला। दादाजी के अनुभव तो लाजवाब थे। मज़ा तो बहुत आया, पर थक गई हूँ।

2. 10 नवंबर, 20... 10:45 रात्रि

   आज हम विद्यालय की ओर से दिल्ली भ्रमण के लिए गए थे। लाल किला, इंडिया गेट, पुराना किला, जंतर मंतर आदि अनेक स्थानों का हमने भ्रमण किया। इन स्मारकों को देखकर बहुत अच्छा लगा। हमने रास्ते में गीत-संगीत और खान-पान का भी आनंद लिया। बहुत सारी बातें कीं। एक-दूसरे के बारे में बहुत कुछ नया जाना। कल विद्यालय बंद है, इसलिए मैंने देर तक सोने की सोची है। शेष बातें कल बताऊँगा।

आओ कुछ करें

1. आप किसी स्थान की यात्रा पर गए थे। अपने अनुभवों को अपनी डायरी में लिखिए।

21 अक्टूबर, 20.. 10:30 रात्रि

2. अपनी कक्षा की एक दिन की गतिविधियों को डायरी में लिखिए।

18 सितंबर, 20.. 10:40 रात्रि

कार्यकलाप

दिए गए विषयों पर डायरी-लेखन का अभ्यास कीजिए।

क. आपकी वार्षिक परीक्षाएँ आनेवाली हैं। अपनी मनःस्थिति का वर्णन करते हुए डायरी लिखिए।

ख. आपने पहली बार हवाई यात्रा की, उसका वर्णन करते हुए डायरी लिखिए।

ग. आज आपके प्रिय मित्र ने कक्षा में शिक्षक से आपकी शिकायत लगाई। इसपर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए डायरी लिखिए।

घ. आँखों-देखी दुर्घटना का वर्णन करते हुए डायरी लिखिए।

ङ. अपने किसी व्यक्तिगत अनुभव का वर्णन करते हुए डायरी लिखिए।

जाना-समझा

डायरी आत्मकथा का ही एक रूप है।

34 अपठित गद्यांश

अ+पठ+इत, अर्थात बिना पढ़ा हुआ। अपठित गद्यांश, गद्यांश का ऐसा अंश होता है, जो पहले पढ़ा हुआ नहीं होता। अपठित गद्यांशों का उद्देश्य विद्यार्थियों की समझ का मूल्यांकन करना तथा उनके अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना होता है। विद्यार्थियों को अपठित गद्यांश पढ़कर उसपर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व गद्यांश को दो बार ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका सार समझना चाहिए तथा प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में से ही देने चाहिए।

अपठित गद्यांश के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं–

गद्यांश 1

समय जब हाथ से निकल जाता है, तब पश्चाताप के सिवाय कुछ नहीं रह जाता। इसलिए, आवश्यक है कि समय रहते अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर लिया जाए। समय अनमोल है, उसे बचाकर रखने के लिए मनुष्य को क्षुद्र कार्य करने से बचना चाहिए। क्षुद्र कार्य हमारे समय को व्यर्थ करते हैं। यदि एक समय-सारणी बनाकर चलेंगे, तो हम समय का उचित उपयोग कर पाएँगे अन्यथा समय को व्यर्थ के कार्यों में व्यतीत कर देंगे। समय खोने के बाद यथार्थ का बोध दुख का भागीदार बनाता है। जीवन का एक-एक क्षण मूल्यवान है। अच्छे समय का इंतज़ार करने से अच्छा है कि वर्तमान का अच्छा उपयोग किया जाए।

प्र.1 उपर्युक्त गद्यांश में किसके महत्व का वर्णन किया गया है?
उ. प्रस्तुत गद्यांश में समय के महत्व का वर्णन किया गया है।

प्र.2 हमें क्षुद्र कार्य क्यों नहीं करने चाहिए?
उ. क्षुद्र कार्य हमारे अमूल्य समय को व्यर्थ करते हैं, इसलिए हमें क्षुद्र कार्य नहीं करने चाहिए।

प्र.3 समय का उचित उपयोग करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
उ. समय का उचित उपयोग करने के लिए हमें समय-सारणी बनाकर सभी कार्य करने चाहिए।

प्र.4 समय खोने के बाद यथार्थ का बोध होने पर क्या होता है?
उ. समय खोने के बाद यथार्थ का बोध होने पर दुख होता है।

प्र.5 अच्छे समय का इंतज़ार करने के स्थान पर हमें क्या करना चाहिए?
उ. अच्छे समय का इंतज़ार करने के स्थान पर हमें वर्तमान का अच्छा उपयोग करना चाहिए।

गद्यांश 2

आचरण का विकास करना जीवन का परम उद्देश्य है। आचरण के विकास के लिए नाना प्रकार की सामग्रियों पर विचार करना होगा। जीवन के विभिन्न अनुभव हमारे आचरण की विभिन्नता को दर्शाते हैं। चाहे कोई कितना ही बड़ा महात्मा क्यों न हो, वह निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकता कि यह करो और

यह न करो। आचरण की सभ्यता की प्राप्ति के लिए सबको एक पथ नहीं बता सकता। आचरणशील महात्मा स्वयं भी किसी अन्य की बनाई हुई सड़क से नहीं आया, आचरण का निर्धारण स्वयं से ही होता है। इसीसे उसके बनाए हुए रास्ते पर चलकर हम सभी अपने आचरण को आदर्श के ढाँचे में नहीं ढाल सकते। हमें अपना रास्ता अपने जीवन की कुदाली की एक-एक चोट से रात-दिन बनाना पड़ेगा और उसी पर चलना भी पड़ेगा।

प्र.1 जीवन का परम उद्देश्य क्या है?

आचरण का विकास ✓ आचरण का पालन आचरण का शुद्धिकरण

प्र.2 आचरण का निर्धारण किस प्रकार होता है?

स्वयं के द्वारा ✓ दूसरों के द्वारा महान व्यक्तियों के द्वारा

प्र.3 जीवन के अनुभव भिन्न होने के क्या परिणाम होते हैं?

आचरण में समानता आचरण में भिन्नता ✓ भिन्न जीवनशैली

प्र.4 आचरण की सभ्यता की प्राप्ति के लिए हमें क्या करना चाहिए?

समान पथ का अनुसरण अलग पथ का अनुसरण अपने पथ का निर्माण ✓

प्र.5 क्या हम दूसरों का अनुसरण करके अपने आचरण को आदर्श के ढाँचे में ढाल सकते हैं?

हाँ नहीं ✓ कभी-कभी

गद्यांश 3

मनुष्य का हृदय बड़ा ममत्व-प्रेमी है। कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुंदर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसको पराई समझता है, तब तक उससे प्रेम नहीं करता। पराई वस्तु कितनी भी मूल्यवान क्यों न हो, कितनी ही उपयोगी क्यों न हो, कितनी ही सुंदर क्यों न हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य कुछ भी दुख का अनुभव नहीं करता, इसलिए कि वह वस्तु उसकी नहीं, पराई है। अपनी वस्तु कितनी ही भद्दी हो, काम में न आनेवाली हो, नष्ट होने पर मनुष्य को दुख होता है, इसलिए कि वह अपनी चीज़ है।

प्र.1 मनुष्य का हृदय कैसा है?

ममत्व भरा प्रेम भरा ममत्व-प्रेमी ✓

प्र.2 मनुष्य किस सुंदर और उपयोगी वस्तु से प्रेम नहीं करता?

जो पराई हो ✓ जो अपनी हो जो भद्दी हो

प्र.3 मनुष्य को किस वस्तु के नष्ट होने पर दुख का अनुभव नहीं होता?

मूल्यवान वस्तु के उपयोगी वस्तु के पराई वस्तु के ✓

प्र.4 मूल शब्द तथा उपसर्ग/प्रत्यय अलग करें।

उपयोगी—उप + योगी मूल्यवान—मूल्य + वान

प्र.5 गद्यांश में से छाँटकर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

जो वस्तु किसी दूसरे की हो—पराई जो देखने में सुंदर न हो—भद्दी

हमने जाना

- अपठित गद्यांश पहले पढ़े हुए नहीं होते।
- ये विद्यार्थियों की समझ तथा अभिव्यक्ति कौशल का विकास करते हैं।

आओ कुछ करें

दिए गए अपठित गद्यांशों को पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. चरित्र में कहीं पर किसी तरह का दाग न लगने पाए, इस बात की चौकसी का नाम चरित्रपालन है। हमारे लिए चरित्रपालन की आवश्यकता इसलिए मालूम होती है, क्योंकि चरित्र को यदि हम सुधारने की फिक्र न रखें, तो उसे बिगड़ते देर नहीं लगती। जैसे उर्वरा धरती पर लंबी-लंबी घास तथा कँटीले पेड़ अपने-आप उग आते हैं, परंतु खाद्यान्न और अन्य उपकारी पौधे बड़े यत्न तथा परिश्रम के बाद उगते हैं। प्रकृति ने चरित्र में विकार पैदा करनेवाले बहुत-से प्रलोभन संसार में उपजा दिए हैं, जिनसे आकर्षित होकर मनुष्य को इस प्रकार बिगाड़ा जा सकता है कि वह किसी काम का न रहे।

   प्र.1 चरित्रपालन से क्या अभिप्राय है?

   प्र.2 चरित्र में सुधार क्यों आवश्यक है?

   प्र.3 कवि ने चारित्रिक विकारों की तुलना किससे की है?

   प्र.4 चारित्रिक पतन के क्या कारण हो सकते हैं?

   प्र.5 चरित्रपालन किस प्रकार संभव है?

2. निस्स्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करना परोपकार है। यह एक महान भाव तथा एक सर्वश्रेष्ठ धर्म है। महर्षि दधीचि ने परोपकार हेतु अपनी हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए देवताओं को दान कर दी थी, ताकि असुर का नाश संभव हो सके। परोपकारी मनुष्य का यश सदैव रहता है। लोग उन्हें सदा याद रखते हैं। उनका मन शांत तथा पवित्र होता है। उनके मन में प्रेम, सहयोग, दया तथा करुणा के भाव विद्यमान रहते हैं। उनकी दृष्टि स्वार्थ से परमार्थ की ओर उठी हुई होती है। राजा शिवि एवं दानवीर कर्ण की गिनती भी महान परोपकारी व्यक्तियों में होती है।

   प्र.1 निस्स्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करना क्या कहलाता है?

   प्र.2 प्रस्तुत गद्यांश में किन परोपकारी व्यक्तियों की बात की गई है?

   प्र.3 परोपकारी व्यक्ति में कौन-कौन-से गुण होते हैं?

   प्र.4 निम्नांकित शब्दों के विलोम रूप गद्यांश में से छाँटकर लिखिए।
   बुराई, असंभव

   प्र.5 'परोपकार एक सर्वश्रेष्ठ धर्म है', इस वाक्य में सर्वश्रेष्ठ क्या है?
   विशेषण संज्ञा क्रियाविशेषण

35 अपठित पद्यांश

अपठित पद्यांश काव्य का वह अंश होता है, जो विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकों से इतर लिया जाता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों की भाव-ग्रहण क्षमता का विकास होता है तथा उनकी काव्य की समझ विकसित होती है। विद्यार्थियों को पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर ही उसमें से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए।

कुछ अपठित पद्यांश निम्नांकित हैं–

पद्यांश 1

हिमाद्रि तुंग-शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो।
प्रशस्त पुण्य पंथ है—बढ़े चलो, बढ़े चलो।।

प्र.1 स्वतंत्रता किसे बुला रही है?
उ. स्वतंत्रता अपने वीर पुत्रों को बुला रही है।

प्र.2 स्वतंत्रता कहाँ से अपने वीर पुत्रों को पुकार रही है?
उ. स्वतंत्रता हिमालय की ऊँची चोटियों से अपने वीर पुत्रों को पुकार रही है।

प्र.3 स्वतंत्रता किस पंथ पर आगे बढ़ने का आह्वान कर रही है?
उ. स्वतंत्रता श्रेष्ठ पुण्य पंथ पर आगे बढ़ने का आह्वान कर रही है।

प्र.4 स्वतंत्रता के लिए किन विशेषणों का प्रयोग हुआ है?
उ. स्वतंत्रता के लिए 'स्वयंप्रभा' तथा 'समुज्ज्वला' विशेषणों का प्रयोग हुआ है।

प्र.5 'जो कभी नहीं मरता' उसके लिए पद्यांश में किस शब्द का प्रयोग हुआ है?
उ. 'जो कभी नहीं मरता' के लिए पद्यांश में 'अमर्त्य' शब्द का प्रयोग हुआ है।

पद्यांश 2

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार।
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार।।
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार।
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार।।
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी, भी अराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।।

प्र.1 प्रस्तुत पद्यांश में 'मर्दानी' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
उ. प्रस्तुत पद्यांश में 'मर्दानी' शब्द झाँसी की रानी के लिए प्रयुक्त हुआ है।

प्र.2 रानी लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल कौन-कौन से थे?
उ. रानी लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल नकली युद्ध करना, व्यूह रचना करना, शिकार करना, सेना को घेरना तथा दुर्ग तोड़ना थे।

प्र.3 रानी लक्ष्मीबाई किसकी उपासक थी?
उ. रानी लक्ष्मीबाई माँ भवानी की उपासक थी।

प्र.4 रानी लक्ष्मीबाई की किस बात से मराठे पुलकित हो उठते थे?
उ. रानी लक्ष्मीबाई की तलवारबाजी को देख मराठे पुलकित हो उठते थे।

प्र.5 झाँसी की रानी की बहादुरी की कथा कौन सुनाते हैं?
उ. बुंदेले हरबोले रानी की बहादुरी की कथा सुनाते हैं।

पद्यांश 3

मैं घमंडों से भरा ऐंठा हुआ, एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ, एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।
मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा, लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे, ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी।

प्र. 1 कवि मुंडेर पर खड़ा क्या कर रहा था?
प्रकृति को निहार रहा था। | घमंड कर रहा था। ✓ | सोच रहा था।

प्र. 2 कवि के घमंड को किसने चूर कर दिया था?
मित्र ने | लोगों ने | तिनके ने ✓

प्र.3 कवि की बेचैनी का क्या कारण था?
आँख में पड़ा तिनका ✓ | घमंड का नष्ट होना | लोगों की बातचीत

प्र. 4 तिनके को किस प्रकार निकालने का प्रयास किया गया?
कपड़े की मूँठ से ✓ | पानी से | दवाई से

प्र. 5 आँख के दुखने का क्या कारण था?
आँख का रोग | आँख में कुछ पड़ जाना ✓ | नींद का पूरा न होना

हमने जाना

- अपठित पद्यांश पाठ्यपुस्तकों से इतर लिए जाते हैं।
- ये विद्यार्थियों की भावग्रहण क्षमता का विकास करते हैं।

आओ कुछ करें

निम्नांकित अपठित पद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1.

आँख का आँसू ढलकता देखकर,
जी तड़प करके हमारा रह गया।
क्या गया मोती किसी का है बिखर,
या हुआ पैदा रत्न कोई नया?
ओस की बूँदें कमल-से हैं कहीं,
या उगलती बूँद है दो मछलियाँ।
या अनूठी गोलियाँ चाँदी मढ़ी,
खेलती हैं खंजनों की लड़कियाँ।।

प्र.1 कवि के जी तड़पने का क्या कारण है?

प्र.2 प्रस्तुत पद्यांश में वर्णित 'दो मछलियाँ' से क्या अभिप्राय है?

प्र.3 कवि को खंजनों की लड़कियाँ किससे खेलती हुई प्रतीत होती हैं?

प्र.4 प्रस्तुत पद्यांश में 'ओस की बूँदें' तथा 'कमल' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

प्र.5 प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने किन मोतियों के बिखरने की बात की है?

2.

मैं न चाहता हार बनूँ मैं
या कि प्रेम उपहार बनूँ मैं
या कि शीश-शृंगार बनूँ मैं
मैं हूँ फूल मुझे जीवन की
सरिता में ही तुम बहने दो
मुझे अकेला ही रहने दो।

प्र.1 पद्यांश में किसकी इच्छा अभिव्यक्त हुई है?

फूल की — कवि की — सरिता की

प्र.2 फूल क्या नहीं बनना चाहता?

हार — प्रेम उपहार — इनमें दोनों

प्र.3 फूल क्या इच्छा कर रहा है?

गंगा में बहने की — शृंगार बनने की — अकेला रहने की

प्र.4 फूल जीवन सरिता में क्या करना चाहता है?

रहना — बहना — सहना

प्र.5 निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची रूप लिखिए—

सरिता, फूल

पृथ्वी पर उपलब्ध पेयजल का अधिकतर भाग प्रदूषित हो चुका है, जिससे जलसंकट उत्पन्न हो गया है। जलसंकट के समाधान के लिए आवश्यक है कि जल को प्रदूषित होने से बचाया जाए। उद्योग-धंधों से निकलनेवाले कचरे को नदियों के जल में मिलने से रोका जाए। घरों से निकलनेवाली नालियों के गंदे पानी को संयंत्रों द्वारा स्वच्छ करके ही नदियों में छोड़ा जाए। गाँवों में तालाब आदि बनाकर उनमें वर्षाजल का संचयन किया जाए तथा उस जल को कृषि कार्यों में प्रयोग किया जाए। जल का संचयन कर विद्युत उत्पादन किया जाना चाहिए। जल का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करके, जल का संरक्षण करके तथा जल को प्रदूषित होने से बचाकर ही जलसंकट से उबरा जा सकता है तथा जल-जैसी प्राकृतिक धरोहर को आनेवाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।

आओ कुछ करें

1. दिए गए विषयों पर अनुच्छेद-लेखन की रूपरेखा लिखिए।

   क. समय बहुत बलवान है
   ख. इंटरनेट का बढ़ता उपयोग
   ग. खेलों में बढ़ती रुचि
   घ. शिक्षक दिवस
   ङ. महानगरीय जीवन
   च. स्वावलंबन

2. दिए गए विषयों पर अनुच्छेद लिखिए।

   क. मेरा जीवन-स्वप्न
   ख. मेरा प्रिय त्योहार
   ग. यदि मैं शिक्षक होता
   घ. संचार के नवीनतम साधन
   ङ. भ्रष्टाचार—कारण और निवारण
   च. परहित सरिस धर्म नहीं भाई

कार्यकलाप

दिए गए अनुच्छेद को पूरा कीजिए।

मॉल पारंपरिक बाज़ारों का आधुनिक रूप है। मॉल एक विस्तृत इमारत होता है, जिसमें बहुत-सी दुकानें होती हैं। एक ही स्थान पर सभी प्रकार की खरीददारी की जा सकती है; जैसे—कपड़े, सब्ज़ियाँ, फल इत्यादि। मॉल में वाहनों के लिए अपनी पार्किंग सुविधा होती है। खाने-पीने और मनोरंजन की भी व्यवस्था होती है। ______________________________

____

____

____

जाना-समझा

अनुच्छेद निर्धारित शब्द-सीमा में ही लिखे जाने चाहिए।

37 पत्र-लेखन

पत्र-लेखन एक कला है, जो पढ़नेवाले पर अमिट प्रभाव डालती है। इसके द्वारा अपने भावों की प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्ति होती है। पत्रों को धरोहर के रूप में संजोकर रखा जा सकता है। कई प्रसिद्ध लोगों द्वारा लिखे गए पत्र आज भी हमारे प्रेरणा के स्रोत हैं। पत्र लिखते समय हमें कम शब्दों में अपनी बात सारगर्भित तरीके से कहनी चाहिए। भाषा सरल तथा स्पष्ट होनी चाहिए। व्याकरणिक अशुद्धियों से बचना चाहिए।

पत्रों के प्रकार

पत्र दो प्रकार के होते हैं—औपचारिक पत्र तथा अनौपचारिक पत्र।

औपचारिक पत्र औपचारिक पत्र उन लोगों को लिखे जाते हैं, जिनसे हमारा कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं होता। प्रधानाचार्य को लिखे गए प्रार्थना-पत्र, कंपनियों, दुकानदारों, प्रकाशकों एवं व्यापारियों को लिखे गए व्यावसायिक पत्र तथा कार्यालयों, संस्थानों को लिखे गए पत्र औपचारिक पत्र होते हैं। औपचारिक पत्रों में अभिवादन नहीं होता।

अनौपचारिक पत्र अनौपचारिक पत्र हम उन लोगों को लिखते हैं, जिन्हें हम व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। पारिवारिक सदस्यों, मित्रों तथा संबंधियों इत्यादि को लिखे गए पत्र अनौपचारिक पत्र होते हैं।

औपचारिक पत्र का प्रारूप

पत्र भेजनेवाले का पता
(व्यावसायिक और कार्यालयी पत्रों में)
दिनांक
प्राप्तकर्ता का नाम और पता
विषय
संबोधन
पहला अनुच्छेद (अपनी समस्या के विषय में)
दूसरा अनुच्छेद (अधिकारी से क्या चाहते हैं)
समापन शब्द
हस्ताक्षर से पहले की शब्दावली
हस्ताक्षर
पत्र भेजनेवाले का नाम

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

पत्र भेजनेवाले का पता
दिनांक
संबोधन
अभिवादन
विषयवस्तु
पहला अनुच्छेद (परिवारजनों की कुशलता)
दूसरा अनुच्छेद (विषयवस्तु)
तीसरा अनुच्छेद (परिवार के सभी सदस्यों को अभिवादन)
पत्र का समापन
पत्र पानेवाले से संबंध
पत्र भेजनेवाले का नाम

पत्र आरंभ और समाप्त करने की औपचारिक तालिका

पत्र के प्रकार	संबंध	आरंभ	समापन
व्यक्तिगत पत्र	अपने से बड़ों को, माता-पिता, भाई, बहन, संबंधी—चाचा, मामा, मौसी, बुआ इत्यादि।	आदरणीय, पूजनीय, श्रद्धेय, पूज्य, परम आदरणीय	आपका प्रिय, आपका कृपापात्र, स्नेहपात्र, स्नेहाकांक्षी
	अपने से छोटों को	परम प्रिय, प्रियवर, प्रिय	तुम्हारा शुभचिंतक, शुभाकांक्षी, शुभेच्छु
	मित्र अथवा सहपाठी को	मित्रवर, प्रियवर, प्रियबंधु, बंधुवर	चिर स्नेही, तुम्हारा मित्र, तुम्हारा शुभाकांक्षी
व्यावसायिक पत्र	पुस्तक विक्रेता, बैंक मैनेजर, अन्य व्यापारीगण	महोदय, श्रीमानजी प्रबंधक महोदय, मान्यवर	भवदीय, निवेदक
प्रार्थना-पत्र	प्रधानाचार्य	श्रीमानजी, महोदय, माननीय महोदय, मान्यवर	विनीत, प्रार्थी, आपका आज्ञाकारी, आपका कृपाकांक्षी
कार्यालयी पत्र	संपादक, थानाध्यक्ष, पोस्टमास्टर, नगर निगम अधिकारी इत्यादि।	आदरणीय महोदय, महोदय, मान्यवर	भवदीय, प्रार्थी, निवेदक, विनीत

औपचारिक पत्रों के उदाहरण

1. आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

दिनांक 19 अगस्त, 20...

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
मानस पब्लिक स्कूल, मयूर विहार
दिल्ली—110091

विषय आर्थिक सहायता हेतु पत्र

माननीय महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा आठ का एक प्रतिभाशाली छात्र हूँ। मेरे पिताजी दिल्ली के एक कार्यालय में काम करते थे। किन्हीं कारणों से उनका कार्यालय बंद कर दिया गया है। अन्य किसी स्थल पर उन्हें कार्य न मिल पाने के कारण हमारी आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय

हो गई है। वे मेरे विद्यालय की फीस तथा अन्य खर्च उठाने में पूर्णतः असमर्थ हैं। यदि विद्यालय की ओर से मुझे आर्थिक सहायता प्राप्त हो जाए, तो मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँगा।

अतः, आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप मुझे आर्थिक सहायता प्रदान करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

धन्यवाद सहित
आपका आज्ञाकारी शिष्य
चेतन आनंद
कक्षा 8 'ब', अनुक्रमांक—12

2. ज़ुर्माना माफ़ करने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

दिनांक 22 अगस्त, 20...

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
आर्य पब्लिक विद्यालय, साकेत
दिल्ली—110017

विषय ज़ुर्माना माफ़ करने के लिए पत्र

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की कक्षा आठ 'अ' की छात्रा हूँ। कल फुटबॉल खेलते समय मेरे हाथों से छूटकर फुटबॉल विद्यालय की खिड़की से टकरा गया तथा खिड़की का शीशा टूट गया। यह सब संयोगवश हुआ था, परंतु कक्षाध्यापक ने मुझपर 500 रुपये का ज़ुर्माना लगा दिया। महोदय, मेरे पिताजी की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे इतनी बड़ी रकम ज़ुर्माने के रूप में भर सकें। मैं इस दुर्घटना के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानते हुए आपसे क्षमा माँगती हूँ तथा ज़ुर्माना माफ़ करने की प्रार्थना करती हूँ।

आपको आश्वासन दिलाती हूँ कि भविष्य में खेलते समय मैं इस बात का विशेष ध्यान रखूँगी कि इस प्रकार की कोई दुर्घटना न हो।

सधन्यवाद
आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या
कामना कौशिक
कक्षा 8 'अ', अनुक्रमांक—6

3. कक्षा के खराब पंखों को ठीक करवाने के लिए प्रधानाचार्या को एक पत्र लिखिए।

दिनांक 08 अप्रैल, 20...

सेवा में
प्रधानाचार्या महोदया
सृजन पब्लिक विद्यालय,

सेक्टर 15
नोएडा—201301

विषय पंखे ठीक करवाने के लिए पत्र

महोदया

सविनय निवेदन है कि हमारी कक्षा में लगे चारों पंखे खराब हैं। ये बहुत धीरे-धीरे चलते हैं, इनसे हवा भी नहीं आती। चलते समय घरघराहट की आवाज़ भी बहुत होती है, जिससे पढ़ाई में व्यवधान पड़ता है। गरमी के कारण एकाग्रचित्त होकर पढ़ नहीं पाते।

आपसे प्रार्थना है कि बढ़ती हुई गरमी को देखते हुए आप इन्हें यथाशीघ्र बदलवाने की कृपा करें, अन्यथा इन्हें ठीक करवा दें।

धन्यवाद
प्रार्थी
कक्षा 8 'स' के सभी विद्यार्थी

4. थानाध्यक्ष को साइकिल चोरी की सूचना देते हुए एक पत्र लिखिए।

182, समयपुर बादली
दिल्ली
दिनांक 12 नवंबर, 20...

सेवा में
थानाध्यक्ष महोदय
थाना समयपुर बादली
दिल्ली—110042

विषय चोरी की शिकायत हेतु पत्र

मान्यवर महोदय

सविनय निवेदन यह है कि कल मैं साइकिल से पोस्ट ऑफिस गया था। मैं बाहर साइकिल खड़ी करके अंदर टिकट लेने चला गया। पाँच मिनट बाद बाहर आकर देखा तो मेरी साइकिल गायब थी। मैंने आसपास ढूँढ़ा तथा आस-पड़ोस से भी पूछा, परंतु कोई सुराग नहीं मिला।

मेरी लाल रंग की साइकिल 'हीरो' कंपनी की थी। उसपर पीछे मैंने अपनी नेम-प्लेट भी लगाई हुई थी। आपसे निवेदन है कि आप मेरी साइकिल खोजने में मेरी सहायता करें।

धन्यवाद

निवेदक
हितेश कुमार

विशेष प्रधानाध्यापक को पत्र लिखते समय अपना पता लिखने की आवश्यकता नहीं होती।

अनौपचारिक पत्रों के उदाहरण

1. बुआजी की कुशलता जानने हेतु पत्र

114, आदर्श नगर
दिल्ली—110033
दिनांक 17 अक्टूबर 20...

आदरणीय बुआजी

सादर प्रणाम

यहाँ हम सब कुशलपूर्वक हैं। आशा करता हूँ कि आप भी कुशलपूर्वक होंगी। बुआजी लगभग एक महीना हो गया है, आपका कोई पत्र नहीं आया। आप स्वस्थ तो हैं न? आप कभी भी पत्र लिखने में इतनी देर नहीं करती थीं, इसलिए सबको बहुत चिंता हो रही है।

आप शीघ्र ही पत्र लिखकर हमारी चिंता दूर करें। दादाजी तथा दादीजी की ओर से आपको प्यार। पत्र का उत्तर शीघ्र दीजिएगा।

आपका प्रिय भतीजा
संतोष कुमार

2. अपने मित्र को सांत्वना-पत्र लिखिए, जो बीमारी के कारण अर्धवार्षिक परीक्षा नहीं दे पाया।

82, क्रांतिकुंज, दिल्ली
दिनांक 26 सितंबर, 20...

प्रिय युवान

स्नेह

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर चिंतित हो उठा हूँ कि तुम अस्वस्थ हो। इस बात से और भी चिंतित हूँ कि तुम इस अस्वस्थता के कारण अर्धवार्षिक परीक्षा नहीं दे पाए हो। मैं जानता हूँ इस समय तुम अत्यंत उदास तथा निराश होगे। तुम्हारी परीक्षा की तैयारी बहुत अच्छी हुई थी, इसलिए ऐसी निराशा स्वाभाविक है। परंतु, हिम्मत रखो, क्योंकि यह केवल अर्धवार्षिक परीक्षा थी। अभी तुम्हारे पास परीक्षा देने का एक अन्य अवसर भी है।

प्रिय मित्र, सभी प्रकार की चिंताएँ छोड़कर पहले तुम स्वस्थ हो जाओ, फिर अधिक परिश्रम करके वार्षिक परीक्षा की तैयारी करना। सफलता निश्चित रूप से तुम्हारे कदम चूमेगी। यदि संभव हुआ, तो तुमसे मिलने मैं ज़रूर आऊँगा। अपना ध्यान रखना। घर में सभी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र
सुयश

3. पशु-पक्षियों के प्रति प्रेमपूर्वक व्यवहार की सीख देते हुए अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखिए।

5 बी/26 ए, रामापार्क
उत्तम नगर, नई दिल्ली

दिनांक 18 जनवरी, 20...

प्रिय भाई

सस्नेह शुभाशीष

मैं यहाँ पर कुशलपूर्वक हूँ। आशा है, तुम भी प्रसन्नचित्त होगे। कल मेरी मुलाकात तुम्हारे एक मित्र उदित से हुई। उसने तुम्हारी शरारतों का एक नया पिटारा मेरे सामने खोला। उसने बताया कि तुम आजकल पशु-पक्षियों को पकड़कर उन्हें तंग करते हो।

मेरे प्रिय भाई पशु-पक्षी बेजुबान होते हैं। वे बोलकर तुम्हें अपना दर्द नहीं समझा सकते। उनकी तकलीफ़ को तो तुम्हें ही समझना होगा। उन्हें तंग करने से शायद तुम्हें क्षणिक आनंद मिलता हो, परंतु उन्हें कितना कष्ट होता है, यह सोचा है तुमने। कभी उनकी जगह स्वयं को रखकर सोचो। अगर कोई तुम्हारे साथ इस प्रकार का व्यवहार करेगा, तो तुम्हें कैसा लगेगा।

आशा है, तुम मेरी बात समझोगे तथा पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील बनोगे। तुम्हें प्यार।

तुम्हारा अग्रज
वैभव किशोर

हमने जाना

- पत्र-लेखन एक कला है।
- पत्रों को धरोहर के रूप में संजोकर रखा जा सकता है।

आओ कुछ करें

1. **पानी के नल की टोंटियाँ टूटने के कारण पानी के लगातार बहने की शिकायत कक्षा आठ के विद्यार्थियों की ओर से राजकीय माध्यमिक विद्यालय, नन्हें पार्क, दिल्ली के प्रधानाचार्य को करते हुए एक पत्र लिखिए।**

दिनांक ____________

सेवा में

____

____

____

सविनय निवेदन यह है कि पीने के पानी वाले नल की दो टोंटियाँ टूट गई हैं। पीने का पानी लगातार बहता रहता है, जिस कारण टंकी का पानी जल्दी समाप्त हो जाता है तथा विद्यार्थियों को पीने का पानी नहीं मिल पाता।

आपसे प्रार्थना है कि कृपया संबंधित कर्मचारियों को इस संबंध में उचित निर्देश दें।

____

____

____

2. **पढ़ने के लिए कुछ नई पुस्तकें मँगवाने हेतु अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखिए।**

152, नांगली छात्रावास

दिल्ली

दिनांक 23 नवंबर, 20...

आदरणीय भ्राताजी

____

____

____

____

____

____

आपका अनुज

____

कार्यकलाप

निम्नांकित विषयों पर पत्र-लेखन का अभ्यास कीजिए।

क. पुस्तकालय के लिए पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तक विक्रेता को पत्र लिखिए।

ख. स्वास्थ्य अधिकारी, दिल्ली नगर निगम के नाम अपने क्षेत्र में फैली गंदगी को दूर करने के लिए पत्र लिखिए।

ग. फीस माफ़ी के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

घ. चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

ङ. विद्यालय में हिंदी दिवस मनाने की प्रार्थना करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

च. अपने क्षेत्र की अव्यवस्था का वर्णन करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखिए।

छ. अपने क्षेत्र में बढ़ती हुई चोरी की घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अपने क्षेत्र के थाना प्रभारी को पत्र लिखिए।

ज. अपने मित्र के पिता की मृत्यु पर सांत्वना-पत्र लिखिए।

झ. अपने चाचा के विवाह पर मित्र को सपरिवार आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

ञ. कुसंगति से बचने की सलाह देते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

जाना-समझा

परीक्षा भवन में पत्र के नीचे अपना नाम लिखने के स्थान पर क० ख० ग० लिखते हैं।

38 निबंध-लेखन

निबंध किसी विषय पर सारगर्भित रचना होती है, जिसमें विषय का सरल, स्पष्ट तथा रुचिकर वर्णन होता है। निबंध के प्रमुख तीन भाग होते हैं—भूमिका, विषयवस्तु तथा उपसंहार। निबंध को आकर्षक बनाने के लिए निबंध का आरंभ किसी कथन, सूक्ति, दोहे आदि से करना चाहिए। भाषा सरल तथा शैली रोचक होनी चाहिए। भूमिका में मौलिकता होनी चाहिए। विषयवस्तु में विषय से संबंधित सभी पक्षों का वर्णन होना चाहिए। वाक्य परस्पर जुड़े होने चाहिए। निष्कर्ष संतुलित रूप में लिखना चाहिए। संपूर्ण विषय का सार उसमें आना चाहिए। व्याकरण तथा वर्तनी की दृष्टि से निबंध शुद्ध होना चाहिए। निबंध का आरंभ करने से पहले उसकी संक्षिप्त रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

हिंदी निबंध के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं—

1. स्त्री सशक्तिकरण

रूपरेखा—प्राचीनकाल में स्त्री की स्थिति...परिवर्तन...स्त्री सशक्तिकरण की आवश्यकता...तरीके... स्त्री सशक्तिकरण के उदाहरण...समाज में आए परिवर्तन।

भूमिका—हमारे प्राचीन ग्रंथों में स्त्रियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। कहा गया है—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"

अर्थात, जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीनकाल में भारतीय नारी एक गौरवपूर्ण पद की अधिकारी थी।

विषयवस्तु—प्राचीनकाल की भारतीय नारी की गरिमामयी स्थिति धीरे-धीरे पुरुष-प्रधान समाज की रूढ़िवादी विचारधारा के तले दबती चली गई। समाज में प्रचलित बालविवाह, सतीप्रथा, दहेजप्रथा इत्यादि न जाने कितनी रूढ़ियाँ उसे दीन-हीन करती रहीं, उसपर हिंसा तथा अत्याचार का कारण बनीं। उसके शिक्षा तथा कार्य करने के अधिकार तो पूर्णतः प्रतिबंधित ही हो गए। पुरुषों की इस मानसिकता ने नारियों को दुर्बल ही नहीं बनाया, बल्कि उनकी सोच को भी अवरुद्ध कर दिया। स्त्रियाँ स्वयं को सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टि से पुरुषों से कम समझने लगीं।

पुरुषों तथा स्त्रियों के मध्य बढ़ती असमानता को दूर करने तथा स्त्रियों को पुरुषों के समकक्ष लाने के लिए स्त्री सशक्तिकरण की आवश्यकता अनुभव की गई। स्त्री सशक्तिकरण से अभिप्राय महिलाओं को इस प्रकार शक्तिशाली बनाना है, ताकि वे स्वतंत्र रूप से अपने जीवन से जुड़े निर्णय ले सकें। दूसरे शब्दों में, स्त्रियाँ पुरुषों के कंधे-से-कंधा मिलाकर चल सकें।

स्त्रियों के सशक्तिकरण के लिए ज़रूरी है कि उन्हें आगे बढ़ने के अवसर दिए जाएँ। उन्हें शिक्षा-प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित किया जाए। सरकारी तथा निजी संस्थानों में उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाए जाएँ। महिलाओं पर होनेवाले अत्याचारों को रोका जाए तथा महिलाओं की सुरक्षा की उचित व्यवस्था की जाए।

आज विश्व की कई महिलाओं ने सर्वोच्च पदों पर पहुँचकर नवीन कीर्तिमान स्थापित किए हैं। महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक ही नहीं हुई हैं, बल्कि उनकी प्राप्ति के लिए लड़ने भी लगी हैं। खेल जगत में मैरी कॉम, पी०वी० सिंधु, साइना नेहवाल, सानिया मिर्ज़ा तथा संगीत जगत में लता मंगेशकर इत्यादि ने महिला सशक्तिकरण के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

महिलाओं के सशक्त होते व्यक्तित्व ने पुरुषों की मानसिकता को भी परिवर्तित किया है तथा पुरुष भी उन्हें समान भागीदार स्वीकारने लगे हैं। स्त्रियों के अंदर एक नई चेतना जागी है तथा अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने प्रयास आरंभ कर दिए हैं। शिक्षा-प्राप्ति के प्रति उनका रुझान बढ़ा है तथा वे राष्ट्र के विकास में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगी हैं।

उपसंहार—स्त्री सशक्तिकरण स्त्रियों में नवीन ऊर्जा का संचार करनेवाली एक गूँज है, जिसने स्त्रियों को स्वयं के जीवन के निर्णय लेने में सक्षम बनाया है। पुरुषों पर उनकी निर्भरता को कम किया है तथा परिवार, समाज तथा राष्ट्र के विकास में उनकी भागीदारी को बढ़ाया है। स्त्रियों का सशक्तिकरण एक संपूर्ण समाज का सशक्तिकरण है।

2. डिजिटल इंडिया

रूपरेखा—डिजिटल इंडिया क्या है...कब आरंभ हुआ...प्रमुख भाग...उद्देश्य...लाभ।

भूमिका—भारत कंप्यूटर तकनीक में भी विश्व में एक महाशक्ति के रूप में उभरकर सामने आ रहा है, परंतु डिजिटल रूप से सरकारी सेवाओं की उपलब्धता आम जन तक नहीं पहुँची है। जन-जन को डिजिटल सेवा से जोड़ने के लिए सरकार ने एक अभियान चलाया है, जिसका नाम है 'डिजिटल इंडिया'।

विषयवस्तु—इस अभियान का विमोचन 1 जुलाई, 2015 को किया गया था। यह एक योजनाबद्ध अभियान है, जिसका उद्देश्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज बनाना तथा ऐसी अर्थव्यवस्था में बदलना है, जिसमें वृद्धि उत्पादन के साधनों के स्थान पर उपलब्ध जानकारी की मात्रा, गुणवत्ता तथा पहुँच पर निर्भर हो। यह सब नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाकर ही संभव है।

डिजिटल इंडिया अभियान के तीन मुख्य भाग हैं—1. डिजिटल आधारभूत ढाँचे का निर्माण करना 2. इलेक्ट्रॉनिक रूप से सेवाओं को जनता तक पहुँचाना तथा 3. डिजिटल साक्षरता।

डिजिटल आधारभूत ढाँचे के निर्माण द्वारा जनता को सरकार से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ना है। इसमें सभी जिलों, गाँवों तथा शहरों को डिजिटल सेवा के द्वारा जोड़ना है। डिजिटल आधारभूत ढाँचे के निर्माण के बाद सभी सरकारी तथा जनकल्याण योजनाओं; जैसे—स्वास्थ्य, रेलवे, कृषि, शिक्षा को सभी तक पहुँचाना है। प्रत्येक नागरिक को डिजिटल रूप से साक्षर बनाना है, ताकि डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर तेजी से बढ़ा जा सके, जिससे सभी लोग सरकारी योजनाओं का आसानी से लाभ उठा सकें; क्रेडिट कार्ड तथा डेबिट कार्ड द्वारा भुगतान कर सकें एवं अधिकांश कार्य डिजिटल रूप से कर सकें।

इस अभियान को आरंभ करने का उद्देश्य कागज का प्रयोग कम करके इलेक्ट्रॉनिक सेवाएँ प्रदान करना है, ताकि कार्य में पारदर्शिता हो तथा कार्य सुचारू रूप से कम समय में हो। सभी सरकारी योजनाएँ शीघ्रता से देश के प्रत्येक नागरिक तक पहुँच सकें।

डिजिटल इंडिया अभियान द्वारा ही लोग घर बैठे कार्य और व्यापार करने में सक्षम हुए हैं। पैसे का भुगतान तथा प्राप्तियाँ सरल हो गई हैं। सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे लोगों के बैंक खाते में पहुँच रहा है। शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं की प्राप्ति सरल हो रही है। डिजिटल इंडिया अभियान ने लोगों की जानकारी में वृद्धि की है, उन्हें नई योजनाओं के प्रति सजग बनाया है तथा रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं। लोग दूर-दूर रहते हुए भी तकनीकी माध्यमों से एक-दूसरे के बहुत पास आ गए हैं।

उपसंहार—यह एक क्रांतिकारी अभियान है, जो मानव शक्ति तथा समय की बचत करता है। यदि सभी लोग नई प्रौद्योगिकी को अपना लेते हैं और उसमें साक्षर होते हैं, तो भारत के विकास की दर तीव्र गति से आगे बढ़ेगी।

3. ऑनलाइन शिक्षा

रूपरेखा—ऑनलाइन शिक्षा क्या है...लाभ...कमियाँ...आज के संदर्भ में आवश्यकता।

भूमिका—शिक्षा किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अब तक विद्यालय शिक्षा के महत्वपूर्ण स्थान रहे हैं। परंतु, प्रौद्योगिकी के विकास तथा बदलती परिस्थितियों से भारत तथा संपूर्ण विश्व में ऑनलाइन शिक्षा बहुत लोकप्रिय हो गई है।

विषयवस्तु—ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा का एक नवीनतम माध्यम है, जो पारंपरिक विद्यालयी कक्षा-कक्ष शिक्षा पद्धति से भिन्न है। इस शिक्षा माध्यम से विद्यार्थी अपने घर अथवा किसी भी सुविधाजनक स्थान पर इंटरनेट की सहायता से बिना विद्यालय गए शिक्षा प्राप्त कर सकता है। इसमें इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों; जैसे—मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर इत्यादि द्वारा पढ़ाई की जाती है। शिक्षक अपने कंप्यूटर पर जूम, स्काइप अथवा गूगल क्लासरूम ऐप के द्वारा विद्यार्थियों से संपर्क कर सकते हैं तथा अध्यापन कार्य कर सकते हैं इसके लिए विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के पास एक कंप्यूटर अथवा लैपटॉप एवं एक अच्छा नेटवर्क होना ज़रूरी है।

ऑनलाइन शिक्षा के अनेक लाभ हैं। यह सुविधाजनक है। इससे समय की बचत होती है, क्योंकि विद्यार्थियों को कहीं आना-जाना नहीं पड़ता है। विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार कहीं भी बैठकर पढ़ाई कर सकते हैं। इससे विद्यार्थी शिक्षक के सीधे संपर्क में रहते हैं, जिससे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारिता को बढ़ावा मिलता है। विद्यार्थी निःसंकोच प्रश्न पूछ सकते हैं तथा अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन पढ़ाई गई कक्षा की रिकॉर्डिंग भी की जा सकती है, जिसे बाद में सुना जा सकता है। विद्यार्थियों के पास अभ्यास के लिए भी पर्याप्त समय रहता है।

ऑनलाइन शिक्षा की कुछ कमियाँ भी हैं। हमारे देश में दूर-दराज के क्षेत्रों में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है। आर्थिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के पास कंप्यूटर खरीदने की धनराशि भी उपलब्ध नहीं होती, जिससे वे इस सुविधा से वंचित रह जाते हैं।

उपसंहार—ऑनलाइन शिक्षा का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसके द्वारा शिक्षा के स्तर में सुधार के साथ-साथ समय तथा धन की भी बचत की जा सकती है। सीखने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। लॉकडाउन जैसी कठिन परिस्थितियों में तो यह वरदान साबित हुई है। अब आवश्यकता है डिजिटल ढाँचे को विकसित करने की।

4. कोरोना का जीवनशैली पर प्रभाव

रूपरेखा—कोरोना महामारी क्या है...कैसे फैलती है...जीवनशैली में आए परिवर्तन...प्रभाव।

भूमिका—कोरोना एक वैश्विक महामारी है, जिसे COVID 19 के नाम से भी जाना जाता है। CO, अर्थात कोरोना (corona), 'VI', अर्थात वायरस (virus) तथा D का अर्थ है बीमारी (disease)। 19 इसके आरंभ होने के वर्ष को दर्शाता है, अर्थात कोरोना महामारी का आरंभ 2019 में हुआ था।

विषयवस्तु—कोरोना महामारी कोरोना नामक वायरस द्वारा फैलती है। यह वायरस बहुत सूक्ष्म होता है, परंतु इसका संक्रमण बहुत तीव्रता से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है, जिसके फलस्वरूप बुखार, जुकाम, गले में खराश, साँस लेने में परेशानी आदि समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

कोरोना महामारी ने जीवनशैली को बिल्कुल परिवर्तित कर दिया है। दुनिया अपने घरों तक सीमित हो गई है, जीवन में उत्साह का स्थान भय ने ले लिया है। लोग हाथ मिलाने जैसी आधुनिक शैली के स्थान पर दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन करने की पारंपरिक शैली को अपनाने लगे हैं। अपने परिवार के साथ भावनात्मक जुड़ाव अनुभव करने लगे हैं। मास्क लगाने का एक नया रिवाज़ उत्पन्न हो गया है। योग और व्यायाम दिनचर्या के भाग बनते जा रहे हैं।

लोग साफ़-सफ़ाई को प्रमुखता दे रहे हैं। हाथों को बार-बार साबुन से धोना, सेनिटाइजर का प्रयोग जीवन की एक अनिवार्यता बनती जा रही है। धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक समारोह भी तड़क-भड़क वाले समारोहों के स्थान पर सादे समारोहों में परिवर्तित हो गए हैं। फिर से सादगी लोगों को आकर्षक लगने लगी है।

घरों में कुछ स्थान कार्यालय के रूप में परिवर्तित हो गया है। इंटरनेट का प्रयोग पहले से कहीं अधिक होने लगा है। कार्यालय के कार्यों को संपादित करने तथा लेन-देन करने के लिए इंटरनेट का प्रयोग होने लगा है। डिजिटल रूप से साक्षरता को बढ़ावा मिला है। शिक्षा भी ऑनलाइन हो गई है। लोग जीवन के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए हैं।

रोजगार के अवसरों में कमी, आय में कटौती से लोगों ने धन का प्रयोग अधिक बुद्धिमत्तापूर्वक करना शुरू कर दिया है। रोजगार समाप्त होने से आक्रोश तथा तनाव को भी बढ़ावा मिला है। असुरक्षा की भावना बढ़ी है।

उपसंहार—कह सकते हैं कि कोरोना ने हमारे जीवन की दशा को काफ़ी सीमा तक परिवर्तित कर दिया है। हमारी जीवन-शैली पर कोरोना का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। कोरोना ने हमारे जीवन में मास्क, सेनिटाइजर, सामाजिक दूरी आदि नए शब्दों को भी स्थान दिया है। बदलती परिस्थितियों के साथ स्वयं को ढालने में ही समझदारी है।

5. सौर ऊर्जा

रूपरेखा—परंपरागत स्रोत...नवीन विकल्प...अर्थ...लाभ...उपयोग...सीमाएँ।

भूमिका—मानव सभ्यता के विकास ने मानव इच्छाओं को गति दी है, जिस कारण मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है। ऊर्जा के परंपरागत स्रोत; जैसे—लकड़ी, कोयला, खनिज तेल

इत्यादि, बनने में लाखों-करोड़ों वर्ष लगते हैं, अपनी समाप्ति के कगार पर पहुँच गए हैं। इनके लिए कई विकल्प तलाशे गए हैं, जिनमें सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा इत्यादि प्रमुख विकल्प हैं।

विषयवस्तु—सौर ऊर्जा सर्वाधिक सस्ता विकल्प है। सौर ऊर्जा से अभिप्राय है सूर्य से प्राप्त ऊर्जा। सूर्य ऊर्जा का अक्षय स्रोत है, इससे प्राप्त होनेवाली ऊर्जा कभी समाप्त नहीं होगी। सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा के रूप में परिवर्तित करके उसका उपयोग वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत के रूप में किया जा सकता है।

सौर ऊर्जा सर्वसुलभ तथा अक्षय है। यह स्रोत समतल मैदानों, पर्वतों, घाटियों, मरुस्थलों में भी आसानी से उपलब्ध है। इसके साथ-साथ यह सस्ता भी है। अन्य स्रोत जहाँ प्रदूषण फैलानेवाले होते हैं, वहीं यह पर्यावरण हितैषी है। इससे पर्यावरण को किसी प्रकार की हानि नहीं होती। इससे न तो किसी प्रकार की विषैली गैस निकलती है और न ही ध्वनि प्रदूषण होता है।

सौर ऊर्जा के अनेक प्रयोग हैं। इससे घरों, कार्यालयों, सार्वजनिक स्थानों आदि के लिए प्रकाश की व्यवस्था की जा सकती है। घरों में बिजली के रूप में इसका प्रयोग किया जा सकता है। भोजन पकाने, पानी गरम करने के लिए भी सौर ऊर्जा प्रयोग की जा सकती है, साथ-ही-साथ बिजली का उत्पादन तथा संग्रह भी किया जा सकता है।

सौर ऊर्जा मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी है। इसके अनेक लाभ हैं, परंतु इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। इसका लाभ केवल उतने समय के लिए ही उठाया जा सकता है, जितनी देर सूरज चमकता है। इसे प्राप्त करने के लिए सोलर पैनल जरूरी होते हैं, जिन्हें लगाने में काफ़ी खर्च आता है। इन उपकरणों के रख-रखाव में भी बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है।

उपसंहार—यद्यपि इसकी अनेक सीमाएँ हैं, तथापि ऊर्जा के परंपरागत साधनों के विलुप्त होने के कगार पर पहुँचने की स्थिति में यह एक अच्छा विकल्प है। इस संबंध में गंभीरता से विचार करने तथा उचित कदम उठाने की आवश्यकता है।

6. नोटबंदी

रूपरेखा—नोटबंदी क्या है...ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य...लाभ...हानि।

भूमिका—किसी देश की अर्थव्यवस्था उस देश की रीढ़ होती है। जब अर्थव्यवस्था में कालाधन या नकली नोट अधिक मात्रा में आ जाते हैं, तब वह चरमराने लगती है। अर्थव्यवस्था में स्थिरता लाने के लिए विमुद्रीकरण प्रमुख विकल्प होता है।

विषयवस्तु—विमुद्रीकरण, जिसे 'नोटबंदी' भी कहा जाता है, एक प्रकार की आर्थिक गतिविधि है। इसमें सरकार किसी वर्तमान कागज़ी मुद्रा को अवैध घोषित कर उसे बंद कर देती है तथा उसके स्थान पर नई मुद्रा चलाती है। बंद की गई मुद्रा का प्रयोग अवैध होता है। इनसे किसी भी प्रकार का लेन-देन, खरीद-फरोख्त नहीं की जा सकती है। विमुद्रीकरण में अधिकतर बड़े नोटों को ही बदला जाता है। हम कह सकते हैं कि नोटबंदी की प्रक्रिया में कुछ पुराने नोट अथवा सिक्के बंद करके नए नोट अथवा सिक्के चलाए जाते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो विमुद्रीकरण कोई नई गतिविधि नहीं है। भारत में 1946 में अंग्रेज़ी सरकार ने नोटबंदी की थी। 1978 में भी 1000, 5000 तथा 10,000 के नोट बंद कर दिए गए थे। 2016 में 500

तथा 1000 के नोट बंद करके 500 तथा 2000 रुपये के नए नोट चलाए गए थे।

नोटबंदी मुख्यतः भ्रष्टाचार को रोकने, नकली नोटों के चलन पर अंकुश लगाने, आतंकवाद पर नियंत्रण करने तथा कालाधन पर रोक लगाने के लिए की जाती है। कर चोरी रोकने के लिए नकद लेन-देन अधिक होने पर भी नोटबंदी की जाती है।

नोटबंदी के द्वारा आतंकवादी गतिविधियों पर रोक लगी है। उन्हें मिलनेवाली फंडिंग पर रोक लगी है। बाज़ार में चलनेवाले नकली या जाली नोटों पर रोक लगी है। नकद लेन-देन के स्थान पर डिजिटल लेन-देन को प्रोत्साहित करने के कारण कर चोरी पर रोक भी लगी है।

उपसंहार—यद्यपि नोटबंदी की प्रक्रिया से आमजन को असुविधा हुई थी; रोजगार के अवसरों में कमी आई थी; कृषि तथा व्यापारिक गतिविधियाँ भी प्रभावित हुई थीं तथापि इससे अर्थव्यवस्था को सुधारने एवं राष्ट्र को डिजिटल इंडिया बनाने में सहायता मिली है।

हमने जाना

- निबंध किसी विषय पर सारगर्भित रचना होती है।
- निबंध व्याकरण तथा वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध होना चाहिए।

आओ कुछ करें

निम्नांकित रूपरेखा के आधार पर निबंध लिखिए।

क. **रक्तदान महादान** आवश्यकता...रक्तदान क्या है...किन परिस्थितियों में...कारण...प्रभाव।

ख. **गणतंत्र दिवस** कब मनाया जाता है... इतिहास...महत्त्व...राष्ट्रीय पर्व...कैसे मनाया जाता है।

ग. **परोपकार** अर्थ...उदाहरण...क्यों...कैसे... समाज पर प्रभाव।

घ. **एक स्वप्न जो सच हो गया** स्वप्न क्या था...क्या किया...सच कैसे हुआ...प्रतिक्रिया।

ङ. **जीवन का लक्ष्य** क्या है...क्यों...किए गए प्रयास...उद्देश्य।

च. **मेरा प्रिय लेखक** नाम...संक्षिप्त जानकारी...जीवन-परिचय...क्यों...आपका प्रिय...रचनाएँ।

कार्यकलाप

विद्यार्थी निम्नांकित विषयों पर जानकारी एकत्र करें तथा निबंध-लेखन का अभ्यास करें।

1. ग्लोबल वार्मिंग	2. मेरी प्रिय पुस्तक	3. आतंकवाद
4. मेरा प्रिय कवि/लेखक	5. रुपये की आत्मकथा	6. शिक्षा—अनिवार्य आवश्यकता

जाना-समझा

निबंध-लेखन का ही संक्षिप्त रूप अनुच्छेद-लेखन है।

आओ दोहराएँ 4 (पाठ 30 से 38 तक)

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. 'ईंट-से-ईंट बजाना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

   ईंट पर ईंट मारना — एक ईंट से दूसरी ईंट को बजाना — नष्ट कर देना

   ख. 'कंचन बरसना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

   सोने की वर्षा होना — लाभ-ही-लाभ होना — सोना देना

2. **दिए गए वाक्यांशों के लिए उचित मुहावरा लिखिए।**

   क. कठिन परिश्रम करना ____________________

   ख. अत्यंत अनुभवी होना ____________________

3. **दी गई लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

   क. भागते भूत की लँगोटी ही सही ____________________

   ख. थोथा चना बाजे घना ____________________

4. **दी गई पंक्तियों में आए अलंकार को पहचानकर नाम लिखिए।**

   क. काली घटा का घमंड घटा। ____________________

   ख. तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए। ____________________

5. **दिए गए वाक्यों में सही स्थान पर विरामचिह्न लगाइए।**

   क. गुरुजी तुम सभी शहर में जाकर दाल रोटी का प्रबंध करो ____________________

   ख. मेरे भाई बहन ने इसी कॉलेज से बीए किया है ____________________

6. **आपकी वार्षिक परीक्षाएँ आनेवाली हैं। अपनी मन:स्थिति का वर्णन करते हुए डायरी लिखिए।**

7. **दिए गए किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए।**

   क. यदि मैं शिक्षक होता

   ख. पॉलिथीन

8. **आप राजकीय माध्यमिक विद्यालय, शेख सराय के विद्यार्थी हैं। अपने प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए पत्र लिखिए।**

9. **अपने प्रिय कवि अथवा अपने प्रिय लेखक की विशेषताओं का वर्णन करते हुए एक निबंध लिखिए।**

10. **निम्नांकित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

    असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी।
    सपूत मातृभूमि के, रुको न शूर साहसी।।
    अराति सैन्य सिंधु में, सुबाड़वाग्नि से जलो।
    प्रवीर हो, जयी बनो—बढ़े चलो, बढ़े चलो।।

    क. सागर में लगी आग को क्या कहते हैं?

    ख. 'यशरूपी किरणों' के लिए पद्यांश में किन शब्दों का प्रयोग हुआ है?

    ग. मातृभूमि के सपूत कैसे हैं?

    घ. स्वतंत्रता मातृभूमि के वीरों को क्या बनने को कह रही है?

    ङ. 'महान योद्धा' के लिए पद्यांश में कौन-सा शब्द आया है?